यह होठों का सबसे पहला सौन्दर्य है। इसका मूल भी अन्दर की ओर ही अधिक है। इस तत्व से ओठों में निम्न गुणों का समावेश होना निश्चित किया गया है—

(१) आन्तरिक भावों को सुतीव्रता, सरलता व सादगी से व्यक्त करना।

(२) छोटे से छोटे स्पन्दन को भी स्पष्टता से घोषित करना।

(३) चेतना।

यह तीन बातें जब किन्हीं अधरों में पाई जाती हैं, तो उनमें संवेदनशीलता का प्रधान सौन्दर्य केन्द्रीभूत हो गया—ऐसा मानना उपयुक्त है।

इसी प्रकार शेष गुण भी मुख्यतया आन्तरिक सौन्दर्य से ही सम्बन्धित है। दया, स्नेह, माधुर्य, सहृदयता और भोलापन यह पांच प्रधान गुण होठों के सम्पूर्ण सौन्दर्य के प्रतिपादक हैं।

इस गुण को केवल ... करके ही रह गये हैं। वा... होठों के लावण्य को भी ... दिया है। ओठों की नैस... कोमलता और पतला पन ... होते जा रहे हैं।

सुन्दरता बनी

ओठों की सुन्दरता व... की ही सुन्दरता है। जैसे, ... सुन्दरता,' विचार और 'मेधा... विशदता पर मूलतः आध... इसी प्रकार, ओठों की ... की मधुरता पर ही ... आप यदि अपने ओठों की सुन्दरता की खोज में हैं तो ... से और बल्कि अभी से सौन्द... को अपने वातायन के उस ... देवें और अपने मन, मस्ति... शरीर में निम्न पांच गुणों क...

(शेष पृष्ठ ... पर)

सीय के स्वयंबर समाज जहाँ राजनि को ॥ १४ ॥
राजनि के राजा महाराजा जाने नाम को
पवन पुरदर, कृसानु, भानु वनद से,
गुन के निधान रूपधाम सोमकाम को ?
बान बलवान जातुधानप सरीखे सूर,
जिन्हके गुमान सदा सालिम संग्राम को ।
तहाँ दसरत्थ के समर्थ नाथ तुलसी के,
चपरि चढ़ायो चाप चन्द्रमा ललाम को ॥ ९ ॥

मयनमहन पुरदहन गहन जानि,
आनि कै सबै को सारु धनुष गढ़ायो है ।
जनक सदसि जेते भले, भले भूमिपाल
किए बलहीन, बल अपनो बढ़ायो है ॥
कुलिस कठोर कूर्मपीठ ते कठिन अति
हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है ।
तुलसी सो राम के सरोज-पानि परसत ही,
टूटयौ मानो बारे ते पुरारि ही पढ़ायो है ॥१०॥

छप्पय

डिगति उर्वि अति गुर्वि, सर्व पव्वै समुद्र सर ।
ब्याल बधिर तेहि काल, बिकल दिगपाल चराचर ॥
दिग्गयंद लरखरत, परत दसकण्ठ मुक्खभर ।
सुरबिमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर ॥
चौंके बिरचि संकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यौ ।
ब्रह्मांड खंड कियो चंड धुनि जबहि राम सिबधनु दल्यौ ॥११

घनाक्षरी

लोचनाभिराम घनस्याम रामरूप सिसु,
सखी! कहै सखी सों तू प्रेमपय पालि री।
बालक नृपालजू के ख्याल ही पिनाक तोरयो
मण्डलीक-मण्डली-प्रताप दाप दालि री॥
जनक को,सिया को हमारो,तेरो, तुलसी को,
सबको भावतो ह्वै है मैं जो कह्यो कालि री।
कौसिला की कोखि पर तोषि तन वारिये री,
राय दसरत्थ की बलैया लीजै आलि री॥ १२

दूब दधि रोचना कनकथार भरि भरि,
आरती सँवारि वर नारि चलीं गावती।
लीन्हे जयमाल करकज सोहै जानकी के,
"पहिराओ राघोजू को" सखियॉं सिखावतीं॥
तुलसी मुदितमन जनक नगरजन,
झाँकती झरोखे लागी सोभा रानी पावतीं।
मनहुँ चकोरी चारु बैठी निज निज नीड
चद की किरन पीवें, पलकैं न लावतीं॥ १३

नगर निशान वर बाजैं, ब्योम दुंदुभी,
विमान चढि गान कै कै सुरनारि नाचहीं।
जय जय तिहूँ पुर, जयमाल रामउर,
बरषैं सुमन सुर, रूरे रूप राचहीं॥
जनक को पन जयो, सब को भावतो भयो,
तुलसी मुदित रोम रोम मोद माचहीं।

कवित्त

भूपमंडली प्रचंड चंडीस-कोदंड खंड्यौ
चंड बाहुदंड जाको ताही सो कहतु हौ।
कठिन-कुठार-धार धारिबे की धीरताहि,
बीरता बिदित ताकी देखिए चहतु हौ॥
तुलसी समाज राज तजि सो बिराजै आजु,
गाज्यौ मृगराज गजराज ज्यों गहतु हौ।
छोनी मे न छाँड्यौ छप्यौ छोनिप को छोना छोटो,
छोनिप-छपन बाँको बिरुद बहुत हौ॥१८॥

निपट निदरि बोले बचन कुठारपानि
मानि त्रास औनिपन मानो मौनता गही।
रोपे माखे लखन अँकनि अनखौंहीं बातै,
तुलसी बिनीत बानी बिहँसि ऐसी कही॥
"सुजस तिहारो भरो भुवननि, भृगुनाथ!
प्रगट प्रताप आपु कहो सो सबै सही।
टूट्यौ सो न जुरैगो सरासन महेसजू को
रावरी पिनाक मैं सरीकता कहा रही"?॥१९॥

सवैया

गर्भ के अर्भक काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको।
सोई हौ बूझत राजसभा 'धनु को दल्यौ'? हौ दलिहौ बल ताको॥
लघु आनन उत्तर देत बडो, लरिहै मरिहै करिहै कछु साको।
गोरो गरूर गुमान भरो कहौ कौसिक छोटो सो ढोटो है काको॥२०॥

घनाक्षरी

मख राखिबे के काज राजा मेरे मग दये,

जीते जातुधान जे जितैया बिबुधेस के।

गौतम की तीय तारी, मेटे अघ भूरि भारी

लोचन अतिथि भए जनक जनेस के॥

चंड बाहुदंड बल चंडीस-कोदंड खंड्यो,

ब्याही जानकी जीते नरेस देस देस के।

साँवरे गोरे सरीर धीर महा बीर दोऊ

नाम राम लषन कुमार कोसलेस के॥ २१॥

सवैया

काल कराल नृपालन के धनुभंग सुने फरसा लिए धाए।

लक्खन राम बिलोकि सप्रेम, महा रिसि ते फिरि आँखि दिखाए॥

धीर-सिरोमनि वीर बडे बिनयी, बिजयी रघुनाथ सोहाए।

लायक हे भृगुनायक सो धनुसायक सौंपि सुभाय सिधाए॥ २२॥
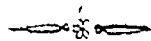
अयोध्या काण्ड

सवैया

कीर के कागर ज्यौं नृपचीर बिभूषन, उप्पम अँगनि पाई।
औध तजी मगबास के रूख ज्यौं पँथ के साथी ज्यौं लोग-लुगाई॥
संग सुबन्धु, पुनीत प्रिया मनो धर्म क्रिया धरि देह सुहाई।
राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई॥ १॥

कागर-कीर ज्यौं भूषन चीर सरीर लस्यो तजि नीर ज्यौं काई।
मातु पिता प्रिय लोग सब सनमानि सुभाय सनेह सगाई॥
सँग सुभामिनि भाइ भलो, दिन द्वै जनु औध हुते पहुनाई।
राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई॥ २॥

घनाक्षरी

सिथिल सनेह कहै कौसिला सुमित्राजू सौं,
मैं न लखी सौति, सखी! भगिनी ज्यौं सेई है।
कहै मोहि मैया, कहौं "मैं न मैया भरत की
बलैया लैहौं, भैया! तेरी मैया कैकेयी है"॥
तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी,
काय मन बानी हूँ न जानी कै मतेई है।
बाम बिधि मेरो सुख सिरिससुमन सम,
ताको छल छुरी कोह-कुलिस लै टेई है॥ ३॥

"कीजै कहा, जीजी जू!" सुमित्रा परि पायँ कहै,
"तुलसी सहावै बिधि सोई सहियतु है!

रावरे सुभाव राम-जन्म ही तें जानियत
भरत की मातु को कि ऐसो चहियतु है ? ।
जाई राजघर, ब्याहि आई राजघर माहँ,
राज-पूत पाए हूँ न सुख लहियतु है ।
देह सुधागेह ताहि मृगहू मलीन कियो,
ताहू पर बाहु बिनु राहु गहियतु है ।।४।।

सवैया

नाम अजामिल से खलकोटि अपार-नदी भव बूड़त काढ़े ।
जो सुमिरे गिरि-मेरु सिला कन, होत अजाखुर बारिधि बाढ़े ।।
तुलसी जेहि के पदपंकज तें प्रगटी तटिनी जो हरै अघ गाढ़े ।
सो प्रभु स्वै सरिता तरिबे कहँ माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े ।।५।।

एहि घाट तें थोरिक दूर अहै कटि लौं जल-थाह देखाइहौं जू ।
परसे पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ? ।।
तुलसी अवलंबन और कछू, लरिका केहि भाँति जिआइहौं जू ? ।
बरु मारिए मोहि, बिना पग धोए हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू ।।६।।

रावरे दोष न पायँन को, पगधूरि को भूरि प्रभाउ महा है ।
पाहन तें बन बाहन काठ को कोमल है, जल खाइ रहा है ।।
पावन पायँ पखारि कै नाव चढ़ाइहौं, आयसु होत कहा है ? ।
तुलसी सुनि केवट के बर बैन, हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है ।।७।।

घनाक्षरी

पात भरी सहरी, सकल सुत बारे बारे
केवट की जाति कछु बेद ना पढ़ाइहौं ।

सब परिवार मेरो याही लागि राजा जू,
हौं दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढाइहौं ? ॥
गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी,
प्रभु सो निषाद ह्वै कै बाद न बढ़ाइहौं ।
तुलसी के ईस राम रावरे सो साँची कहौं,
बिना पग धोए नाथ नाव न चढाइहौं ॥८॥

जिनको पुनीत बारि धारे सिर पै पुरारि,
त्रिपथगामिनि-जसु वेद कहै गाइ कै ।
जिनको जोगीन्द्र मुनिवृन्द देव देह भरि
करत बिराग जप जोग मन लाइ कै ॥
तुलसी जिनकी धूरि परसि अहिल्या तरी,
गौतम सिधारे गृह गौनो सो लिवाइ कै ।
तेइ पायँ पाइकै चढाइ नाव धोए बिनु
ख्वैहौ न पठावनी कै ह्वैहौं न हँसाइ कै ? ॥९॥

प्रभुरुख पाइ कै बोलाइ बाल घरनिहि
बंदि कै चरन चहूँ दिसि बैठे घेरि घेरि ।
छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजू को
धोइ पायँ पीयत पुनीत बार फेरि फेरि ॥
तुलसी सराहै ताको भाग सानुराग सुर,
बरषै सुमन जय जय कहै टेरि टेरि ।
बिबुध-सनेह-सानी बानी असयानी सुनि,
हँसे राघौ जानकी लषन-तन हेरि हेरि ॥१०॥

सवैया

पुर ते निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिरि बूझति है "चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौ कित ह्वै ?"।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारुचली जल च्वै॥११॥
"जल को गए लक्खन है लरिका, परिखौं, पिय ! छाँह घरीक ह्वै ठाढे।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढे"॥
तुलसी रघुबीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढे।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढे॥१२॥
ठाढे हैं नौ द्रुम डार गहे, धनु काँधे धरे, कर सायक लै।
बिकटी भ्रुकुटी बडरी अँखियाँ, अनमोल कपोलन की छबि है॥
तुलसी अस मूरति आनि हिये जड डारिहौं प्रान निछावरि कै।
स्रम-सीकर साँवरि देह लसै मनो रासि महा तम तारक मै॥१३॥

घनाक्षरी

जलजनयन, जलजानन, जटा है सिर,
जोवन उमग अंग उदित उदार है।
साँवरे गोरे के बीच भामिनी सुदामिनी सी,
मुनिपट धरे, उर फूलनि के हार है॥
करनि सरासन सिलीमुख निषंग कटि,
अतिही अनूप काहू भूप के कुमार है।
तुलसी बिलोकि कै तिलोक के तिलक तीनि,
रहे नरनारि ज्यों चितेरे चित्रसार है॥१४॥
आगे सोहै साँवरो कुवँर, गोरो पाछे पाछे,
आछे मुनि बेष धरे लाजत अनंग है

बान बिसिपासन, बसन बन ही के कटि,
कसे है बनाइ, नीके राजत निषंग है ॥
साथ निसिनाथमुखी पाथनाथ-नंदिनी सी,
तुलसी बिलोके चित लाइ लेत संग है।
आनँद उमग मन, जोवन उमंग तन,
रूप की उमग उमगत अंग अग हैं ॥१५॥

कवित्त

सुंदर बदन, सरसीरुह सुहाए नैन,
मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनि के।
असनि सरासन लसत, सुचि कर सर,
तून कटि, मुनिपट लूटक पटनि के ॥
नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटि कै
बिधि बिरचे बरूथ बिद्युत छटनि के।
गोरे को बरन देखे सोनो न सलोनो लागै,
साँवरे बिलोके गर्व घटत घटनि के ॥१६॥
बल्कल बसन, धनुबान पानि, तून कटि,
रूप के निधान, घन-दामिनी बरन है।
तुलसी सुतीय संग सहज सुहाए अंग,
नवल कवँल हू ते कोमल चरन है ॥
औरै सो बसंत, औरै रति, औरै रतिपति,
मूरति बिलोके तन मन के हरन हैं।
तापस बेष बनाइ, पथिक पथै सुहाइ,
चले लोक-लोचननि सुफल करन है ॥१७॥

सुख पाइहै कान सुने बतियाँ, कल आपुस मे कछु पै कहिहै" ।
तुलसी अति प्रेम लगीं पलकै, पुलकी लखि राम हिये महि हैं ।।२३।।

पद कोमल, स्यामल गौर कलेवर, राजत कोटि मनोज लजाए ।
कर बान सरासन सीस जटा, सरसीरुह लोचन सोन सुहाए ॥
जिन देखे, सखी ! सत भायहु ते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाए।
यहि मारग आजु किसोर बधू विधुबैनी समेत सुभाय सिधाए ॥२४॥

मुखपंकज, कंज बिलोचन मंजु, मनोज-सरासन सी बनी भौंहै ।
कमनीय कलेवर, कोमल स्यामल गौर किसोर, जटा सिर सोहै ॥
तुलसी कटि तून, धरे धनु बान, अचानक दीठि परी तिरछौहै ।
केहि भाँति कहौं, सजनी ! तोहिसों मृदु मूरति द्वै निवसी मन मोहैं।।२५॥

प्रेम सो पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितु दै, चले लै चित चोरे ।
स्याम सरीर पसेऊ लसै हुलसै तुलसी छवि सो मन मोरे ॥
लोचन लोल चलै भ्रुकुटी, कल काम-कमानहु सो तृन तोरे ।
राजत राम कुरंग के संग, निषंग कसे, धनुसो सर जोरे ॥२६॥

सर चारिक चारु बनाइ कसे कटि, पानि सरासन सायक लै ।
बन खेलत राम फिरै मृगया, तुलसी छबि सो बरनै किमि कै ? ॥
अवलोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चित दै ।
न डगै, न भगै जिय जानि सिलीमुख पंच धरे रतिनायक है ।।२७।।

बिंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे ।
गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृन्द सुखारे ।।
ह्वैहै सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे ।
कीन्ही भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे ॥२८॥

किष्किंधा काण्ड

जब अंगदादिन की मति गति मंद भई,
पवन के पूत को न कूदिबे को पलु गो।
साहसी ह्वै सैल पर सहसा सकेलि आइ,
चितवत चहुँ ओर औरन को कलु गो॥
तुलसी रसातल को निकसि सलिल आयो
कोल कलमल्यो, अहि कमठ को बलु गो।
चारिहू चरन के चपेट चाँपे चिपिटि गो
उचके उचकि चारि अंगुल अचलु गो॥१॥

बाल किलकारी कै-कै, तारी दै दै गारी देत,
पाछे लागे बाजत निसान ढोल तूर है।
बालधी बढन लागी ठौर ठौर दीन्ही आगि,
बिंध की दवारि, कैधौं कोटिसत सूर है॥ ३॥

लाइ लाइ आगि भागे बाल-जाल जहाँ तहाँ,
लघु ह्वै निबुकि गिरिमेरु ते बिसाल भो।
कौतुकी कपीस कूदि कनककँगूरा चढि,
रावन भवन जाइ ठाढ़ो तेहि काल भो॥
तुलसी बिराज्यो ब्योम बालधी पसारि भारी,
देखे हहरात भट काल ते कराल भो।
तेज को निधान मानो कोटिक कृसानु भानु,
नख बिकराल, मुख तैसो रिस-लाल भो॥४॥

बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल-जाल मानौ,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।
कैधौं ब्योमबीथिका भरे है भूरि धूमकेतु,
बीररस बीर तरवारि सी उघारी है॥
तुलसी सुरेस-चाप, कैधौं दामिनी-कलाप,
कैधौं चली मेरु ते कृसानु-सरि भारी है।
देखे जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं,
"कानन उजारयौ अब नगर प्रजारी है" ॥ ५॥

जहाँ तहाँ बुबुक बिलोकि बुबुकारी देत
"जरत निकेत धाओ धाओ लागि आगि रे।

बडा बिकराल बेष देखि, सुनि सिंहनाद,
उठ्यो मेघनाद सबिषाद कहै रावनो।
बेग जीत्यो मारुत, प्रताप मारतंड कोटि,
कालऊ करालता बडाई जीतो बावनो॥
तुलसी सयाने जातुधान पछिताने मन
"जाको ऐसो दूत सो साहब अबै आवनो।
काहे की कुसल रोषे राम बामदेवहू के,
बिषम बली सो बादि बैर को बढ़ावनो॥९॥

पानी पानी पानी' सब रानी अकुलानी कहैं,
जाति हैं परानी, गति जानि गजचालि है।
बसन बिसारैं, मनि भूषन सँभारत न,
आनन सुखाने कहैं "क्योंहूँ कोऊ पालि है
तुलसी मँदोवै मीजि हाथ, धुनि माथ कहै,
"काहू कान कियो न मैं कह्यो केतो कालि है।"
बापुरो बिभीषन पुकारि बार बार कह्यो,
"बानर बड़ी बलाइ घने घर घालि है" ॥१०॥

कानन उजार्‍यो तौ उजार्‍यो न बिगारेउ कछू
बानर बिचारो बाँधि आन्यो हठि हार सो।
निपट निडर देखि काहू ना लख्यो बिसेषि,
दीन्हो ना छुड़ाइ कहि कुल के कुठार सो॥
छोटे औ बडेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब,
साँपनि सों खेलै, मेलै गरे छुराधार सो।

तुलसी मँदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु,
'बार बार कह्यो मैं पुकारि दाढ़ीजार सो ॥११॥

रानी अकुलानी सब डाढ़त परानी जाहिं,
सकैं ना बिलोकि बेष केसरीकुमार को।
मीजि मीजि हाथ, धुनैं माथ दसमाथ-तिय
तुलसी तिलौ न भयो बाहिर अगार को॥
सब असबाब डाढ़ो, मैं न काढ़ो तैं न काढ़ो,
जिय की परी सँभार, सहन भँडार को।
खीझति मँदोवै सबिषाद देखि मेघनाद,
'बयो लुनियत सब याही दाढ़ीजार को ॥१

रावन की रानी जातुधानी बिलखानी कहै
हा हा! कोऊ कहै बीसबाहु दसमाथ सों—
काहे मेघनाथ, काहे काहे, रे महोदर! तू
धीरज न देत, लाइ लेत क्यों न हाथ सो?
काहे अतिकाय, काहे काहे रे अकंपन!
अभागे तिय त्यागे भोंडे भागे जात साथ सों?।
तुलसी बढ़ाय बादि साल ते बिसाल बाहैं,
याही बल, बालिसो! बिरोध रघुनाथ सो!"॥१

हाट, बाट, कोट ओट, अटनि, अगार, पौरि,
खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगि है।
आरत पुकारत, सँभारत न कोऊ काहू,
ब्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि है॥

बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरै,
बूँदिया सी, लक पघिलाइ पाग पागि है।
तुलसी बिलोकि अकुलानी जातुधानी कहै,
"चित्रहू के कपि सो निसाचर न लागि है" ॥१४॥
लागि लागि आगि" भागि भागि चले जहाँ तहाँ,
धीय को न माय, बाप पूत न सँभारहीं।
छूटे बार, बसन उघारे, धूमधुँधअंध,
कहै बारे बूढ़े 'बारि बारि' बार बार हीं ॥
हय हिहिनात भागे जात, घहरात गज,
भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं।
नाम लै चिलात, बिललात अकुलात अति,
"तात तात! तौंसियत, झौंसियत झारहीं" ॥१५॥
लपट कराल ज्वालजालमाल दहूँ दिसि,
धूम अकुलाने पहिचानै कौन काहि रे
पानी को ललात, बिललात, जरे गात जात,
"परे पाइमाल जात, भ्रात! तू निबाहि रे ॥
प्रिया तू पराहि, नाथ नाथ! तू पराहि, बाप,
बाप! तू पराहि, पूत पूत! तू पराहि रे"।
तुलसी बिलोकि लोग ब्याकुल बिहाल कहै,
"लेहि दससीस अब बीस चख चाहि रे" ॥१६॥
बीथिका बजार प्रति, अटनि अगार प्रति,
पँवरि पगार प्रति बानर बिलोकिए।

अध ऊर्द्ध बानर, बिदिसि दिसि बानर है,
मानहु रह्यो है भरि बानर तिलोकिए॥
मूँद आँखि हीय मे उघारे आँखि आगे ठाढो,
धाइ जाइ जहाँ तहाँ और कोऊ को किए?
"लेहु अब लेहु, तब कोऊ न सिखाओ मानो,
सोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिए'॥ १७॥
एक करै धौज, एक कहै काढौ सौंज,
एक औजि पानी पी कै कहै बनत न आवनो'।
एक परे गाढे, एक डाढत ही काढे, एक
देखत है ठाढे, कहै 'पावक भयावनो'॥
तुलसी कहत एक "नीके हाथ लाए कपि,
अजहूँ न छाँडै बाल गाल को बजावनो"।
"धाओरे बुझाओ रे कि बावरे हौ रावरे, या
औरे आगि लागी, न बुझावै सिंधु सावनो"॥१८॥
कोपि दसकंध तब प्रलयपयोद बोले,
रावनरजाइ धाइ आए जूथ जोरि कै।
कह्यो लंकपति "लंक बरत बुताओ बेगि,
बानर बहाइ मारौ महा बारि बोरि कै"॥
'भले नाथ'" नाइ माथ चले पाथप्रदनाथ,
बरपै मूसलधार बार बार घोरि कै।
जीवन ते जागी आगी, चपरि चौगुनी लागी,
तुलसी भभरि मेघ भागे मुख मोरि कै॥१९॥

इहाँ ज्वाल जरे जात, उहाँ ग्लानि गरे गात,

सूखे सकुचात सब कहत पुकार है।

'जुग-पट भानु देखे, प्रलय कृसानु देखे,

सेषमुखअनल बिलोके बार बार है॥

तुलसी सुन्यो न कान सलिल सर्पी समान,

अति अचरज कियो केसरीकुमार है"।

वारिद बचन सुनि धुनै सीस सचिवन्ह।

कहै दससीस ईस बामता बिकार है" ॥२०॥

"पावक, पवन, पानी, भानु, हिमवान, जम

काल, लोकपाल मेरे डर डाँवाडोल है।

साहिब महेस सदा, संकित रमेस मोहिं,

महातपसाहस विरंचि लीन्हे मोल है॥

तुलसी तिलोक आजु दूजो न बिराजै राजा,

बाजे बाजे राजनि के बेटा बेटी ओल है।

को है ईस नाम को जो बाम होत मोहू सो को?

मालवान! रावरे के बावरे से बोल है"॥२१॥

भूमि भूमिपाल, व्यालपालक पताल, नाकपाल,

लोकपाल जेते सुभट समाज है।

कहै मालवान "जातुधानपति रावरे को

मनहूँ अकाज आनै ऐसो कौन आज है?॥

रामकोह-पावक समीरसीयस्वास कीस-

ईस-बामता बिलोकु, बानर को व्याज है।

जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निसक लंक,
जहाँ बाँको बीर तोसो सूर सिरताज है" ॥२२॥

पान, पकवान विधि नाना को सँधानो, सीधो,
विविध विधान धान बरत बखारही ।
कनककिरीट कोटि पलँग, पेटारे, पीठ
काढत कहार, सब जरे भरे भारही ॥
प्रबल अनल बाढै, जहाँ काढै, तहाँ डाढै,
झपट लपट भरै भवन भँडारही ।
तुलसी अगार न पगार न बजार बच्यो,
हाथी हथिसार जरे घोरे घोरसारही ॥२३॥

हाट बाट हाटक पिघिल चलो घी सो घनो,
कनक कराही लंक तलफति ताय सो ।
नाना पकवान जातुधान बलवान सब,
पागि पागि ढेरी कीन्ही भली भाँति भाय सो ॥
पाहुने कृसानु पवमान सो परोसो,
हनुमान सनमानि कै जेवाये चित चाय सो ।
तुलसी निहारि अरिनारि दै दै गारि कहै,
"बावरे सुरारि बैर कीन्हो रामराय सो" ॥२४॥

रावन सो राजरोग बाढत विराटउर,
दिन दिन विकल सकलसुखराँक सो ।
नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि
होत न विसोक, ओत पावै न मनाक सो ॥

राम की रजाय तें रसायनी समीरसूनु,
उतरि पयोधिपार सोधि सरवाक सो।
जातुधान बुट, पुटपाक लंक जातरूप,
रतन जतन जारि कियो है मृगांक सो ॥२५॥

जारि बारि कै बिधूम बारिधि बुताइ लूम,
नाइ माथो, पगनि भो ठाढ़ो कर जोरि कै।
"मातु कृपा कीजै, सहदानि दीजै" सुनि सीय,
दीन्हीं है असीस चारु चूड़ामनि छोरि कै॥
"कहा कहौं, तात ! देखे जात ज्यों बिहात दिन
बड़ी अवलंब ही सो चले तुम तोरि कै"।
तुलसी सनीर नैन नेह सो सिथिल बैन,
बिकल बिलोकि कपि कहत निहोरि कै ॥२६॥

"दिवस छ सात जात जानिबे न, मातु धरु
धीर, अरि अंत की अवधि रही थोरि कै।
बारिधि बँधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु,
सानुज कुसल कपिकटक बटोरि कै" ॥
बचन बिनीत कहि सीता को प्रबोध करि
तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरि कै।
"जै जै जानकीस दससीसकरि केसरी"
कपीस कूद्यो बातघात बारिधि हलोरि कै ॥२७॥

साहसी समीरसूनु नीरनिधि लंघि लखि
लंक सिद्धपीठ निसि जागो है मसान सो।

तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई
देवी सिय सारिषी, दियो है बरदान सो ॥
बाटिका उजारि, अच्छ-धारि मारि जारि गढ
भानुकुलभानु को प्रतापभानु भानु सो ।
करत बिसोक लोक कोकनद, कोक-कपि,
कहै जामवंत आयो आयो हनुमान सो ॥२८॥

गगन निहारि, किलकारी भारी सुनि,
हनुमान पहिचानि भये सानद सचेत है ।
बूडत जहाज बच्यो पथिकसमाज, मानो
आजु जाये जानि सब अंकमाल देत है ॥
'जै जै जानकीस, जै जै लषन कपीस' कहि
कूदैं कपि कौतुकी, नचत रेत रेत हैं ।
अंगद मयंद नल नील बलसील महा
बालधी फिरावैं, मुख नाना गति लेत हैं ॥२९॥

आयो हनुमान प्रानहेतु, अंकमाल देत,
लेत पगधूरि एक चूमत लँगूल है ।
एक बूझै बार बार सीय समाचार कहे,
पवनकुमार भो बिगतस्रम सूल हैं ॥
एक भूखे जानि आगे आनै कंद मूल फल,
एक पूजे बाहुबल तोरि मूल फूल है ।
एक कहै तुलसी 'सकल सिधि ताके जाके
कृपापाथनाथ सीतानाथ सानुकूल हैं' ॥३०॥

सीय को सनेहसील, कथा तथा लंक की
चले कहत चाय सो, सिरानो पथ छन मे।
कह्यो जुवराज बोलि वानर समाज "आजु,
खाहु फल" सुनि पेलि पैठे मधुवन मे।
मारे बागवान, ते पुकारत देवान गे,
'उजारे बाग अंगद' दिखाए घाय तन मे।
कहे कपिराज "करि काज आये कीस,
तुलसीस की सपथ महामोद मेरे मन मे ॥३१॥

नगर कुवेर को सुमेरु की वरावरी,
बिरचि बुद्धि को बिलास लंक निरमान भो।
ईसहि चढ़ाय सीस बीसबाहु बीर तहाँ,
रावन सो राजा रजतेज को निधान भो॥
तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौज सपदा
सकेलि चाकि राखी रासि जाँगर जहान भो।
तीसरे उपास बनबास सिधुपास सो
समाज महाराज जू को एक दिन दान भो ॥३२॥

लंका काण्ड

बडे बिकराल भालु, बानर बिसाल बडे
तुलसी बडे पहार लै पयोधि तोपि है।
प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड खंड,
मंडि मेदिनी को मंडलीक लीक लोपि हैं॥
लंकदाहु देखे न उछाहु रह्यो काहुन को,
कहै सब सचिव पुकारि पाँव रोपि है।
"बाचिहैं न पाछे त्रिपुरारि हू मुरारिहू के,
को है रन रारि को जौ कोसलेस कोपि है?"॥१॥

त्रिजटा कहत बार बार तुलसीस्वरी सों,
"राघौ बान एक ही समुद्र सातौ सोपिहै।
सकुल सँघारि जातुधानधारि, जम्बुकादि
जोगिनीजमाति कालिकाकलाप तोपि हैं॥
राज दै निवाजिहैं बजाय कै बिभीषनै,
बजैंगे ब्योम बाजने बिबुध प्रेम पोषि है।
कौन दसकंध, कौन मेघनाद बापुरो,
को कुम्भकर्न कीट जब राम रन रोपि है" ॥२॥

बिनय सनेह सों कहति सीय त्रिजटा सों
"पाये कछु समाचार आरजसुवन के?"।
"पाये जू! बँधायो सेतु, उतरे कटक कुलि,
आये देखि देखि दूत दारुन दुवन के॥

बदनमलीन बलहीन दीन देखि मानो,
मिटै घटै तमीचरतिमिर भुवन के।
लोकपतिसोककोक मूँद कपि-कोकनद,
दंड द्वै रहे है रघु आदित उवन के ॥ ३ ॥

भूलना

सुभुज मारीच खर त्रिसिर दूषन बालि
दलत जेहि दूसरो सर न साँध्यो।
आनि परबाम बिधिबाम तेहि राम सो
सकत संग्राम दसकंध काँध्यो ॥
समुझि तुलसीस कपिकर्म घर घर घैरु,
बिकल सुनि सकल पाथोधि बाँध्यो।
बसत गढ लंक लंकेस नायक अछत,
लंक नहि खात कोउ भात राँध्यो ॥४॥

सवैया

बिस्वजयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ-हजारी।
बातुल मातुल की न सुनी सिख, का तुलसी कपि लंक न जारी ? ॥
अजहूँ तौ भलो रघुनाथ मिले, फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी।
कीर्त्ति बडो, करतूति बडो जन, बात बडो, सो बड़ोई बजारी ॥५॥
जब पाहन भे बनबाहन से, उतरे बनरा 'जयराम' रढ़े।
तुलसी लिये सैल-सिला सब सोहत, सागर ज्यो बलबारि बढ़े ॥
करि कोप करै रघुबीर को आयसु, कौतुक ही गढ़ कूदि चढ़े।
चतुरंग चमू पल मे दलि कै रन रावन राढ़ के हाड़ गढ़े ॥६॥

घनाक्षरी

बिपुल बिसाल बिकराल कपि भालु मानौ,
काल बहु बेष धरे धाये किये करषा।
लिये सिला सल, साल ताल औ तमाल तोरि,
तोपै तोयनिधि, सुर को समाज हरषा॥
डगे दिगकुंजर, कमठ कोल कलमले,
डोले धराधर-धारि, धराधर धरषा।
तुलसी तमकि चलै, राघौ की सपथ करै
को करै अटक कपि-कटक अमरषा? ॥७॥
आए सुक सारन बोलाए, ते कहन लागे,
'पुलक सरीर सेना करत फहम हीं।
महाबली बानर बिसाल भालु काल से
कराल है, रहे कहाँ, समाहिंगे कहाँ महीं'।
हँस्यो दसमाथ रघुनाथ को प्रताप सुनि,
तुलसी दुरावै मुख सूखत सहमहीं॥
राम के बिरोधे बुरो बिधि हरि हरहू को,
सब को भलो है राजा राम के रहम हीं॥८॥
'आयो आयो आयो सोई बानर बहोरि,' भयो
सोर चहुँ ओर लंका आए जुबराज के।
एक काढै सौज, एक धौज करै कहा ह्वैहै,
'पोच भई महा' सोच सुभट समाज के॥
गाज्यो कपिराज रघुराज की सपथ करि,
मूँदे कान जातुधान मानो गाजे गाज के।

सहमि सुखात बातजात की सुरति करि,
लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाज के ॥९॥

तुलसीस-बल रघुबीर जू के बालिसुत,
वाहि न गनत, बात कहत करेरी सी।
"बखसीस ईस जू की खीस होत देखियत,
रिस काहे लागति कहत हौं तो तेरी सी॥
चढ़ि गढ़ मढ़ दृढ़ कोट के कँगूरे कोपि,
नेकु धका दैहै ढैहै ढेलन की ढेरी सी।
सुनु दसमाथ! नाथ-साथ के हमारे कपि
हाथ लंका लाइहै तो रहैगी हथेरी सी॥१०॥

दूषन बिराध खर त्रिसिर कबंध बधे,
तालऊ बिसाल बेधे कौतुक है कालि को।
एक ही बिसिष बस भयो बाँकुरो जो,
तोहू है बिदित बल महाबली बालि को॥
तुलसी कहत हित, मान तो न नेकु सक,
मेरो कहा जैहै, फल पैहै तू कुचालि को।
बीर-करि-केसरी कुठारपानि मानी हारि,
तेरी कहा चली, बिड! तो सो गनै घालि को॥११॥

सवैया

तोसों कहौं दसकंधर रे, रघुनाथ-बिरोध न कीजिय बौरे।
बालि बली खरदूषन और अनेक गिरे जे जे भीति मे दौरे॥
ऐसिय हाल भई तोहि धौं,नतु लै मिलु सीय चहै सुख जौ रे।
राम के रोष न राखि सकै तुलसी बिधि,श्रीपति, संकर सौ रे॥१२॥

झूलना

कनकगिरिसृंग चढ़ि देख मर्कट-कटक,
बदति मंदोदरी परम भीता।
"सहसभुज-मत्त-गजराज-रनकेसरी
परसुधर-गर्व जेहि देखि बीता॥
दास तुलसी समरसूर कोसलधनी
ख्याल ही बालि बलसालि जीता।
(रे) कंत! तृन दंत गहि सरन श्रीराम कहि,
अजहुँ यहि भाँति लै सौंपु सीता॥१७॥

रे नीच! मारीच बिचलाइ, हति ताडका
भंजि सिवचाप सुख सबहि दीन्ह्यो।
सहस-दसचारि खल सहित खर दूषनहि,
पठै जमधाम, तै तउ न चीन्ह्यो॥
मै जु कहौं कंत सुनु संत भगवंत सों,
बिमुख ह्वै बालि फल कौन लीन्ह्यो?।
बीस भुज सीस दस खीस गए तबहि
जब ईस के ईस सो बैर कीन्ह्यो॥१८॥

बालि दलि कालिह जलजान पाषान किय,
कंत! भगवंत तै तउ न चीन्हे।
बिपुल बिकराल भट भालु कपि काल से,
संग तरु तुंग गिरिसृंग लीन्हे।
आइगे कोसलाधीस तुलसीस जेहि,

तुम्हैं बिद्यमान जातुधान मंडली में कपि,
कोपि रोप्यो पाउँ, सो प्रभाव तुलसीस का ॥
कंत ! सुनु मंत, कुल अंत किये अंत हानि,
हातो कीजै हीय तें भरोसो भुज बीस को।
तौलौं मिलु वेगि जौलौं चाप न चढायो राम,
रोषि बान काढ्यो न दलैया दससीस को ॥२२॥

पवन को पूत देखौ दूत बीर बाँकुरो जो,
बंक गढ लङ्क सो ढका ढकेलि ढाहिगो।
बालि बलसालि को, सो काल्हि दाप दलि,कोपि
रोप्यो पाँउ, चपरि चमू को चाउ चाहिगो ॥
सोई रघुनाथ कपि साथ पाथनाथ बाँधि,
आए नाथ ! भागे तें खिरिरि खेह खाहिगो ॥
तुलसी गरब तजि, मिलिबे को साज सजि,
देहि सीय नतौ, पिय ! पाइमाल जाहिगो ॥२३॥

उदधि अपार उतरत नहि लागी बार,
केसरीकुमार सो अदंड कैसो डाँड़िगो।
बाटिका उजारि अच्छ रच्छकनि मारि, भट
भारी भारी रावरे के चाउर से काँडिगो ॥
तुलसी तिहारे बिद्यमान जुवराज आज,
कोपि पाँव रोपि, बस कै छोहाइ छाँड़िगो।
कहे की न लाज, पिय ! अजहूँ न आए बाज,
सहित समाज गढ़ राँड़ कैसो भाँडिगो ॥२४॥

जाके रोष दुसह त्रिदोष दाह दूरि कीन्हे,
पैयत न छत्रीखोज खोजत खलक में।
महिषमती को नाथ साहसी सहसबाहु
समर समर्थ, नाथ ! हेरिए हलक में॥
सहित समाज महाराज सो जहाजराज
बूडि गयो जाके बलबारिधिछलक में।
टूटत पिनाक के मनाक बाम राम से, ते
नाक बिनु भये भृगुनायक पलक में॥२५॥

कीन्ही छोनी छत्री बिनु, छोनिपछपनहार
कठिन कुठारपानि बीर बानि जानि कै।
परम कृपाल जो नृपाल लोकपालन पै,
जब धनु हाइ ह्वैहै मन अनुमानि कै॥
नाक मे पिनाक मिस बामता बिलोकि राम
रोक्यो परलोक, लोक भारी भ्रम भानि कै।
नाइ दस माथ महि, जोरि बीस हाथ, पिय !
मिलिए पै नाथ रघुनाथ पहिचानि कै॥२६॥

कह्यो मत मातुल बिभीषनहु बार बार,
आँचर पसारि पिय पाँय लै लै हौं परी।
बिदित बिदेहपुर, नाथ ! भृगुनाथगति,
समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौं परी॥
बायस, बिराध, खर, दूषन, कबंध, बालि,
बैर रघुबीर के न पूरी काहु की परी।

कत बीस लोचन बिलोकिए कुमंत-फल,

ख्याल लंका लाई कपि राँड की सी झोपरी ॥२७॥

सवैया

राम सो साम किये नित है हित कोमल काज न कीजिए टाँठे।
आपनि सूझि कहौ, पिय! बूझिए, जूझिबे जोग न ठाहरु नाठे॥
नाथ,! सुनी भृगुनाथकथा, बलि बालि गए चलि बात के साँठे।
भाइ बिभीषन जाइ मिल्यो प्रभु आइ परे सुनी सायर-काँठे॥२८॥

पालिबे को कपि-भालु-चमू जमकाल करालहु को पहरी है।
लंक से बंक महागढ दुर्गम ढाहिबे दाहिबे को कहरी है॥
तीतर-तोम तमीचर-सेन समीर को सूनु बडो बहरी है।
नाथ भलो रघुनाथ मिले, रजनीचर-सेन हिये हहरी है॥२९॥

घनाक्षर

रोष्यो रन रावन, बोलाए बीर बानइत,

जानत जे रीति सब संजुग समाज की।

चली चतुरंग चमू, चपरि हने निसान,

सेना सराहन जोग रातिचर-राज की॥

तुलसी बिलोकि कपि भालु किलकत,

ललकत लखि ज्यों कँगाल पातरी सुनाज की।

राम रुख निरखि हरषे हिय हनुमान,

मानो खेलवार खोली सीसताज बाज की॥३०॥

साजिकै सनाह गजगाह सउछाह दल,

महाबली धाये बीर जातुधान धीर के।

इहाँ भालु बंदर बिसाल मेरु मंदर से,
लिये सैल साल तोरि नीर निधि तीर के ॥
तुलसी तमकि ताकि भिरे भारी जुद्ध क्रुद्ध,
सेनप सराहैं निज निज भट भीर के ।
रुंडन के झुंड झूमि झूमि झुकरे से नाचैं,
समर सुमार सूर मारे रघुबीर के ॥३

सवैया

तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजि चढे छँटि छैल छबीले ।
भारी गुमान जिन्हैं मन मे, कबहूँ न भये रन मे तनु ढीले ॥
तुलसी गज से लखि केहरि लौं झपटे पटके सब सूर सलीले ।
भूमि परे भट घूमि कराहत हाँकि हने हनुमान हठीले ॥३२॥
सूर सँजोइल साजि सुबाजि, सुसेल धरे बगमेल चले है ।
भारी भुजा भरी, भारी सरीर, बली बिजयी सब भाँति भले है॥
तुलसी जिन्हैं धाये धुकै धरनीधर, धीर धकानि सो मेरु हले हैं।
ते रन-तीर्थनि लक्खन लाखन दानि ज्यों दारिद दाबि दले है॥ ३३॥
गहि मंदर बंदर भालु चले सो मनो उनये घन सावन के ।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके, झपटै भट जे सुरदावन के ॥
बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे, न टरे हठि बैर बढावन के ।
रन मारि मची उपरी उपरा, भले वीर रघु-प्पति रावन के ॥३४॥
सर तोमर सेल समूह पँवारत, मारत बीर निसाचर के ।
इत ते तरु ताल तमाल चले, खर खंड प्रचंड महीधर के ॥
तुलसी करि केहरि-नाद भिरे, भट खग्ग खगे खपुवा खरके ।

नख दंतन सों भुजदण्ड बिहंडत रुंड सों मुंड परे झर कै ॥ ३५ ॥

रजनीचर मत्तगयंद-घटा बिघटै मृगराज के साज लरै ।
झपटै, भट कोटि मही पटकै, गरजै रघुबीर की सौंह करै ॥
तुलसी उत हाँक दसानन देत, अचेत भे बीर को धीर धरै ?
बिरुझो रन मारुत को बिरुदैत, जो कालहु काल सों बूझि परै ॥ ३६॥

जे रजनीचर बीर बिसाल कराल बिलोकत काल न खाए ।
ते रन रोर कपीस-किसोर बडे बरजोर परे फग पाए ॥
लूम लपेटि अकास निहारि कै हाँक हठी हनुमान चलाए ।
सूखि गे गात चले नभ जात, परे भ्रमबातन भूतल आए ॥ ३७॥

जो दससीस महीधर-ईस को बीस भुजा खुलि खेलनहारो ।
लोकप दिग्गज दानव देव सबै सहमै सुनि साहस भारो ॥
बीर बड़ो बिरुदैत बली, अजहूँ जग जागत जासु पँवारो ।
सो हनुमान हनी मुठिका, गिरि गो गिरिराज ज्यों गाज को मारो ॥ ३८॥

दुर्गम दुर्ग पहारन ते भारे प्रचंड महा भुजदंड बने है ।
लक्ख मे पक्खर तिक्खन तेज जे सूर समाज मे गाज गने है ॥
ते बिरुदैत बली रन-बाँकुरे हाँकि हठी हनुमान हने है ।
नाम ले राम दिखावत बंधु को, घूमत घायल घाय घने है ॥ ३९॥

घनाक्षरी

हाथिन सों हाथी मारे, घोड़े घोड़े सों सँहारे,
रथनि सों रथ बिदरनि बलवान की ।
चंचल चपेट चोट चरन चकोट चाहै,
हहरानी फौजे भहरानी जातुधान की ॥

बार बार सेवक सराहना करत राम,
तुलसी सराहै रीति साहेब सुजान की ।
लाँबी लूम लसत लपेटि पटकत भट,
देखौ देखौ लखन ! लरनि हनुमान की ॥४०॥

दबकि दबोरे एक बारिधि में बोरे एक,
मगन मही में एक गगन उड़ात हैं ।
पकरि पछारे कर चरन उखारे एक
चीरि फारि डारे एक मींजि मारे लात हैं ॥
तुलसी लखत राम रावन बिबुध, बिधि
चक्रपानि चंडीपति, चंडिका सिहात हैं ।
बड़े बड़े बानइत बीर बलवान बड़े
जातुधान जूथप निपाते बातजात हैं ॥४१॥

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड बीर,
धाये जातुधान हनुमान लियो घेरि कै ॥
महाबल-पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि भट
जहाँ तहाँ पटके लँगूर फेरि फेरि कै ॥
मारे लात, तोरे गात, भागे जात हाहा खात,
कहैं 'तुलसीस राखि राम की सौं' टेरि कै ।
ठहर ठहर परे कहरि कहरि उठै
हहरि हहरि हर सिद्ध हँसे हेरि कै ॥४२॥

जाकी बाँकी बीरता सुनत सहमत सूर,
जाकी आँच अजहूँ लसत लंक लाह सी ।

सोई हनुमान बलवान बाँके बानइत,
जीहि जातुधान-सेना चले लेत थाह सी ॥
कंपत अकंपन, सुखाय अतिकाय काय,
कुंभऊकरन आइ रह्यो पाइ आह सी ।
देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो
बीर रघुबीर को, समीरसूनु साहसी ॥४३।

भूलना

मत्तभट--मुकुट--दसकंध--साहस--सइल
सृङ्ग—बिहरनि जनु बज्रटाँकी ।
दसन धरि धरनि चिक्करत दिग्गज कमठ,
सेष संकुचित, संकित पिनाकी ॥
चलित महि मेरु, उच्छलित सायर सकल
बिकल विधि बधिर दिसि बिदिस झाँकी ।
रजनिचर घरनि घर गर्भ-अर्भक स्रवत,
सुनत हनुमान की हाँक बाँकी ॥४४।
कौन की हाँक पर चौंक चंडीस बिधि,
चंडकर थकित फिर तुरँग हाँके ।
कौन के तेज बलसीम भट भीम से
भीमता निरखि कर नयन ढाँके ॥
दास तुलसीस के बिरुद बरनत बिदुष,
बीर बिरुदैत बर बैरि धाँके ।
नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन,

कहाँ हनुमान से बीर बाँके ॥४५॥

जातुधानावली मत्त-कुंजर-घटा

निरखि मृगराज जनु गिरि तें टूट्यो।

बिकट चटकन चपट, चरन गहि पटक महि,

निघटि गए सुभट, सत सब को छूट्यो॥

दास तुलसी परत धरनि, धरकत झुकत,

हाट सी उठति जम्बुकनि लूट्यो।

धीर रघुबीर को बीर रन-बाँकुरो

हाँकि हनुमान कुलि कटक कूट्यो ॥४६॥

छप्पय

कतहुँ बिटप भूधर उपारि परसेन बरक्खत।

कतहुँ बाजि सो बाजि, मर्दि गजराज करक्खत॥

चरन चोट चटकन चकोट अरि उर सिर बज्जत।

बिकट कटक बिद्दरत बीर बारिद जिमि गज्जत॥

लूंगर लपेटत पटकि भट, 'जयति राम जय' उच्चरत।

तुलसीस पवननंदन अटल जुद्ध क्रुद्ध कौतुक करत।४७॥

घनाक्षरी

अंग अंग दलित ललित फूले किंसुक से,

हने भट लाखन लखन जातुधान के।

मारि कै पछारे कै उपारि भुजदण्ड चण्ड,

खण्ड खण्ड डारे ते बिदारे हनुमान के॥

कटत कनभ के कटत तल सी कटत

धावत दिखावत है लाघौ राघौ बान के।
तुलसी महेस, बिधि, लोकपाल देवगन
देखत विमान चढे कौतुक मसान के ॥४८॥
लोथिन सो लोहू के प्रबाह चले जहाँ तहाँ,
मानहु गिरिन गेरु-झरना झरत है।
सोनित सरित घोर, कुञ्जर करारे भारे
कूल तें समूल बाजि-बिटप परत है॥
सुभट सरीर नीरचारी भारी भारी तहाँ,
सूरनि उछाह, कूर कादर डरत है।
फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात,
काक कंक-बालक कोलाहल करत है ॥४९॥
ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे,
मूड के कमंडलु, खपर किये कोरि कै।
जोगिनी झुटुंग झुण्ड झुण्ड बनी तापसी सी
तीर तीर बैठी सो समरसरि खोरि कै॥
सोनित सो सानि सानि गूदा खात सतुआ से,
प्रेत एक पियत बहोरि घोरि घोरि कै।
तुलसी बैताल भूत साथ लिए भूतनाथ,
हेरि हेरि हँसत हैं हाथ हाथ जोरि कै ॥५०॥

सवैया

राम-सरासन ते चले तीर, रहे न सरीर, हड़ावरि फूटी।
रावन धीर न पीर गनी, लखि लै कर खप्पर जोगिनि जूटी॥

सोनित छींटि-छटानि-जटे तुलसी प्रभु सोहैं महाछबि छूटी ।
मानौ मरकत सैल बिसाल में फैलि चली पर बीरबहूटी । ५१ ।

घनाक्षरी

मानी मेघनाद सों प्रचारि भिरे भारी भट,
आपने अपन पुरुषारथ न ढील की ।
घायल लषनलाल लखि बिलखाने राम,
भई आस सिथिल जगन्निवास-दील की ॥
भाई का न मोह, छोह सीय को न, तुलसीस
कहै "मैं बिभीषन की कछु न सबील की" ।
लाज बाँह बोले की, नेवाजे की सँभार सार,
साहिब न राम से, बलैया लेउँ सील की ॥५२॥

सवैया

कानन बास, दसानन सो रिपु, आननश्री ससि जीति लियो है ।
बालि महाबलसालि दल्यो, कपि पालि, बिभीषन भूप कियो है ॥
तीय हरी, रन बंधु परयौ, पै भरयो सरनागत-सोच हियो है ।
बाँह-पगार उदार कृपालु, कहाँ रघुबीर सो बीर बियो है ? ॥५३॥
लीन्हो उखारि पहार बिसाल, चल्यो तेहि काल, बिलम्ब न लायो ।
मारुतनंदन मारुत को, मन को, खगराज को बेग लजायो ॥
तीखी तुरा तुलसी कहतो, पै हिये उपमा को समाउ न आयो ।
मानो प्रतच्छ परब्बत की नभ लीक लसी कपि यों धुकि धायो ॥५४॥

घनाक्षरी

चल्यो हनुमान सुनि जातुधान कालनेमि,
पठयो, सो मुनि भयो, पायो फल छलि कै ।

सहसा उखारो है पहार बहु जोजन को,
रखवारे मारे भारे भूरि भट दलि कै ॥
वेग बल साहस सराहत कृपा निधान,
भरत की कुसल अचल ल्यायो चलि कै ।
हाथ हरिनाथ के बिकाने रघुनाथ जनु,
सीलसिंधु तुलसीस भलो मान्यो भलि कै ॥५५॥

बापु दियो कानन भो आनन सुभानन सो,
बैरी भो दसानन सो, तीय को हरन भो ।
बालि बलिसाल दलि, पालि कपिराज को,
बिभीषन नेवाजि सेतुसागर तरन भो ॥
घोरि रारि हेरि त्रिपुरारि विधि हारे हिये,
घायल लखन बीर बानर बरन भो ।
ऐसे सोक मे तिलोक कै बिसोक पल ही मे,
सब ही को तुलसी को साहिबा सरन भो ॥५६॥

सवैया

कुम्भकरन्न हन्यो रन राम दल्यो दस कंधर तोरे ।
पूषन-बस-बिभूषन-पूषन तेज प्रताप गरे अरि-ओरे ॥
देव निसान बजावत गावत, साँवत गो, मनभावत भोरे ।
नाचत बानर भालु सबै तुलसी कहि हारे ! हहा भइया हो रे ॥५७॥

घनाक्षरी

मारे रन रातिचर, रावन सकुल दल,
अनुकूल देव मुनि फूल बरषतु है ।

नाग नर किन्नर बिरचि हरि हर हेरि,
पुलक सरीर, हिये हेतु, हरषतु है ॥
बाम ओर जानकी कृपानिधान के बिराजै,
देखत बिषाद मिटे मोद करषतु है।
आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सबै,
तुलसी निहाल कै कै दिये सरषतु है ॥५८॥

उत्तर काण्ड

सवैया

बालि से बीर बिदार सुकंठ थप्यो, हरषे सुर बाजने बाजे ।
पल मे दल्यो दासरथी दसकंधर लंक बिभीषन राज बिराजे ॥
राम सुभाव सुने तुलसी हुलसे अलसी, हमसे गलगाजे ।
कायर कूर कपूतन की हद तेउ गरीबनेवाज नेवाजे ॥१॥

बेद पढै बिधि संभु सभीत, पुजावन रावन सो नित आवैं ।
दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहि तें सिर नावैं ॥
ऐसेउ भाग भगे दसभाल ते जो प्रभुता कवि कोबिद गावैं ।
राम से बाम भए तेहि बामहि बाम सबै सुख संपति लावैं ॥२॥

बेद-बिरुद्ध, मही मुनि साधु ससोक किए, सुरलोक उजारो ।
और कहा कहौ तीय हरी, तबहूँ करुनाकर कोप न धारो ॥
सेवक-छोह ते छाँडी छमा, तुलसी लख्यो राम सुभाव तिहारो ।
तौलौ न दाप दल्यो दसकंधर जौलौ बिभीषन लात न मारो ॥३॥

सोक-समुद्र निमज्जत काढि कपीस कियो जग जानत जैसो ।
नीच निसाचर बैरी को बंधु बिभीषन कीन्ह पुरंदर कैसो ॥
नाम लिए अपनाइ लियो तुलसी सो कहौ जग कौन अनैसो ।
आरत-आरति-भंजन राम, गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥४॥

मीत पुनीत कियो कपि भालु को, पाल्यो ज्यों काहु न बाल तनूजो ।
सज्जन-सींव बिभीषन भो, अजहूँ बिलसै बर बंधु-बधू जो ॥
कोसलपाल बिना तुलसी सरनागतपाल कृपालु न दूजो ।
कूर कुजाति कुपूत अघी सब की सुधरै जो करै नर पूजो ॥५॥

तीय-सिरोमनि सीय तजी जेहि पावक की कलुपाई दही है।
धर्म-धुरंधर बंधु तज्यो, पुरलोगनि की बिधि बोलि कही है॥
कीस निसाचर की करनी न सुनी, न बिलोकी, न चित्त रही है।
राम सदा सरनागत की अनखौहीं अनैसी सुभाय सही है॥६॥
अपराध अगाध भए जन ते अपने उर आनत नाहिन जू।
गनिका गज गीध अजामिल के गनि पातक-पुञ्ज सिराहिं न जू॥
लिए बारक नाम सुधाम दियो जिहि धाम महामुनि जाहिं न जू।
तुलसी भजु दीनदयालुहि रे, रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू॥७॥
प्रभु सत्य करी प्रहलाद-गिरा, प्रगटे नरकेहरि खंभ महाँ।
झखराज ग्रस्यो गजराज, कृपा ततकाल, बिलंब कियो न तहाँ॥
सुर साखी दै राखी है पाडुवधू पट लूटत, कोटिक भूप जहाँ।
तुलसी भजु सोच-बिमोचन को, जन को पन राम न राख्यो कहाँ॥८।
नरनारि उघारि सभा महँ होत दियो पट, सोच हरयो मन को।
प्रहलाद-बिषाद-निवारन, बारन-तारन, मीत अकारन को॥
जो कहावत दीनदयालु सही, जेहि भार सदा अपने पन को।
तुलसी तजि आन भरोस भजे भगवान भलो करिहैं जन को॥९॥
ऋषिनारि उधारि, कियो सठ केवट मीत, पुनीत सुकीर्ति लही।
निज लोक दियो सबरी खग को, कपि थाप्यो सो मालुम है सब ही॥
दससीस-बिरोध सभीत बिभीषन भूप कियो जग लीक रही।
करुनानिधि को भजु रे तुलसी, रघुनाथ अनाथ के नाथ सही॥१०॥
कौसिक बिप्रबधू मिथिलाधिप के सब सोच दले पल माहें।
बालि-दसानन बंधु कथा सुनि सत्रु सुसाहिब-सील सराहैं॥

ऐसी अनूप कहैं तुलसी रघुनायक की अगनी गुन-गाहैं।
आरत दीन अनाथन को रघुनाथ करैं निज हाथन छाहैं ॥११॥
तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि, और बेसाहि कै बेचन हारे।
ब्योम रसातल भूमि भरे नृप क्रूर कुसाहिब सेंतिहुँ खारे॥
तुलसी तेहि सेवत कौन मरै? रज ते लघु को करै मेरु ते भारे?।
स्वामी सुसील समर्थ सुजान सो तोसों तुहीं दसरत्थ दुलारे ॥१२॥

घनाक्षरी

जातुधान भालु कपि केवट बिहंग जो जो,
पाल्यो नाथ सद्य सो सो भयो काम-काज को।
आरत अनाथ दीन मलिन सरन आए,
राखे अपनाइ, सो सुभाउ महाराज को॥
नाम तुलसी पै भोंडे भाग, सो कहायो दास,
कियो अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को।
साहेब समर्थ दसरत्थ के दयालु देव
दूसरो न तो सो तुहीं आपने की लाज को ॥१३॥
महाबली बालि दलि, कायर सुकंठ कपि
सखा किये, महाराज हौं न काहू काम को।
भ्रात घात-पातकी निसाचर सरन आए,
कियो अंगीकार नाथ एते बड़े बाम को॥
राय दसरत्थ के समर्थ तेरे नाम लिए,
तुलसी से कूर को कहत जग राम को।
आपने निवाजे की तौ लाज महाराज को
सुभाव समुझत मन मुदित गुलाम को ॥१४॥

रूप-सीलसिंधु गुनसिधु, बंधु दीन को, दयानिधान
जान-मनि, बीर बाहु-बोल को ।
श्राद्ध कियो गीध को, सराहे फल सबरी के,
सिलासाप-समन, निबाह्यो नेह कोल को ॥
तुलसी उराउ होत राम को सुभाव सुनि,
को न बलि जाइ, न बिकाइ बिन मोल को ।
ऐसेहू सुसाहेब सो जाको अनुराग न सो,
बड़ोई अभागो, भाग भागो लोभ-लोल को ॥१५॥

सूर सिरताज महाराजनि के महाराज
जाको नाम लेत ही सुखेत होत ऊसरो ।
साहब कहाँ जहान जानकीस, सो सुजान,
सुमिरे कृपालु के मराल होत खूसरो ॥
केवट पषान जातुधान कपि भालु तारे,
अपनायो तुलसी सो धींग धमधूसरो ।
बोल को अटल बाँह को पगार, दीनबंधु,
दूबरे को दानी, को दयानिधान दूसरो ? ॥१६॥

रीझे को बिसोक लोक लोक पालहू ते सब,
कहूँ कोऊ भो न चरवाहो कपि भालु को ।
पवि को पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम,
बापुरो बिभीषन घरौंधा हुतो बाल को ॥
नाम-ओट लेत ही निखोट होत खोटे खल
चोट बिनु मोट पाइ भयो न निहाल को ।

तुलसी की वार वड़ी ढील होति,सीलसिंधु !
बिगरी सुधारिबे को दूसरो दयालु को ॥१७॥

नाम लिये पूत को पुनीत कियो पातकीस,
आरति निवारी प्रभु पाहि कहे पील की।
छलिन की छौंडी सो निगोडी छोटी जाति पाँति,
कीन्हीं लीन आपु मे सुनारी भोंड़े भील की॥
तुलसीऔ तारिबो बिसारिबो न अंत, मोहि,
नीके है प्रतीति रावरे सुभाव सील की।
देव तौ दयानिकेत, देत दादि दीनन की,
मेरी वार मेरे ही अभाग नाथ ढील की ॥१८॥

आगे परे पाहन कृपा, किरात कोलनी,
कपीस निसिचर अपनाए नाए माथ जू।
साँची सेवकाई हनुमान की सुजान राय,
ऋनियाँ कहाये हौ बिकाने ताके हाथ जू॥
तुलसी से खोटे खरे होत ओट नाम ही की,
तेजी माटी मगहू की मृगमद साथ जू।
बात चले बात को न मानिबो बिलग बलि,
काकी सेवा रीझि कै नेवाजो रघुनाथ जू ॥१९॥

कौसिक की चलत, पषान की परस पायँ,
टूटत धनुष बनि गई है जनक की।
कोल पसु सबरी बिहँग भालु रातिचर,
रतिन के लालचिन प्रापति मनक की॥

कोटि-कला-कुसल कृपालु नतपाल, बलि,
बातहू कितिक तिन तुलसी तनक की।
राय दसरत्थ के समत्थ राम राजमनि,
तेरे हेरे लोपै लिपि बिधिहू गनक की ॥२०।

घनाक्षरी

सिला साप-पाप गुह गीध को मिलाप,
सबरी के पास आप चलि गये हौ सो सुनी मै।
सेवक सराहे कपिनायक विभीषन,
भरत सभा सादर सनेह सुरधुनी मै॥
आलसी-अभागी-अघी-आरत-अनाथ पाल,
साहेब समर्थ एक नीके मन गुनी मै।
दोष दुख दारिद दलैया दीनबंधु राम,
तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनी मै॥२१।
मीत बालि-बंधु, पूत दूत, दसकंध बंधु,
सचिव सराध कियो सबरी जटाइ को।
लंक जरी जोहे जिय सोच जो विभीषन को,
कहौ ऐसे साहेब की सेवा न खटाय को ? ॥
बड़े एक एक ते अनेक लोक लोक पाल,
अपने अपने को तौ कहैगो घटाइ को ?।
साँकरे के सेइबे, सराहिबे सुमिरबे को,
राम सो न साहिब न कुमति-कटाइ को ॥२२।
भूमिपाल, व्यालपाल नाकपाल, लोकपाल,
कारन कृपालु, मै सबै के जी की थाह ली।

कादर को आदर काहू के नाहि देखियत,
सबनि सोहात है सेवा-सुजान टाहली ॥
तुलसी सुभाय कहै नाही कछू पच्छपात,
कौने ईस किये कीस भालु खास माहली ।
राम ही के द्वारे पै बोलाइ सनमानियत,
मोसे दीन दूबरे कुपूत कूर काहली ॥२३॥
सेवा अनुरूप फल देत भूप कूप ज्यो,
बिहूनेगुन पथिक पियासे जात पथ के ।
लेखे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथहित,
नीके देखे देवता देवैया घने गथ के ॥
गीध मानो गुरु, कपि भालु मानो मीत कै,
पुनीत गीत साके सब साहेब समत्थ के ।
और भूप परखि सुलाखि तौलि ताइ लेत,
लसम के खसम तुही पै दसरत्थ के ॥२४॥
रीति महाराज की नेवाजिये जो माँगनो सो,
दोष दुख-दारिद-दरिद्र कै कै छोड़िये ।
नाम जाको कामतरु देत फल चारि, ताहि
तुलसी बिहाइ कै बबूर रेंड गोड़िये ॥
जाँचै को नरेस, देस देस को कलेस करै ?
देहै तौ प्रसन्न ह्वै बड़ी बडाई बौंडिये ।
कृपापाथनाथ लोकनाथ नाथ सीतानाथ,
तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओडिये ? ॥२५।

सवैया

जाके बिलोकत लोकप होत बिसोक, लहै सुरलोग सुठौरहि ।
सो कमला तजि चंचलता करि कोटि कला रिझवै सुरमौरहि ॥
ताको कहाय, कहै तुलसी, तू लजाहि न माँगत कूकुर कौरहि ।
जानकी जीवन को जन ह्वै जरिजाउ सो जीह जो जाँचत औरहि॥२६॥
जड पंच मिलै जेहि देह करी, करनी लखु धौं धरनीधर की ।
जन की कहु क्यों करि है न सँभार, जो सार करै सचराचर की ॥
तुलसी कहु राम समान को आन है सेवकि जासु रमा घर की ।
जग मे गति जाहि जगत्पति की, परवाह है ताहि कहा नरकी ॥२७॥
जग जाँचिये कोऊ न, जाँचिये जौ जिय जाँचिये जानकी-जानहि रे।
जेहि जाँचत जाचकता जरि जाइ जो जारत जोरि जहानहि रे ॥
गति देखु बिचारि बिभीषन की, अरु आनु हिये हनुमानहि रे ।
तुलसी भजु दारिद-दोष दवानल, संकट-कोटि-कृपानहि रे ।।२८॥
सुनु कानि दिये नित नेम लिये रघुनाथहि के गुनगाथहि रे ।
सुख-मंदिर सुंदर रूप सदा उर आनि धरे धनुभाथहि रे ।।
रसना निसि बासर सादर सों तुलसी जप जानकीनाथहि रे ।
करु संग सुसील सुसंतन सो, तजि कूर कुपंथ कुसाथहि रे । २९॥
सुत, दार, अगार, सखा, परिवार बिलोकु महा कुसमाजहि रे ।
सबकी ममता तजिकै, समता सजि संतसभा न बिराजहि रे ॥
नरदेह कहा, कर देखु विचार, बिगारु गँवार न काजहि रे ।
जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों, तुलसी भजु कोसलराजहि रे ॥३०॥
विषया परनारि निसा-तरुनाई, सु पाइ परयो अनुरागहि रे ।
जम के पहरू दुख रोग वियोग बिलोकतहू न बिरागहि रे ॥

ममतावस तें सब भूलि गयो, भयो भोर, महा भय भागहि रे ।
जरठाइ दिसा, रविकाल उग्यो, अजहूँ जन जीव न जागहि रे ॥३१॥
जनम्यो जेहि जोनि अनेक क्रिया सुख लागि करी, न परै बरनी ।
जननी जनकादि हितू भये भूरि, वहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब राम को दास कहाइ हिये धरु चातक की धरनी ।
करि हंस को वेष बड़ो सब सों तजि दे बक बायस की करनी ॥३२॥
भलि भारतभूमि, भले कुल जन्म, समाज सरीर भलो लहि कै ।
करषा तजि कै परुषा बरषा हिम मारुत घाम सदा सहि कै ॥
जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहि कै ।
नतु और सबै विष बीज बये हर-हाटक कामदुहा नहि कै ॥३३॥
सो सुकृती, सुचिमंत, सुसंत, सुजान, सुसील सिरोमनि स्वै ।
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत है ता तन छ्वै ॥
गुनगेह, सनेह को भाजन सो, सब ही सो उठाइ कहौं भुज द्वै ।
सति भाय सदा छल छाँडि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर को ह्वै ॥३४॥
सो जननी, सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि, सो सुत, सो हित मेरो ।
सोई सगो, सो सखा, सोइ सेवक, सो गुरु, सो सुर, साहिब, चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं बनाइ कहौ बहुतेरो ।
जो तजि देह को गेह को नेह सनेह सों राम को होइ सवेरो ॥३५॥
राम हैं मातु पिता गुरु बंधु औ संगी सखा सुत स्वामि सनेही ।
राम की सौंह भरोसो है राम को, रामरँग्यौ रुचि राच्यो न केही ॥
जीयत राम, मुये पुनि राम, सदा रघुनाथहि की गति जेही ।
सोई जिये जगमे तुलसी, नतु डोलत और मुये धरि देही ॥३६॥

सियराम-सरूप अगाध अनूप बिलोचन-मीनन को जलु है।
श्रुति रामकथा,मुख राम को नाम हिये पुनि रामहि को थलु है ॥
मति रामहिं सों,गति रामहिं सो, रति राम सों,रामहि को बलु है।
सब की न कहै, तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फलु है ॥३७॥

दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान-प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं ।
नर नाग सुरासुर जाचक जो तुम सो मनभावत पायो न कै ॥
तुलसी कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयालु सुनै ।
जेहि देह सनेह न रावरे सो अस्मि देह धराइ कै जाय जियै ॥३८॥

'झूठो है, झूठो है, झूठो सदा जग' संत कहत जे अंत लहा हैं ।
ताको सहै सठ संकट कोटिक. काढ़त दंत, करत हहा हैं ॥
जानपनी को गुमान बड़ो, तुलसी के बिचार गँवार महा हैं ।
जानकीजीवन जान न जान्यो तौ जान कहावत जान्यौ कहा है ॥३९॥

तिन्ह ते खर सूकर स्वान भले, जड़ता बस ते न कहै कछु वै ।
तुलसी जेहि राम सों नेह नहीं सो सही पसु पूँछ बिखान न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बाँझ, गई किन च्वै ।
जरि जाउ सो जीवन, जानकिनाथ! जियै जग मे तुम्हरो बिन ह्वै ॥४०॥

गज-बाजि-घटा, भले भूरि भटा, बनिता सुत भौंह तकै सब वै ।
धरनी धन धाम सरीर भलो, सुरलोकहु चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फाटक साटक है तुलसी, अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ।
जरिजाउ सो जीवन, जानकिनाथ! जियै जग मे तुम्हरो बिनु ह्वै ॥४१॥

सुरराज सो राज समाज, समृद्धि बिरंचि, धनाधिप सो धन भो ।
पवमान सो, पावक सो, जम सोम सो, पूषन सो, भवभूषन भो ॥

करि जोग, समीरन साधि, समाधि कै, धीर बडो, बसहू मन मो।
सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकिजीवन को जन भो ॥४२॥

काम से रूप, प्रताप दिनेस से, सोम से सील, गनेस से माने।
हरिचंद से साँचे, बड़े विधि से, मघवा से महीप विषै-सुखसाने ॥
सुक से मुनि, सारद से बकता चिरजीवन लोमस ते अधिकाने।
ऐसे भए तौ कहा तुलसी जु पै राजिवलोचन राम न जाने ॥४३॥

झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जरे मदअंबु चुचाते।
तीखे तुरंग मनोगति चंचल, पौन के गौनहुँ ते बढ़ि जाते ॥
भीतर चद्रमुखी अवलोकति, वाहर भूप खरे न समाते।
ऐसे भए तौ कहा तुलसी जुपै जानकीनाथ के रग न राते ॥४४॥

राज सुरेस पचासक को, विधि के कर को जो पटो लखि पाए।
पूत सुपूत, पुनीत प्रिया निज सुन्दरता रति को मद नाए ॥
संपति सिद्धि सबै तुलसी, मन की मनसा चितवै चित लाए।
जानकिजीवन जाने बिना जग ऐसेऊ जीव न जीव कहाए ॥४५॥

क्रूमगात ललात जो रोटिन को, घरवात घरै खुरपा खरिया।
तिन सोने के मेरु से ढेरु लहे मन तौ न भरा घर पै भरिया ॥
तुलसी दुख दूनो दसा दुहुँ देखि, कियो मुख दारिद को करिया।
तजि आस भो दास रघुप्पति को, दसरत्थ को दानि दया-दरिया ॥४६॥

को भरि है हरि के रितये रितवै पुनि को हरि जो भरिहै।
उथपै तेहि को जेहि राम थपै? थपिहै तेहि को हरि जौ टरिहै ?॥
तुलसी यह जानि हिये अपने सपने नहि कालहु ते डरि है।
कुमया कछु हानि न औरन की जोपै जानकीनाथ मया करिहै ॥४७॥

ब्याल कराल, महाबिष, पावक, मत्तगयंदहु के रद तोरे।
साँसति संकि चली, डरपे हुते किंकर ते करनी मुख मोरे॥
नेकु विषाद नहीं प्रहलादहि, कारन केहरि केवल हो रे।
कौन की त्रास करै तुलसी,जोपै राखिहै राम तौ मारिहै को रे॥४८॥

कृपा जिनकी कछु काज नहीं,न अकाज कछू जिनके मुख मोरे।
करै तिनकी परवाह ते जो बिनु पूँछ विषान फिरै दिन दौरे॥
तुलसी जेहिके रघुनाथ से नाथ, समर्थ सु सेवत रीझत थोरे।
कहा भव-भीर परी तेहि धौं,बिचरै धरनी तिनसों तिन तोरे॥४९॥

कानन, भूधर,वारि, बयारि,महाबिष, ब्याधि, दवा,अरि घेरे।
संकट कोटि जहाँ तुलसी, सुत मातु पिता हित बंधु न नेरे॥
राखिहै राम कृपालु तहाँ, हनुमान से सेवक है जेहि केरे।
नाक रसातल, भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे॥५०॥

जब जमराज रजायसु तें मोहि लै चलिहै भट बाँधि नटैया।
तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु बिसाल विपत्ति बँटैया॥
साँसति घोर, पुकारत आरत, कौन सुनै चहुँ ओर डटैया।
एक कृपालु तहाँ तुलसी दसरत्थ को नंदन बन्दि कटैया॥५१।

जहाँ जमजातना घोर नदी, भट कोटि जलच्चर दंत टवैया।
जहँ धार भयंकर वार न पार, न बोहित नाव, न नीक खेवैया॥
तुलसी जहँ मातु पिता न सखा, नहि कोऊ कहूँ अवलंब देवैया।
तहाँ बिनु कारन राम कृपालु बिसाल भुजा गहि काढि लेवैया॥५२॥

जहाँ हित, स्वामि, न संग सखा, बनिता सुत बंधु न, बापु न, मैया।
काय गिरा मन के जन के अपराध सबै छल छाँड़ि छमैया॥

तुलसी तेहि काल कृपालु बिना दूजो कौन है दारुन दु.ख दमैया।
जहाँ सब सँकट दुर्घट सोच तहाँ मेरो साहब राखै रमैया ॥५३॥

तापस को बरदायक देव, सबै पुनि बैर बढ़ावत बाढ़े।
थोरेहि कोप कृपा पुनि थोरेहि, बैठिकै जोरत तोरत ठाढ़े॥
ठोकि बजाय लखे गजराज, कहाँ लौं कहौं केहिसो रद काढ़े।
आरत के हित नाथ अनाथ के राम सहाय सही दिन गाढ़े॥५४॥

जप जोग, बिराग महामख-साधन, दान, दया, दम कोटि करै।
मुनि सिद्ध सुरेस, गनेस, महेस से सेवत जन्म अनेक मरै॥
निगमागम, ज्ञान पुरान पढ़ै, तपसानल मे जुग-पुंज जरै।
मन सो पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै? ॥५५॥

पातक पीन, कुदारिद दीन मलीन धरे कथरी करवा है।
लोक कहै बिधिहू न लिख्यो सपनेहूँ नही अपने बर बाहै॥
राम को किंकर सो तुलसी समुझेहि भलो कहिबो न रवा है।
ऐसे को ऐसो भयो कबहूँ न भजे बिन, बानर के चरवा है॥५६॥

मातु पिता जग जाय तज्यो, बिधिहू न लिखी कछु भाल भलाई।
नीच, निरादर-भाजन, कादर, कूकर, टूकन लागि ललाई॥
राम-सुभाउ सुन्यो तुलसी, प्रभु सो कह्यो बारक पेट खलाई।
स्वारथ को परमारथ को रघुनाथ सो साहब खोरि न लाई॥५७॥

पाप हरे, परिताप हरे, तन पूजि भो हीतल सीतलताई
हंस कियो बक तें बलि जाउँ कहाँ लौं कहौं करुना अधिकाई॥
काल बिलोकि कहै तुलसी मन मे प्रभु की परतीति अघाई।
जन्म जहाँ तहँ रावरे सो निबहै भरि देह सनेह सगाई॥५८॥

लोग कहै अरु हौं हूँ कहौं 'जन खोटो खरो रघुनायक ही को'।
रावरी राम बड़ी लघुता, जस मेरो भयो सुखदायक ही को॥

कै यह हानि सहौ बलि जाउँ कि मोहूँ करौ निज लायक ही को ।
आनि हिये हित जानि करौ ज्यों हौं ध्यान धरौ धनुसायक ही को ॥५९॥
आपु हौं आपुको नीके कै जानत, रावरो राम ! भरायो गढायो ।
कोर ज्यों नाम रटै तुलसी सो कहै जग जानकीनाथ पढायो ॥
सोई है खेद जो बेद कहै, न घटै जन जो रघुबीर बढायो ।
हौं तौ सदा खर को असवार, तिहारोई नाम गयद चढ़ायो ॥६०॥

घनाक्षरी

छार ते सँवारिकै पहार हू ते भारो कियो
गारो भयो पच मे पुनीत पच्छ पाइकै ।
हौं तौ जैसो तब तैसो अब, अधमाई कै कै
पेट भरौं राम रावरोई गुन गाइकै ॥
आपने निवाजे की पै कीजै लाज, महाराज !
मेरी ओर हेरिकै न बैठिए रिसाइकै ।
पालिकै कृपालु ब्याल-बाल को न मारिए
औ काटिए न, नाथ ! विषहू को रूख लाइकै ॥६१॥
बेद न पुरान गान, जानौ न विज्ञान ज्ञान,
ध्यान, धारना, समाधि साधन-प्रवीनता ।
नाहिंन बिराग, जोग, जाग भाग तुलसी के,
दया-दान-दूबरो हौं पाप ही की पीनता ॥
लोभ-मोह-काम-कोह-दोषकोप मोसो कौन ?
कलि हू जो सीखि लई मेरियै मलीनता ।
एक ही भरोसो राम रावरो कहावत हौं,
रावरे दयालु दीनबंधु, मेरी दीनता ॥६२॥

रावरोकहावौं, गुन गावौं राम रावरोई
रोटी द्वै हौं पावौं राम रावरी ही कानि हौं।
जानत जहान, मन मेरे हू गुमान बड़ो,
मान्यो मैं न दूसरो, न मानत न मानिहौं॥
पाँच की प्रतीति न, भरोसो मोहि आपनोई
तुम अपनायो हौं तबैही परि जानिहौं।
गढ़ि गुढ़ि, छोलि छालि कुन्द की सी भाई बातें
जैसी मुख कहौं तैसी जीय जब आनिहौं॥६३॥

बचन बिकार करतबउ खुआर मन,
बिगत बिचार कलिमल को निधानु है।
राम को कहाइ, नाम बेचि बेचि खाइ, सेवा
सगति न जाइ पाछिले को उपखानु हैं॥
तेहू तुलसी को लोग भलो भलो कहै ताको
दूसरो न हेतु, एक नीके कै निदानु है।
लोकरीति विदित बिलोकियत जहाँ तहाँ
स्वामी के सनेह स्वान हू को सनमानु है॥६४॥

स्वारथ को साज न समाज परमारथ को,
मोसो दगाबाज दूसरो न जगजाल है।
कै न आयो, करौं न करौंगो करतूति भली
लिखी न बिरंचि हू भलाई भूलि भाल है॥
रावरी सपथ, राम! नाम ही की गति मेरे
इहाँ झूठो-झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है।

तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये,कृपालु !
कीजै न बिलंब, बलि, पानीभरी खाल है ॥६५॥

राग को न साज न विराग जोग जाग जिय,
काया नहि छाँडि देत ठाटिबो कुठाट को।
मनोराज करत अकाज भयो आजु लगि,
चाहै चारु चीर पै लहै न टूक टाट को॥
भयो करतार बडे कूर को कृपालु पायो
नाम प्रेम-पारस हौ लालची बराट को।
तुलसी बनी है राम रावरे बनाए, ना तौ,
धोबी कैसो कूकर न घर को न घाट को ॥६६॥

ऊँचो मन, ऊँची रुचि, भाग नीचो निपट ही
लोकरीति-लायक न लगर लबारु है।
स्वारथ अगम, परमारथ की कहा चली,
पेट की कठिन, जग जीव को जवारु है॥
चाकरी न आकरी न खेती न बनिज भीख
जानत न कूर कछु किसब कबारु है।
तुलसी की बाजी राखी राम ही के नाम नतु
भेंट पितरन को न मूड़ हू मे बारु है॥६७॥

अपत उतार, अपकार को अगार जग,
जाकी छाँह छुए सहमत ब्याध बाध को।
पातक पुहुमि पालिबे को सहसानन सो,
कानन कपट को पयोधि अपराध को॥

तुलसी से बाम को भो दाहिनो दयानिधान
सुनत सिहात सब सिद्ध साधु साधको ।
रामनाम ललित ललाम कियो लाखनि को
बड़ो कूर कायर कपूत कौडी आध को ॥६८॥

सब-अग-हीन, सब-साधन-विहीन, मन
बचन मलीन, हीन कुल करतूति हौं ।
बुधि-बल हीन भाव-भगति-विहीन, हीन
गुन, ज्ञान हीन, हीन भाग हू विभूति हौं ॥
तुलसी गरीब की गई बहोरी रामनाम,
जाहि जपि जीह राम हू को बैठो धूति हौं ।
प्रीति रामनाम सों, प्रतीति रामनाम की,
प्रसाद रामनाम के पसारि पायँ सूतिहौं ॥६९॥

मेरे जान जब तें हौं जीव ह्वै जनम्यो जग,
तब तें बेसाह्यो दाम लोह कोह काम को ।
मन तिनहीं की सेवा,तिनही सो भाव नीको,
वचन बनाइ कहौं 'हौं गुलाम राम को' ॥
नाथहू न अपनायो, लोक भूठी ह्वै परी, पै
प्रभु हू ते प्रबल प्रताप प्रभु नाम को ।
आपनी भलाई भलो कीजै तौ भलोई न तौ
तुलसी को खुलैगो खजानो खोटे दाम को ॥७०॥

जोग न विराग जप जाग तप त्याग व्रत,
तीरथ न धर्म जानौ वेदविधि किमि है ।

तुलसी सो पोच न भयो है, नहि ह्वैहै कहूँ,
मोचैं सब याके अघ कैसे प्रभु छमिहै ॥
मेरे तौ न डरु रघुबीर सुनो साँची कहौ
खल अनखैहैं, तुम्हे सज्जन न गमिहै ।
भले सुकृती के संग मोहिं तुला तौलिये तौ
नाम के प्रसाद भार मेरी ओर नमिहै ॥७१॥

जाति के, सुजाति के, कुजाति के, पेटागिबस
खाए टूक सबके बिदित बात दुनी सो ।
मानस बचन काय किए पाप सति भाय
राम को कहाय दास दगाबाज पुनी सो ॥
रामनाम को प्रभाउ, पाउ महिमा प्रताप
तुलसी से जग मानियत महामुनी सो ।
अतिही अभागो अनुरागत न रामपद
मूढ़ एतो बडो अचरज देखि सुनी सो ॥७२॥

जायो कुल मंगन, बधावनो बजायो सुनि,
भयो परिताप पाप जननी जनक को ।
बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार दीन
जानत हो चारि फल चारि ही चनक को ॥
तुलसी सो साहिब समर्थ को सुसेवक है
सुनत सिहात सोच बिधिहू गनक को ।
नाम, राम ! रावरो सयानो किधौं बावरो
जो करत गिरी तें गरु तृन ते तनक को ॥७३॥

बेद हू पुरान कही, लोकहू बिलोकियत,
रामनाम ही सों रीझे सकल भलाई है।
कासी हू मरत उपदेसत महेस सोई,
साधना अनेक चितई न चित लाई है॥
छाछी को ललात जे ते राम-नाम के प्रसाद
खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है।
रामराज सुनियत राजनीति की अवधि,
नाम राम ! रावरो तौ चाम की चलाई है॥७४॥

सोच सकटनि सोच संकट परत, जर
जरत, प्रभाव नाम ललित ललाम को।
बूडियौ तरति, बिगरीयौ सुधरति बात,
होत देखि दाहिनो सुभाव बिधि बाम को॥
भागत अभाग, अनुरागत बिराग, भाग
जागत, आलसि तुलसी हू से निकाम को।
धाई धारि फिरि कै गोहारि हितकारी होति
आई मीचु मिटति जपत रामनाम को॥७५॥

आँधरो अधम, जड जाजरो जरा जवन,
सूकर के सावक ढका ढकेल्यो मग में।
गिरो हिये हहरि, 'हराम हो हराम हन्यो'
हाय हाय करत परीगो कालफँग में॥
तुलसी बिसोक ह्वै त्रिलोकपति-लोक गयो
नाम के प्रताप, बात बिदित है जग में।

सोई रामनाम जो सनेह सो जपत जन
　　ताकी महिमा क्यों कही है जाति अगमे ॥७६॥

जापको न, तप खप कियो न तमाइ जोग,
　　जाग न विराग त्याग तीरथ न तनको।
भाई को भरोसो न खरो सो बैर बैरीहू सों
　　बल अपनो न हितू जननी न जनको॥
लोक को न डर, परलोक को न सोच,
　　देवसेवा न सहाय गर्व धाम को न धन को।
रामही के नाम ते जो होइ सोई नीको लागै,
　　ऐसोई सुभाव कछु तुलसी के मनको ॥७७॥

ईस न गनेस न दिनेस न धनेस न
　　सुरेस सुर गौरि गिरापति नहि जपने।
तुम्हरेई नाम को भरोसो भव तरिबे को,
　　बैठे उठे जागत बागत सोए सपने॥
तुलसी है बावरो सो रावरोई, रावरी सौं
　　रावरेउ जानि जिय कीजिये जु अपने।
जानकी-रमन मेरे ! रावरे बदन फेरे,
　　ठाउँ न समाउँ कहाँ सकल निरपने ॥७८॥

जाहिर जहान मे जमानो एक भाँति भयो
　　बेचिये बिबुधधेनु रासभी बेसाहिए।
ऐसेऊ कराल कलिकाल मे कृपालु तेरे
　　नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिए॥

तुलसी तिहारो मन वचन करम तेहि
नाते नेह-नेम निज ओर ते निबाहिए।
रंक के निवाज रघुराज राजा राजनि के
उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये ॥७९॥

स्वारथ सयानप, प्रपंच परमारथ,
कहायो राम रावरो हौ, जानत जहानु है।
नाम के प्रताप, बाप ! आजु लौं निबाही नीके,
आगे को गोसाईं स्वामी सबल सुजान है॥
कलि की कुचालि देखि दिन दिन दूनी देव !
पाहरूई चोर हेरि हिय हहरानु है।
तुलसी की, बलि, बार बार ही सभार कीनी,
जद्यपि कृपानिधान सदा सावधानु है ॥८०॥

दिन दिन दूनो देखि दारिद दुकाल दुःख
दुरित दुराज, सुख सुकृत सकोचु है।
माँगे पैत पावत प्रचारि पातकी प्रचंड,
काल की करालता भले को होत पोचु है॥
आपने तो एक अवलंब अंब डिंभ ज्यो
समर्थ सीतानाथ सब संकट-विमोचु है।
तुलसी की साहसी सराहिये कृपालु राम !
नाम के भरोसे परिनाम को निसोचु है ॥८१॥

मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि वेद लोक-लाज आँकरो अचेतु है।

भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहि, सरकस हेतु है ॥
तुलसी अधिक अधमाई हू अजामिल ते,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है ।
जैबे को अनेकटेक एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रामनाम लेतु है ॥८२॥

जागिए न सोइए बिगोइए जनम जाय,
दुख रोग रोइए कलेस कोह काम को ।
राजा रंक रागी औ बिरागी, भूरि भागी ये
अभागी जीव जरत प्रभाव कलि बाम को ॥
तुलसी कबंध कैसो धाइबो बिचारु, अंध
धुंध देखियत जग सोच परिनाम को ।
सोइबो जो राम के सनेह की समाधि सुख,
जागिबो जो जीह जपै नीके रामनाम को ॥८३॥

बरन-धरम गयो आस्रम निवास तज्यो,
त्रासन चकित सो परावनो परो सो है ।
करम उपासना कुबासना बिनास्यो, ज्ञान
बचन, बिराग बेष जगत हरो सो है ॥
गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग,
निगम नियोग ते सो केलि ही छरो सो है ।
काय मन बचन सुभाय तुलसी है जाहि
रामनाम को भरोसो ताहि को भरोसो है ॥८४॥

सवैया

बेद पुरान बिहाइ सुपथ कुमारग कोटि कुचाल चली है।
काल कराल नृपाल कृपालन राजसमाज बडोई छली है॥
बर्न बिभाग न आस्रम-धर्म, दुनी दुख-दोष-दरिद्र दली है।
स्वारथ को परमारथ को कलि राम को नाम-प्रताप बली है॥८५॥

न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि मे न बिराग न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ-जटो॥
नट ज्यो जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिये तौ रसना निसि बासर राम रटो॥८६॥

दम दुर्गम दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धन को।
तप तीरथ साधन जोग बिराग सो होइ नहीं दृढ़ता तन को॥
कलिकाल कराल मे, राम कृपालु! यहै अवलंब बडो मन को।
तुलसी सब संजमहीन सबै, इक नाम अधार सदा जन को॥८७॥

पाइ सुदेह बिमोह-नदी तरनी न लही करनी न कछू की।
रामकथा बरनी न बनाइ, सुनी न कथा प्रह्लाद न ध्रू की॥
अब जोर जरा जरि गात गयो मन मानि गलानि कुबानि न मूकी।
नीके कै ठीक दई तुलसी, अवलंब बडी उर आखर दू की॥८८॥

राम बिहाय मरा' जपते बिगरी सुधरी कबि कोकिल हू की।
नामहि ते गज की, गनिका की, अजामिल की चलि गै चल-चूकी॥
नाम-प्रताप बडे कुसमाज बजाइ रही पति पांडुबधू की।
ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दू की॥८९॥

नाम अजामिल से खल तारन, तारन बारन बारबधू को।
नाम हरे प्रह्लाद बिपाद, पिता भय साँसति सागर सूको॥

नाम सों प्रीति-प्रतीति विहीन गिल्यो कलिकाल कराल न चूको।
राखिहै राम सो जासु हिये तुलसी हुलसै बल आखर दू को ॥९०॥

जीव जहान में जायो जहाँ सो तहाँ तुलसी तिहुँ दाह दहो है।
दोस न काहू कियो अपनो सपनेहु नहीं सुख लेस लहो है ॥
राम के नाम ते होउ सो होउ न सोउ हिये, रसना ही कहो है।
कियो न कछू करिबो न कछू, कहिबो न कछू मरिबोइ रहो है ॥९१॥

जो जैं न ठाँउ न आपन गाँउ, सुरालयहू को सबल मेरे।
नाम रटो, जमत्रास क्यों जाँउ को आइ सकै जम किंकर नेरे?।
तुम्हरो सब भाँति तुम्हारियसों तुम्हही, बलि, हौं मो को ठाहरु हेरे।
बैरष बाँह बसाइए पै, तुलसी घरु व्याध अजामिल खेरे ॥९२॥

काकियो जोग अजामिल जू, गनिका कबहीं मति पेम पगाई?।
व्याध को साधुपनो कहिए अपराध अगाधनि में ही जनाई ॥
करुनाकर की करुना करुना हित नाम-सुहेत जो देत दगाई।
काहे को खीझिए? रीझिए पै तुलसीहु सों है बलि सोइ सगाई ॥९३॥

जे मद मार विकार भरे ते अचार विचार समीप न जाहीं।
है अभिमान तऊ मनमें 'जन भाषि है दूसरे दीनन पाहीं'? ॥
जो कछु बात बनाइ कहौ तुलसी तुम में तुमहूँ उर माहीं।
जानकी-जीवन जानत हौ हम हैं तुम्हरे, तुम में, सक नाहीं ॥९४॥

दानव देव अहीस महीस महा मुनि तापस सिद्ध समाजी।
जग जाचक दानि दुतीय नहीं तुमही सब की सब राखत बाजी।
एते बडे तुलसीस तऊ सबरी के दिए बिनु भूख न भाजी।
राम गरीबनेवाज! भये हौ गरीबनेवाज गरीब नेवाजी ॥९५॥

भागीरथी जलपान करौं अरु नाम द्वै राम के लेत, नितै हौं।
मोको न लेनो न देनो कछू कलि भूलि न रावरी ओर चितै हौं॥
जानिकै जोर करौ परिनाम तुम्हैं पछितैहौ पै मैं न भितैहौं।
ब्राह्मन ज्यों उगिल्यो उरगारि हौं त्योंही तिहारे हिये न हितैहौं॥१०२॥

राजमराल के बालक पेलि कै, पालत लालत खूसर को।
सुचि सुंदर सालि सकेलि सुवारि कै बीज बटोरत ऊसर को॥
गुन ज्ञान-गुमान भँभेरि बड़ो, कलपद्रुम काटत मूसर को।
कलिकाल बिचार अचार हरो नहिं सूझ कछू धमधूसर को॥१०३॥

कीबे कहा पढ़िबे को कहा फल बूझि न बेद को भेद बिचारैं।
स्वारथ को परमारथ को कलि कामद राम को नाम बिसारैं॥
बाद बिबाद बिषाद बढ़ाइ कै छाती पराई औ आपनी जारैं।
चारिहु को छहु को नव को दस आठ को पाठ कुकाठ ज्यों फारैं॥१०४॥

आगम बेद पुरान बखानत, मारग कोटिन जाहि न जाने।
जे मुनि ते पुनि आपुहि आपु को ईस कहावत सिद्ध सयाने॥
धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप जोग बिराग लै जीव पराने।
को करि सोच मरै, तुलसी, हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने॥१०५॥

धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगारौं न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो मसीत को सोइबो, लैबे को एक न दैबे को दोऊ॥१०६॥

घनाक्षरी

मेरे जाति पाँति, न चहौ काहू की जाति पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौ काहू के काम को।

लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,

भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को ॥

अति ही अयाने उपखानो नहि बूझै लोग,

'साह ही को गोत गोत होत है गुलाम को' ।

साधु के असाधु कै भलो कै पोच सोच कहा,

का काहू के द्वार परौं, जो हौं सो हौं राम को ॥१०७

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बडो,

कोऊ कहै राम को गुलाम खरो खब है ।

साधु जानै महा साधु, खल जानैं महा खल,

बानी झूँठी साँची कोटि उठत हबूब है ॥

चहत न काहू सो न कहत काहू की कछु

सब की सहत उर अंतर न ऊब है ।

तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के,

राम की भगति भूमि, मेरी मति दूब है ॥१०८॥

जागैं जोगी जंगम, जती जमाती ध्यान धरे,

डर उर भारी लोभ मोह कोह काम के ।

जागै राजा राज काज, सेवक समाज साज

सोचै सुनि समाचार बडे बैरी बाम के ॥

जागै बुध विद्याहित पंडित चकित चित,

जागै लोभी लालच धरनि धन धाम के ।

जागैं भोगी भोगही, वियोगी रोगी सोगबस

सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के ॥१०९॥

छप्पय

राम मातु पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम हित।
साहेब सखा सहाय नेह नाते पुनीत चित॥
देस कोस कुल कर्म धर्म धन धाम धरनि गति।
जाति पाँति सब भाँति लागि रामहि हमारि पति॥
परमारथ स्वारथ सुजस सुलभ राम ते सकल फल।
कह तुलसिदास अब जब कबहुँ एक राम ते मोर भल॥११०॥

महाराज बलि जाउँ रामसेवक सुखदायक।
महराज बलि जाउँ राम सुन्दर सब लायक॥
महाराज बलि जाउँ राम सब संकट-मोचन।
महाराज बलि जाउँ राम राजीव-बिलोचन॥
बलि जाउँ राम करुनायतन प्रनतपाल पातकहरन।
बलि जाउँ राम कलि-भय बिकल तुलसीदास राखिय सरन॥१११॥

जय ताड़का सुबाहु-मथन, मारीच-मानहर।
मुनिमख रच्छन-दच्छ, सिलातारन करुनाकर॥
नृपगन-बलमदसहित सभु कोदंड-बिहंडन।
जय कुठारधर दर्पदलन, दिनकरकुल-मंडन॥
जय जनक नगर-आनन्दप्रद, सुखसागर सुखमाभवन।
कह तुलसीदास सुर-मुकुट मनि जय जय जय जानकिरमन॥११२॥

जय जयत जयकर, अनंत, सज्जनजनरंजन।
जय बिराध-बध-बिदुष, बिबुध-मुनिगन-भयभंजन॥
जय निसिचरी-बिरूप-करन रघुबंस बिभूषन।
सुभट चतुर्दस-सहस-दलन त्रिसिरा खर दूषन॥

जय दंडकवन पावन करन तुलसिदास संसय समन
जगविदित जगतमनि जयति जय जय जय जय जानकिरमन ॥११३॥

जय मायामृगमथन गीध-सबरी-उद्धारन ।
जय कबंधसूदन बिसाल-तरुताल-बिदारन ॥
दवन बालि बलसालि, थपन सुग्रीव संतहित ।
कपि-कराल-भट भालुकटक-पालन, कृपालु-चित ॥
जय सियबियोग-दुखहेतु कृत-सेतुबंध बारिधि-दमन ।
दससीस बिभीषन अभयप्रद जय जय जय जानकिरमन ॥११४॥

कनककुधर-केदार, बीज सुंदर सुरमनिवर ।
सींचि कामधुक धेनु सुधामय पय बिसुद्धतर ॥
तीरथपति अंकुर-सरूप, यच्छेस रच्छ तेहि ।
मरकतमय साखा, सुपत्र मञ्जरिय लच्छ जेहि ॥
कैवल्य सकल फल कल्पतरु सुभ सुभाव सब सुख बरिस ।
कह तुलसीदास रघुबसमनि तौ कि होहि तुव कर सरिस ? ॥११५॥

जाय सो सुभट समर्थ पाइ रन रारि न मंडै ।
जाय सो जती कहाय विषय वासना न छंडै ॥
जाय धनिक बिनु दान, जाय निर्धन बिनु धर्महि ।
जाय सो पंडित पढ़ि पुरान जो रत न सुकर्महि ॥
सुत जाय मातु पितु-भक्ति बिनु, तिय सो जाइ जेहि पति न हित ।
सब जाय दास तुलसी कहै जौ न रामपद नेह नित ॥११६॥

को न क्रोध निरदह्यो, काम बस केहि नहिं कीन्हो ? ।
को न लोभ दृढ़ फंद बाँधि त्रासन करि दीन्हो ? ॥

कौन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारि नयन सर ?।
लोचनजुत नहिं अंध भयो श्री पाय कौन नर ? ॥
सुर-नाग लोक महिमडलहु को जु मोह कीन्हों जय न ?।
कह तुलसिदास सो ऊबरै जेहि राख राम राजिवनयन ॥११७॥

सवैया

भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि-विलोकनि-बान ते बाँचे।
कोप-कृसानु गुमान-अवाँ घट ज्यों जिनके मन आँच न आँचे॥
लोभ सबै नट के बस ह्वै कपि ज्यों जग मे बहु नाच न नाँचे।
नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीर के सेवक साँचे ॥११८॥

कवित्त

भेष सु बनाइ, सुचि बचन कहैं चुवाइ,
जाइ तौ न जरनि धरनि धन धाम की।
कोटिक उपाय करि लालि पालियत देह,
मुख कहियत गति राम ही के नाम की ॥
प्रगटै उपासना दुरावै दुरबासनाहिं,
मानस निवास-भूमि लोभ मोह काम की।
राग रोष ईरषा कपट कुटिलाई भरे
तुलसी से भगत भगति चहैं राम की ! ॥११९॥
'काल्हि ही तरुन तन, काल्हि ही धरनि धन,
काल्हि ही जितौगो रन कहत कुचालि है।
काल्हि ही साधौगो काज, काल्हि ही राजा समाज,"
मसक ह्वै कहै "भार मेरे मेरु हालि है" ॥

तुलसी यही कुभाँति घने घर घालि आई,
घने घर घालति है, घने घर घालि है।
देखत सुनत समुझत हू न सूझै सोई,
कबहूँ कह्यो न कालहू को काल कालि है' ॥१२०॥
भयो न तिकाल तिहूँ लोक तुलसी सो मन्द,
निंदै सब साधु सुनि मानौ न सकोचु हौ।
जानत न जोग हिय हानि मानौं, जानकीस!
काहे को परेखो पातकी प्रपची पोचु हौ॥
पेट भरिबे के काज महाराज को कहायो,
महाराज हू कह्यो है प्रनत-बिमोचु हौ।
निज अघ जाल, कलिकाल की करालता,
बिलोकि होत व्याकुल, करत सोई सोचु हौ॥१२१॥
धरम के सेतु जगमगल के हेतु,
भूमि भार हरिबे को अवतार लियो नर को।
नीति औ प्रतीति-प्रीति-पाल चालि प्रभु मान,
लोक वेद राखिबे को पन रघुवर को॥
बानर बिभीषन की ओर के कनावडे है,
सो प्रसग सुने अग जरै अनुचर को।
राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि,
तुलसी तिहारो घरजाय है घर को॥१२२॥
नाम महाराज के निबाह नीको कीजै उर,
सबही सोहात, मैं न लोगनि सोहात हौ।

कीजे राम बार यह मेरी ओर चखकोर
नाहि लगि रक ज्यों सनेह को ललात हौं ॥
तुलसी बिलोकि कलिकाल की करालता,
कृपालु को सुभाव समुझत सकुचात हौं।
लोक एक भाँति को, तिलोकनाथ लोकबस,
आपनो न सोच स्वामी सोचही सुखात हौं ॥१२३॥
तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लबार
बार बार, लालच धरनि धन धाम को।
तब लौं बियोग रोग सोग भोग जातना को,
जुग सम लगत जीवन जाम जाम को ॥
तौ लौं दुख दारिद दहत अति नित तनु,
तुलसी है किंकर बिमोह कोह काम को।
सब दुख आपने, निरापने सकल सुख,
जौलों जन भयो न बजाइ राजा राम को ॥१२४॥
तब लौं मलीन हीन दीन, सुख सपने न,
जहाँ तहाँ दुखी जन भाजन कलेस को।
तबलौं उबैने पायँ फिरत पेटै खलाय,
बाये मुँह सहत पराभौ देस देस को ॥
तब लौं दयावनो दुसह दुख दारिद को,
साथरी को सोइबो, ओढिबो झूने खेस को।
जब लौं न भजै जीह जानकी-जीवन राम,
राजन को राजा सो तौ साहेब महेस को ॥१२५॥

ईसन के ईस, महाराजन के महाराज,
देवन के देव, देव ! प्रानहू के प्रान हौ।
कालहू के काल, महाभूतन के महाभूत,
कर्म हू के करम, निदान के निदान हौ।
निगम को अगम, सुगम तुलसीहू से को
एते मान सीलसिन्धु करुनानिधान हौ।
महिमा अपार काहू बोल को न वारापार,
बडी साहिबी में नाथ बडे सावधान हौ ॥१२६

सवैया

आरतपालु कृपालु जो राम, जेही सुमिरे तेहि को तहँ ठाढ़े।
नाम प्रताप महा महिमा, अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े॥
सेवक एक ते एक अनेक भए तुलसी तिहुँ ताप न डाढे।
प्रेम बदौ प्रह्लादहि को जिन पाहन त परमेस्वर काढ़े ॥१२७
काढि कृपान,कृपा न कहूँ, पितु काल कराल बिलोकि न भागे।
'राम कहाँ'?'सब ठाँउ है''खंभमें?''हाँ'सुनिहाँक नृकेहरि जागे॥
बैरी बिदारि भए बिकराल, कहे प्रह्लादहि के अनुरागे।
प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तब त सब पाहन पूजन लागे ॥१२८।
अंतर्जामिहु तें वड़ बाहरजामि हैं राम जे नाम लिये तें।
धावत धेनु पन्हाइ लवाइ ज्यो बालक बोलनि कान किये ते॥
आपनि बूझि कहै तुलसी, कहिबे की न बावरि बात बिये ते।
पैज परे प्रह्लादहु को प्रगटे प्रभु पाहन ते. न हिये ते ॥१२९
बालक बोलि दियो बलि कालको, कायर कोटि कुचाल चलाई।
पापी है बाप बडे परिताप तें आपनी ओर ते खोरि न लाई॥

भूरि दई बिषमूरि भई प्रहलाद सुधाईं सुधा की मलाई।
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भले को भलाई भलाई ॥१३०॥
कंस करी ब्रजबासिन सो करतूति कुभाँति चली न चलाई।
पाँडु के पूत सपूत, कुपूत सुजोधन भो कलि छोटो छलाई॥
कान्ह कृपालु बड़े नतपालु, गए खल खेचर खीम खलाई।
ठीक प्रतीति कहै तुलसी जग होइ भले को भलाई भलाई ॥१३१॥
अवनीस अनेक भए अवनी जिनके डरतें सुर सोच सुखाहीं।
मानव दानव देव-सतावन रावन घाट रच्यो जग माहीं॥
ते मिलये धरि धूरि सुजोधन जे चलते बहु छत्र की छाँहीं।
वेद पुरान कहै, जग जान, गुमान गोबिंदहि भावत नाहीं ॥१३२॥
जब नयनन प्रीति ठई ठग स्यामसों स्यानी सखी हठिहौं बरजी।
नहि जान्यो बियोग सो रोग है आगे झुकी तब हौं तेहि सो तरजी।
अब देह भई पट नेह के घाले सों, ब्योंत करै बिरहा दरजी।
ब्रजराजकुमार बिना सुनु भृंग! अनंग भयो जियको गरजी।१३३॥
जोगकथा पठई ब्रजको सबसों सठ चेरी की चाल चलाकी।
ऊधोजू! क्यो न कहै कुबरी जो बरी नट नागर हेरि हलाकी॥
जाहि लगै पर जानै सोई, तुलसी सो सुहागिनि नंदलला की।
जानी है जानपनी हरिकी, अब बाँधियैगी कछु मोटि कलाकी ॥१३४॥

कवित्त

पठयो है छपद छबीले कान्ह कैहूँ कहूँ,
खोजिकै खवास खासो कूबरी सी बालको।
ज्ञानको गढैया, बिनु गिरा को पढैया बार
ग्वाल को कढैया औ बढैया उरसाल को।

प्रीति को बधिक, रसरीति को अधिक नीति-

निपुन, बिबेक है -निदेस देसकाल को ।

तुलसी कहे न बनै, सहेही बनैगी सब,

जोग भयो जोग को बियोग नदलाल को ॥१३५॥

हनूमान ह्वै कृपालु, लाडिले लषन लाल,

भावते भरत कीजै सेवक सहाय जू ।

बिनती करत दीन दूबरो दयावनो सो,

बिगरे ते आपही सुधारि लीजै माय जू ॥

मेरी साहिबिनि सदा सीस पर बिलसति,

देवि ! क्यो न दास को देखाइयत पॉय जू ।

खीभहू मे रीझबे की बानि, राम रीझत है,

रीझे ह्वै है राम की दुहाई रघुराय जू ॥१३६॥

सवैया

बेप विराग को राग भरो मनु माय ! कहौ सतिभाव हौ तोसो ।

तेरे ही नाथ को नाम लै बेचिहौ, पातकी पामर प्राननि पोसो ॥

एते बड़े अपराधी अघी कहुँ, तै कहु अंब को मेरो तु मोसों ।

स्वारथ को परमारथ को परिपूरन भो फिरि घाटि न होसों॥१३७॥

घनाक्षरी

जहाँ वालमीकि भए व्याध ते मुनींद्र साधु,

'मरा मरा' जपे सुनि सिप ऋषि सात की ।

सीय को निवास लव-कुश को जनम-थल,

तुलसी छुवत छाँह ताप गरै गात की ॥

बिटप महीप सुरसरित समीप सोहै,
सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी।
बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि,
अंकित जो जानकी चरन जलजात की ॥१३८॥

मरकत बरन परन, फल मानिक से,
लसै जटाजूट जनु रूख बेष हरु है।
सुखमा को ढेरु कैधौ सुकृत सुमेरु कैधौं,
सम्पदा सकल मुद मंगल को घरु है॥
देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइए,
प्रतीति मानि तुलसी बिचारि काको थरु है।
सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै,
रामरमनी को बट कलि कामतरु है॥ १३९॥

देवधुनी पास मुनिबास श्रीनिवास जहाँ,
प्राकृत हूँ बट बूट बसत पुरारि है।
जोग जप जाग को बिराग को पुनीत पीठ,
रागिन पै सीठि, डीठि बाहरी निहारि हैं॥
'आयसु' 'आदेस' 'बाबा' 'भलो भलो' 'भाव सिद्ध',
तुलसी बिचारि जोगी कहत पुकारि हैं।
रामभगतन को तौ कामतरु ते अधिक,
सियबट सेए करतल फल चारि हैं॥१४०॥

जहाँ बन पावनो सुहावने बिहंग मृग,
देखि अति लागत अनंद खेत खूँट सो।

सीताराम-लखन-निवास, बास मुनिन को,
सिद्ध साधु साधक सबै विवेक बूट सो ॥
भरना भरत भारि सीतल पुनीत बारि,
मंदाकिनी मजुल महेस जटाजूट सो ।
तुलसी जौ राम सो सनेह साँचो चाहिए
तौ सेइए सनेह सो विचित्र चित्रकूट सो ॥१४१॥
मोह-बन कलिमल-पल-पीन जानि जिय,
साधु गाय विप्रन के भय को नेवारि है ।
दीन्ही है रजाइ राम पाइ सो सहाइ लाल,
लषन समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है ॥
मंदाकिनी मंजुल कमान असि, बान जहाँ,
बारि धार धीर धरि सुकर सुधारि है ।
चित्रकूट अचल अहेरि बैठ्यो घात मानो,
पातक के ब्रात घोर सावज सँहारि है ॥१४२॥

सवैया

लागि दवारि पहार ठही लहकी कपिलंक जथा खर-खौकी ।
चारु चुवा चहुँ ओर चलै, लपटै झपटैं सो तमीचर तौकी ॥
क्यों कहि जात महा सुखमा, उपमा तकि ताकत है कवि कौ की ।
मानो लसी तुलसी हनुमान हिये जगजीति जराय की चौकी ॥१४३॥
देव कहैं अपनी अपनी अवलोकन तीरथराज चलो रे ।
देखि मिटै अपराध अगाध निमज्जत साधु समाज भलो रे ॥
सोहै सितासित को मिलिबो तुलसी हुलसै हिय हेरि हलोरे ।
मानो हरे तृन चारु चरै बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे ॥१४४॥

देवनदी कहँ जो जन जान किये मनसा कुल कोटि उधारे।
देखि चले झगरै सुरनारि, सुरेस बनाइ बिमान सँवारे॥
पूजा को साज बिरंचि रचै तुलसी जे महातम जाननहारे।
ओक की नींव परी हरिलोक बिलोकत गंग तरंग तिहारे॥१४५॥

ब्रह्म जो व्यापक बेद कहैं, गम नाहि गिरा गुनज्ञान गुनी को।
जो करता भरता हरता सुर साहिब, साहिब दीन दुनी को॥
सोई भयो द्रव रूप सही जु है नाथ बिरंचि महेस मुनी को।
मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देवधुनी को? ॥१४६॥

बारि तिहारो निहारि मुरारि भए परसे पद पाप लहौंगो।
ईस ह्वै सीस धरौ पै डरौं, प्रभु की समता बड़ दोष दहौंगो॥
बरु बारहि बार सरीर धरौं, रघुबीर को ह्वै तव तीर रहौंगो।
भागीरथी! बिनवौं करजोरि, बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो॥१४७॥

कवित्त

लालची ललात बिललात द्वार द्वार दीन
बदन मलीन, मन मिटै न बिसूरना।
ताकत सराध कै बिवाह कै उछाह कछू,
डोलै लोल बूझत सबत ढोल तूरना॥
प्यासे हू न पावै बारि, भूखे न चनक चारि,
चाहत अहारन पहार दारि कूरना।
सोक को अगार दुख-भार-भरो तौलौ जन,
जौलौ देवी द्रवै न भवानी अन्नपूरना॥१४८॥

छप्पय

भस्म अंग मर्दन अनंग संतत असंग हर।
सीस गंग, गिरिजा अर्धंग भूषन भुजगवर॥
मुण्ड माल, विधु बाल भाल, डमरू कपाल कर।
विबुध-वृन्द-नवकुमुद-चन्द सुखकन्द मूलधर॥
त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग्बसन बिष-भोजन भव-भय हरन।
कह तुलसिदास सेवत सुलभ सिव सिव सिव संकर सरन॥१४९॥

गरल असन, दिग्बसन व्यसन-भञ्जन, जनरञ्जन।
कुन्द-इन्दु-कर्पूर-गौर, सच्चिदानन्दघन॥
विकट वेष, उर शेष, सीस सुरसरित सहज सुचि।
सिव अकाम, अभिराम धाम, नित रामनाम रुचि॥
कन्दर्पदर्प-दुर्गम-दवन उमारवन गुनभवन हर।
तुलसीस त्रिलोचन त्रिगुन-पर, त्रिपुरमथन जय त्रिदसवर॥१५०॥

अर्ध-अंग अंगना, नाम जोगीस जोगपति।
बिषम असन, दिगबसन, नाम विस्वेस बिस्वगति॥
कर कपाल, सिर माल व्याल, बिष भूति विभूषन।
नाम सुद्ध, अविरुद्ध, अमर, अनवद्य, अदूषन॥
बिकराल भूत-बैताल-प्रिय भीम नाम भवभय-दमन।
सब विधि समर्थ महिमा अकथ तुलसिदास संसयसमन॥१५१॥

भूतनाथ भयहरन भीम भय भवन भूमिधर।
भानुमन्त भगवन्त, भूति भूषन भुजङ्गवर॥
भव्य-भाव-वल्लभ, भवेस भवभार-विभंजन।
भूरि भोग, भैरव कुजोग-गंजन जन रञ्जन॥

भारती वदन, विष-अदन सिव ससि-पतङ्ग-पावकनयन।
कह तुलसिदास किन भजसि मन भद्रसदन मर्दनमयन ॥१५२॥

सवैया

नाँगो फिरै कहै माँगतो देखि "न खाँगो कछू जनि माँगिए थोरो"।
राँकनि नाकप रीझि करै, तुलसी जग जो जुरै जाचक जोरो ॥
"नाक सँवारत आयो हौ नाकहि, नाहि पिनाकिहि नेकु निहोरो।"
ब्रह्म कहै "गिरिजा ! सिखवो, पति रावरो दानि है बावरो भोरो"॥१५३

बिष-पावक,ब्याल कराल गरे सरनागत तौ तिहुँ ताप न डाढे।
भूत वैताल सखा, भव नाम, दलै पल मे भव के भय गाढे॥
तुलसीस दरिद्र-सिरोमनि सो सुमिरे दुखदारिद होहि न ठाढे।
भौन मे भाँग, धतूरोई आँगन, नाँगे के आगे हैं माँगने बाढ़े ॥१५४॥

सीस बसै बरदा बरदानि, चढ्यो बरदा, घरन्यौ बरदा है।
धाम धतूरो बिभूति को कूरो,निवास तहाँ शव लै मरे दाहै॥
ब्याली कपाली है ख्याली,चहूँ दिसि भाँग की टाटिन को परदा है।
राँकसिरोमनि काकिनिभाग विलोकत लोकप को करदा है ॥१५५॥

दानी जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूँ पुर मे सिर-टीको।
भोरो भलो भले भाय को भूखो, भलोई कियो सुमिरे तुलसी को॥
ताबिनु आसको दास भयो, कबहूँ न मिटयो लघु लालच जी को।
साधो कहा करि साधन ते जौपै राधो नही पति पारवती को ॥१५६॥

जात जरे सब लोक बिलोकि त्रिलोचनसो विष लोकि लियो है।
पान कियो विष भूषन भो, करुना-वरुनालय साइँ-हियो है॥
मेरोई फोरिबे जोग कपार, किधौ कछु काहू लखाइ दियो है।
काहे न कान करौ बिनती, तुलसी कलिकाल बिहाल कियो है ॥१५७॥

कवित्त

खायो कालकूट भयो अजर अमर तनु,
भवन मसान, गथ गाँठरी गरद की।
डमरू कपाल कर, भूषन कराल व्याल,
बावरे बड़े की रीझ बाहन बरद की॥
तुलसी बिसाल गोरे गात बिलसति भूति,
मानो हिमगिरि चारु चाँदनी सरद की।
अर्थ धर्म काम मोक्ष बसत बिलोकनि में,
कासी करामाति जोगी जागत मरद की॥१५८॥

पिंगल जटा कलाप, माथे पै पुनीत आप
पावक नयना प्रताप भ्रू पर बरत है।
लोचन बिसाल लाल, सोहै बालचंद्र भाल,
कंठ कालकूट, व्याल भूषन धरत है॥
सुंदर दिगंबर बिभूत गात, भाँग खात,
रूरे सृँगी पूरे काल-कँटक हरत हैं।
देत न अघात, रीझि जात पात आक ही के,
भोलानाथ जोगी जब औढर ढरत हैं॥ १५९॥

देत संपदा समेत श्रीनिकेत जाचकनि,
भवन बिभूति भाँग वृषभ वहनु है।
नाम बामदेव दाहिनो सदा असंग रंग,
अर्द्ध अंग अँगना अनंग को महनु है॥
तुलसी महेस को प्रभाव भाव ही सुगम,
निगम अगम हूँ को जानिबो गहनु है।

रूप सौं भिखारि को, भयंकर रूप संकर
दयालु दीनबंधु दानि दारिद-दहनु है ॥१६०॥

चाहै न अनंग-अरि एकौ अंग मंगन को,
देबोई पै जानिए सुभाय-सिद्ध बानि सो।
बारिबुंद चारि त्रिपुरारि पर डारिए तौ
देत फल चारि, लेत सेवा साँची मानि सो॥
तुलसी भरोसो न भवेस भोलानाथ को तौ
कोटिक कलेस करौ मरौ छार छानि सो।
दारिद-दमन दुख-दोष-दाह-दावानल
दुनी न दयालु दूजो दानि सूलपानि सो॥१६१॥

काहे को अनेक देव सेवत जागै मसान,
खोवत अपान सठ होत हठि प्रेत रे!
काहे को उपाय कोटि करत मरत धाय,
जाचत नरेस देस देस के अचेत रे।
तुलसी प्रतीति बिनु त्यागै तैं प्रयाग तनु,
धन ही के हेतु दान देत कुरुखेत रे।
पात द्वै धतूरे के दै भोरे कै भवेस सों,
सुरेस हू की सम्पदा सुभाय सों न लेत. रे॥१६२॥

स्यन्दन, गयंद, बाजिराजि, भले भले भट,
धन-धाम-निकर. करनि हू न पूजै कै।
बनिता विनीत, पूत पावन सोहावन, औ
विनय विवेक विद्या सुभग सरीर ज्वै॥

इहाँ ऐसो सुख परलोक सिवलोक ओक,
ताको फल तुलसी सो सुनौ सावधान ह्वै।
जाने, बिनु जाने, कै रिसाने, केलि कबहुँक,
सिवहि चढाये ह्वै है बेल के पतौवा द्वै॥१६३॥

रति सी रवनि, सिंधु-मेखला-अवनिपति,
औनिप अनेक ठाढे हाथ जोरि हारि कै।
सम्पदा समाज देखि लाज सुरराज हू के,
सुख सब विधि विधि दीन्हे है सँवारि कै॥
इहाँ ऐसो सुख, सुरलोक सुरनाथ-पद,
ताको फल तुलसी सो कहैगो बिचारि कै।
आक के पतौवा चारि, फूल कै धतूरे के द्वै,
दीन्हे ह्वै है बारक पुरारि पर डारि कै॥१६४॥

देवसरि सेवौ बामदेव गाँउ रावरे ही,
नाम राम ही के माँगि उदर भरत हौं।
दीबे जोग तुलसी न लेत काहू को कछुक,
लिखी न भलाई भाल, पोच न करत हौं।
एते पर हू जो कोऊ रावरो ह्वै जोर करै,
ताको जोर देव दीन द्वारे गुदरत हौं।
पाइकै उराहनो उराहनो न दीजै मोहि
काल-कला कासीनाथ कहे निबरत हौं॥१६५॥

चेरो राम राय को सुजस सुनि तेरो, हर!
पाँइ तर आइ रह्यौं सुरसरि तीर हौं।

बामदेव, राम को सुभाव सील जानि जिय,
नातो नेह जानियत रघुबीर भीर हौं ॥
अविभूत, बेदन विषम होत भूतनाथ!
तुलसी बिकल पाहि पचत कुपीर हौं।
मारिए तो अनायास कासीवास खास फल,
ज्याइए तौ कृपा करि निरुज सरीर हौं ॥१६६॥

जीवे की न लालसा, दयालु महादेव! मोहि,
मालुम है तोहि मरिवेई को रहतु हौं।
कामरिपु राम के गुलामनि को कामतरु,
अवलंब जगदंब सहित चहतु हौं॥
रोग भयो भूत सो, कुसूत भयो तुलसी को,
भूतनाथ पाहि पद पंकज गहतु हौं।
ज्याइए तौ जानकी-रमन जन जानि जिय
मारिए तौ माँगी मीचु सूधियै कहतु हौं ॥१६७॥

भूतभव! भवत पिसाच-भूत-प्रेत-प्रिय,
आपनो समाज, सिव! आपु नीके जानिए।
नाना वेष बाहन बिभूषन बसन बास,
खान पान, बलि पूजा बिधि को बखानिए।
राम के गुलामनि की रीति प्रीति सूधी सब,
सब सो सनेह सब ही को सनमानिए।
तुलसी की सुधरै सुधारै भूतनाथ ही के,
मेरे माय बाप गुरु संकर भवानिए ॥१६८॥

गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानीनाथ
विस्वनाथ-पुर फिरी आन कलिकाल की।
संकर से नर गिरिजा सी नारी कासीवासी
बेद कही, सही ससिसेषर कृपाल की॥
छमुख गनेस ते महेस के पियारे लोग
विकल बिलोकियत, नगरी बिहाल की।
-सुरबेलि केलि काटत किरात कलि,
निठुर निहारिए उघारि डीठि भाल की ॥१६६॥
महेस, ठकुराइनि उमा सी जहाँ,
लोक बेद हू विदित महिमा ठहर की।
द्रगन, पूत गनपति सेनापति,
कलिकाल की कुचाल काहू तौ न हरकी॥
ाथ की बिषाद बड़ो बारानसी,
बूझिए न ऐसी गति संकर-सहर की।
तुलसी वृषासुर के बरदानि!
बानि जानि सुधा तजि पियनि जहर की॥१७०॥
१ हू विदित बारानसी की बड़ाई,
बासी नरनारि ईस अंबिका सरूप हैं।
कोतवाल, दंडकारि दंडपानि,
सभासद गनप से अमित
कुचालि कालिकाल की कुरीति, कैधौं
जानत न मूढ़, इहाँ

लोकरीति राखी, राम साखी वामदेव जान,
जन की बिनति मानि मातु कही मेरे हैं।
महामायी महेशानि महिमा की खानि
मोद मंगल की रासि, दास कासी वासी तेरे हैं॥१८४।

लोगन के पाप, कैधो सिद्ध-सुर-साप कैधौं,
काल के प्रताप कासी तिहूँ-ताप-तई है।
ऊँचे नीचे बीच के, धनिक रंक राजा राय,
हठनि बजाय करि डीठि पीठि दई है॥
देवता निहोरे महामारिन्ह सों कर जोरे,
भोरानाथ जानि भोरे अपनी सी ठई है।
करुनानिधान हनुमान बीर बलवान,
जसरासि जहाँ तहाँ तैंही लूटि लई है॥ १७५॥

मकर-सहर मर नरनारि बारिचर,
बिकल सकल महामारी माँजा भई है।
उछरत उतरात हहरात मरि जात,
भभरि भगात, जल थल मीचुमई है।
देव न दयालु महिपाल न कृपालुचित,
बारानसी बाढति अनीति नित नई है।
पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत,
रामहू की बिगरी तुही सुधारि लई है॥ १७६॥

एक तो कराल कलिकाल सूल-मूल तामे,
कोढ में की खाजु सी सनीचरी है मीन की।

वेद धर्म दूरि गए, भूमिचोर भूप भए,
साधु सीद्यमान जानि रीति पाप पीन की ॥
दूबरे को दूसरा न द्वार, राम दया-धाम,
रावरी ई गति बल-बिभव बिहीन की।
लागैगी पै लाज वा बिराजमान बिरुदहि,
महाराज आजु जौ न देत दादि दीन की ॥१७७॥

रामनाम मातुपितु, स्वामि समरथ हितु
आस रामनाम की, भरोसो रामनाम को।
प्रेम राम नाम ही सो, नेम राम नाम ही को,
जानौ न मरम पद दाहिनो न बाम को ॥
स्वारथ सकल परमारथ को रामनाम,
रामनामहीन तुलसी न काहू काम को।
राम की सपथ सरबस मेरे रामनाम,
कामधेनु कामतरु मो से छीन छाम को ॥१७८॥

सवैया

मारग मारि, महीसुर मारि, कुमारग कोटिक कै धन लीयो।
संकर कोप सौ पापको दाम परीच्छित जाहिगो जारि कै हीयो ॥
कासी मे कंटक जेते भए ते गे पाइ अघाइ कै आपनो कीयो।
आजुकि काल्हि परौंकि नरौं जड़ जाहिगे चाटि दिवारी को दीयो॥१७९

कुंकुम रंग सुअंग जितो, मुखचंद सो चंद सो होड़ परी है।
बोलत बोल समृद्धि चुवै, अवलोकत सोच बिषाद हरी है ॥
गौरी कि गंग बिहंगिनि बेष, कि मंजुल मूरति मोद भरी है।
पेखि सप्रेम पयान समै सब सोच बिमोचन छेम करी है ॥१८०॥

हनुमानबाहुक

छप्पय

सिंधु-तरन सिय-सोच-हरन रवि-बाल-बरन-तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल, कालहु को काल जनु॥
गहन-दहन-निरदहन-लंक, नि सक, बंकभुव।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव॥
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट।
गुन गनत नमत, सुमिरत, जपत समन सकल-संकट बिकट॥१॥

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रवि-तरुन-तेज घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नखबज्र बज्रतन॥
पिंग नयन, भ्रकुटी कराल, रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल-बल-भानन॥
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष कहँ सपनेहुँ नहि आवत निकट॥२॥

झूलना

पंचमुख छमुख भृगुमुख्य भट,
असुर-सुर-सर्व सरि समर समरत्थ सूरो।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल
बिपुलजल-भरित जगजलधि झूरो।

द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,

कंदुक ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो ॥

संकटसमाज असमंजस मे रामराज,

काज जुग पूगनि को करतल पल भो।

साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह

लोकपाल पालन को फिरि थिर थल भो ॥६॥

कमठ की पीठि जाके गोड़नि की गाड़ै मानौ

नाप के भाजन भरि जलनिधिजल भो।

जातुधानदावन, परावन को दुर्ग भयो,

महामीनबास तिमि-तोमनि को थल भो ॥

कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधन को

तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।

भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान

सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो ॥७॥

दूत रामराय को, सपूत पूत पौन को,

तू अंजनी को नंदन प्रताप भूरि भानु सो।

सीय-सोच समन, दुरित-दोष-दमन, सरन

आए अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो

प्रगट त्रिलोक ओक तुलसी निधान सो।

ज्ञानगुनवान बलवान सेवा सावधान,

साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो ॥८॥

दवन दुवन-दल भुवनविदित बल,
बेद जस गावत विबुध-बंदी छोर को।
पाप-ताप-तिमिर-तुहिन विघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोर को॥
लोक परलोक ते बिसोक, सपने न सोक,
तुलसी के हिए है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलिकामतरु केसरि किसोर को॥९॥
महाबलसीव, महा भीम, महा बानइत,
महाबीर विदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस कठोरतनु, जोर परै गेर रन
करुना-कलित मन धारमिक वीर को॥
दुर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को।
सीय सुखदायक, दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को॥१०॥
रचिबे को बिधि जैसे पालबे को हरि हर,
मीच मारिबे को, ज्याइबे को सुधापान भो।
धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिमभानु भो॥
खलदुख दोषिबे को, जन परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो।

आरत की आरति निवारिबे को तिहूँ पुर
तुलसी को साहिब हठीलो हनुमान भो ॥११॥
सेवक सेवकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाक को।
देवीदेव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक और राजा राना राँक को॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आक को ॥१२॥
सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि
लोकपाल सकल लपन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो बिलोक ताहि,
तुलसी तमाहि ताहि काहु बीर आन की? ॥
केसरी-किसोर, बंदीछोर को निवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक ज्यों पालि हैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की ॥१३॥
करुनानिधान बलबुद्धि के निधान मोद
महिमानिधान, गुनज्ञान के निधान हौ।
बामदेवरूप, भूपराम के सनेही, नाम
लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥
आपने प्रभाव सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधि के बिदुष हनुमान हौ।

मन की, बचन की, करम की तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहिब सुजान हौ ॥ १४ ॥
मन को अगम, तन सुगम किए कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं।
देव बदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे है।
बिगरी-सँवार अजनीकुमार कीजै मोहि,
जैसे होत आए हनुमान के निवाजे है ॥ १५ ॥

मत्तगयंद

सुजान सिरोमनि हौ, हनुमान! सदा जन के मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मै काको कहा? केहि कारन खीझत हौ तो तिहारो।
साहिब सेवक नाते ते हातो कियौ तो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाए ते आगेहूँ को हुसियार ह्वै हौं, मन तौ हिय हारो ॥१६॥
तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे घर घाले?
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिन के उर साले॥
संकट सोच सबै तुलसी लिए नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ भये, बलि, मेरेहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले ॥१७॥
सिधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवासे।
तैं रनकेहरि केहरि के बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से॥
तोसो समत्थ सुसाहिब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा से।
बानर-बाज! बढ़े खल खेचर, लीजत क्यो न लपेटि लवा से? ॥१८॥

अच्छ-बिमर्दन कानन-भान दसानन आनन भान निहारो।
वारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न से कुंजर केहरि-वारो॥
राम-प्रताप हुतासन, कच्छ विपच्छ, समीर समीर दुलारो।
पाप ते साप ते, ताप तिहूँ ते सदा तुलसी कहँ सो रखवारो॥१९॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिए।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ ? कहाँ चूक परी,
साहेब सुभाय कपि साहेब सँभारिए॥
अपराधी जानि कीजै साँसति सहस भाँति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिए।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीरजू के,
बाँहपीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥२०॥

बालक बिलोकि, बलि, बारे ते आपनो कियो,
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिए॥
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो ?
माथे पगु बली को, निहारि सो निवारिए।
केसरीकिसोर, रन-रोर, बरजोर बीर,
बाहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिए॥ १२॥

उपथे-थपन, थिरथपे-उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिए।

राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिए ॥
साहिब समर्थ तोसो तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु, बीर ! बाँधि मारिए ।
पोखरी बिसाल बाहुँ, बलि, बारिचर पीर,
मकरी ज्यों पकरि कै बदन बिदारिए ॥२२॥
राम को सनेह, राम साहस, लखन सिय
राम की भगति, सोच संकट निवारिए ।
मुदमरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये ॥
कूदिए कृपाल तुलसी सु-प्रेमपब्बई ते,
सुथल सुबेल भालु बैठि कै बिचारिए ।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाहुपीर क्यों न
लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिए ॥२३॥
लोक परलोक हूँ, तिलोक न बिलोकियत
तो सो समरथ चष चारिहूँ निहारिए ।
कर्म काल, लोकपाल, अग जग जीव जाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिए ॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव ! दुखी देखियत भारिए ।
बात तरुमूल, बाहुसूल कपिकच्छु बेलि
उपजी, सकेलि, कपि, खेलही उखारिए ॥२४॥

करम-कराल कंस भूमिपाल के भरोसे
बकी बक भगिनी काहू तें कहा डरैगी ?
बडी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ॥
आई है बनाइ बेष, आप तू बिचारि देख,
पाप जाय सब को गुनी के पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यों कपिकान्ह तुलसी की
बाहु-पीर, महाबीर, तेरे मारे मरैगी ॥२५॥
भाल की, कि काल की, कि रोष की, त्रिदोष की है
बेदन बिषम पाप ताप छलछाँह की।
करमन कूट की कि जंत्र मंत्र बूट की,
पराहि जाहि, पापिनी मलीन मन माँह की ॥
पैहहि सजाय नतु कहत बजाय तोहि
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाह की।
आन हनुमान की दोहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँह की ॥२६॥
सिंहिका सँहारि बलि, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंका परजारि, मकरी बिदारि बार बार
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ॥
तोरि जमकातरि मँदोदरी कढ़ोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद-महतारी है।

भीर बाहँपीर की निपट राखी महावीर
कौन के सँकोच तुलसी के सोच भारी है ॥२७॥

तेरी बालकेलि, बीर ! सुनि सहमत धीर
भूलत सरीर-सुधि सक्र रवि राहु की।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की ॥
साम दाम भेद बिधि, बेदहु लबेद सिद्धि
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहु की।
आलस, अनख, परिहास की सिखावन है
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की ! ॥२८॥

टूकनि को घर घर डोलत कंगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्ही है सँभार सार अंजनीकुमार बीर,
आपनो बिसारि है न मेरे हू भरोसो है ॥
एतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिनाथ साँची कहौं को त्रिलोक तोसो है ?।
साँसति सहत दास कीजै पेखि परिहास
चीरी को मरन खेल बालकनि को सो है ॥२९॥

आपने ही पाप ते त्रिताप तें, कि साप ते
बढ़ी है बाहुबेदन, कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र मंत्र टोटकादि किए,
बादि भए देवता, मनाए अधिकाति है ॥

करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी 'तू मेरो' कह्यो रामदूत,
ढील तेरी, बीर मोहि पीर तें पिराति है ॥३०॥
दूत रामराय को, सपूत पूत बाय को,
समरथ हाथ पाय को, सहाय असहाय को।
बाँकी बिरुदावलि बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मूठिका के घाय को ॥
एते बडे साहेब समर्थ को निवाजो आजु
सीदत सुसेवक बचन मन काय को।
थोरि बाहुपीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभाय को ॥३१॥
देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बडे जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम
रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत है॥
घोर जत्र मत्र कूट कपट कुजोग रोग,
हनूमान आन सुनि छाँड़त निकेत है।
क्रोध कीजै कर्म को, प्रबोध कीजै तुलसी को,
सोध कीजै तिनको जो दोष दुख देत है ॥३२॥
तेरे बल बानर जिताए रन रावन से,
तेरे घाले जातुधान भए घर घर के।

तेरे बल रामराज किए सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के ॥
तेरे गुनगान सुनि गीरबान पुलकित,
सजल बिलोचन बिरचि हरि हर के ।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिए न दास दुखी तो से कनिगर के ॥३३॥
पालो तेरे टूक को, परे हूँ चूक मूकिए न,
कूर कौडी दू को हौं आपनी ओर हेरिए ।
भारानाथ भोरे हो सराप होत थोरे दोष,
पोपि तोपि थापि आपने न अवडेरिए ॥
अंबु तू हौं अबुचर, अंब तू हो डिंभ, सो न,
बूझिए बिलंब अवलंब मेरे तेरिए ।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिए ॥३४॥
घेरि लियो रोगनि कुलोगनि कुजोगनि ज्यों
बासर जलद घनघटा धुकि धाई है ।
बरषत बारि पीर जारिए जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल, मलिनाई है ॥
करुनानिधान हनुमान महा बलवान !
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तें उड़ाई है ।
खायो हुतो तुलसी कुरोग राढ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरयाई है ॥३५॥

मत्तगयंद

रामगुलाम तुही हनुमान गुसाँई सुसाँई सदा अनुकूलो।
पाल्यौ हौं बाल ज्यों आखर दू पितुमातु ज्यौं मंगलमोद समूलो॥
बाहुँ की बेदन, बाँहपगार ! पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्रीरघुबीर निवारिए पीर, रहौं दरबार परो लटि लूलो॥३६॥

घनाक्षरी

काल की करालता, करमकठिनाई कीधौं,
पाप के प्रभाव, की सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीर डाबरे॥
लायो तरु तुलसी तिहारो, सो निहारि बारि
सींचिए मलीन भो भयो है तिहूँ ताव रे।
भूतनि की, आपनी, पराई है कृपानिधान!
जानियति सबही की रीति राम रावरे॥३७॥

पाँय-पीर पेट-पीर बाहु-पीर, मुँह-पीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है,
देव भूत पितर, करम खल काल, ग्रह
मोहिं पर दवरि दमानक सी दई है॥
हौं तौ बिन मोल ही बिकानो, बलि, बारे ही तें,
ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभज के किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ! ऐसी हाल कहूँ भई है ? ॥३८॥

बाहुक-सुबाहु नीच, लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा, कुरोग-जातुधान हैं।
रामनाम जपजाग कियो चाहौं सानुराग,
काल कैसे दूतभूत कहा मेरे मान हैं॥
सुमिरे सहाइ रामलषन आखर दोउ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि, ताड़का सँहारि, भारी भट
बेधे बरगद से बनाइ बानबान हैं॥३६॥

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत, माँगि खात टूकटाक हौं।
परयौ लोकरीति में, पुनीति प्रीति रामराय
मोहबस बैठो तोरि तरकि तराक हौं॥
खोटे खोटे आचरन आचरत अपनायो
अजनीकुमार, सोध्यो रामपानि पाक हौं॥
तुलसी गुसाईं भयो, भोंडे दिन भूल गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं॥४०॥

असन-बसन-हीन, विषम विषाद लीन देखि
दीन दूबरो करै न हाय हाय को?।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरुआइ गो
विहाय प्रभुभजन बचन मन काय को।

सरलार्थ प्रदीप

बालकाण्ड

पृष्ठ १

१—(कोई सखी अपनी सहेली से कहती है) अवधेस=(अवध + ईश) भूपति, राजा दशरथ। सकारे = सबेरे। निकसे=घर से निकले। अवलोकि = देखकर। हौं=मैं। सोच विमोचन=शोच को दूर करने वाले, रामचन्द्र, राम। ठगिसी रही=प्रेम के कारण शिथिल होगई, चकित होगई। धिकसे= उनको धिक्कार है। मनरंजन=चित्त प्रसन्न करने वाले। रंजित अंजन= काजल लगे हुए। खंजन जातक से = खंजन पक्षी के नेत्रों के समान। (उपमालंकार)। सजनी = सखी। समशील = समान शीलवाले, एकसे। उभै = दोनों। नवनील विकसे = खिले हुए नये नीले कमल के समान सुन्दर। (उत्प्रेक्षालंकार)

२—पगनूपुर = पैरों में पाइजेब या घुंघुरू। कर कंजन = कमलरूपी हाथों मे। मंजु = सुंदर। हिये = हृदय। कलेवर = शरीर। पीत झगा = पीला कुर्ता। झलकें = चमकते हैं या पतले झगा मे शरीर झलकता है। पुलकें = पुलकित हो जाते है। नृप = राजा। अरबिंदसौं पियै = मुख रूपी कमल का सरूप (सुन्दरता) रूपी मकरंद (रस) को नेत्ररूप भौंरा आनंद मे पान करते है (उपमा, रूपक)। फल कौन जियै = जीने का क्या फल हुआ।

३—दुति = चमक, शोभा, कान्ति। श्याम सरोरुह = साँवला कमल। कंज = कमल। (लुप्तोपमा) मंजुलताई हरे = सुन्दरता को मलीन करता है। धूरिभरे = धूल से लिपटे हुए। छबि धरैं = कामदेव की बहुत बड़ी शोभा को भी लज्जित करने वाले। (तीसरा प्रतीप) दमकें

ज्यों = छोटे छोटे दाँत बिजली की भाँति चमकते हैं। (पूर्णोपमा) किलकें = किलकारी लगाते हैं। कल = सुंदर। बाल विनोद = बाललीला। बिहरैं = विहार करते हैं।

४—आरि करें = अड जाते है। प्रतिबिम्ब = परछाईं। निहारि = देखकर। करताल = ताली बजाकर। मनमोद भरैं = आनंद मे भर जाते हैं। अरैं = अड जाते हैं, जिद करते हैं।

५—वर दंत = सुंदर दाँत। कुंदकली = कुंदकी कली के समान सफेद। अधराधर = होट। पल्लव = पत्ते। खोलन = खोलने से। चपला = बिजली। घनबीच = बादलों के बीच मे। जगैं = चमकते हैं, जगमगाते हैं। अमोलन की = बहुमूल्य, अमूल्य। लटैं = बालों के गुच्छे। लोल = चंचल। कपोल = कनपटी। निवछावरि = (न्यौछावरि) वारदेना। बलिजाउँ = बलिदान होती हूँ। (इस छंद में प्रत्येक पद के पीछे "बलिजाउँ" शब्द जोड़ देना चाहिये।

६—(राम का वचन) पदकंजनि = कमलरूपी चरण। पनहीं = जूता। धनुहीं = छोटा धनुष। पंकज पानि = कमल रूपी हाथ। लरिका संग = बालकों के साथ। सरजूतट = सरजू नदी के किनारे। चौहट = चौराहों पर। हाट = बाजार। हिये = भक्तों के हृदय में। सो = से। कहा = क्या फल है। समाधि = ईश्वर के ध्यान में लीन। नर ‥ समान = वह मनुष्य शूअर, कुत्ता, गधा के समान है। कहौ ‥ जिये = संसार में ऐसे जीने से क्या लाभ है।

७—निषंग = तरकस, तीर रखकर पीठ पर कमर से बाँध लेते हैं। कटि = कमर। पीत ‥ फबै = नया पीला रेशमी वस्त्र शोभा देता है। लावनिता = (लावण्यता) सुन्दरता। दश चारि ‥ सेवै = दश गुण माधुर्य्य के, प्रताप के चार गुण, ऐश्वर्य्य के नौ गुण, प्रकृति के तीन गुण यश के इक्कीस गुण अथवा (चौदह भुवन, नवद्वीप तीनो लोक में इक्कीस अर्थात् बढ़कर है।)

८—मति भारति = सरस्वती की बुद्धि। पंगु = लंगडी। उपमा न फबै = उपमा कहीं नहीं मिल सकी। छोनी से कै = पृथ्वी भरके। छोनी-पति = राजा। छाजै जिन्हें छत्र छाया = छत्रों की छाया जिन पर शोभा देती है। छोनी = अक्षौहिणी सेना, रथ, हाथी, घोडा, पैदल मिलकर चतुरंगणी सेना कहलाती थी। निमिराज के = राजा जनक के। प्रचण्ड = भयंकर, तेजस्वी। बरिबंड = बलवान। बर = श्रेष्ठ। बरवे को = व्याहने के लिये। बयदेही = सीताजी। बंदी = भाट। बिरुद = यश, कीर्त्ति। बजाइ' 'बाजनेऊ = बाजा बजा कर। बाजे समाज के = सभा के कोई कोई वीर (अभिमान में) अपनी अपनी भुजायें ठोकते है। हेरैं = देखते हैं। औधि मृगराज = अयोध्या के सिंह अर्थात् वीर शिरोमणि राम। (अनुप्रासालङ्कार)

९—राजनि के राजा = महाराजा। जाने नाम को = नाम कोई नहीं जानता, ससार भर के। पवन = वायु देवता। पुरदर = इंद्र देवता कृपानु = अग्नि देवता। भानु = सूर्य देवता। धनद = कुबेर, क्रम से बल, ऐश्वर्य, तेज तथा सम्पति मे इन देवताओ के समान। निधान = घर के। रूप धाम = बहुत सुन्दर। सोम काम को = चन्द्रमा और कामदेव का रूप कुछ भी नही था। बान = वाणासुर। जातुधानप = राक्षसों का राजा रावण। सरीखे = बराबर के। सालिम = पूरा। सालिम-संग्राम को = रणधीर कोई नहीं है। दसरत्थ के समर्थ = दशरथ के सामर्थ्य वाले और तुलसी के स्वामी। चपरि = शीघ्रता से। चाप = धनुप। चन्द्रमा-ललाम को = महादेव का।

१०—मयन महन = कामदेव के नाश करने वाले। पुरदहन = त्रिपुर राक्षस को मारने वाले। गहन जानि = कठिन जानकर। सबे को सारु = सबका तत्व, निचोड। सदसि = सभा। कुलिस = वज्र। कूर्म पीठ = कछुआ की खोपडी। पिनाक = धनुप। सरोज-पानि = कमल रूपी हाथ। परसत = छूते ही। बारे ते = बचपन से। पुरारि = महादेव।

११—डिगति ···· सर = सब अत्यन्त भारी पर्वत, समुद्र, तालाव आदि सहित पृथ्वी हिलने लगी । व्याल वधिर = शेप नाग बहिरे होगये । विकल ·चराचर = डिगपाल,चलने वाले तथा न चलने वाले जीव विकल होगये । डिगयन्द = दिशाओं के हाथी लड खडाते हैं । दशकंठ मुक्खभर = रावण मुँह के वल गिर गया । सुरविमान · · परस्पर = देवताओं के विमान, सूर्य, चन्द्रमा आपस में लड गये । विरंचि = ब्रह्मा । कोल = वाराह । कमठ = कछुआ । कलमल्यो = दहला गये । ब्रह्माड = पृथ्वी । चन्ड धुनि = भयानक शब्द । दल्यौ = तोडा ।

१२—लोचनाभिराम = (लोचन + अभिराम) देखने में सुन्दर । घनश्याम = (घन इव श्याम) बादल के समान नीले रंग वाले । राम सिसु = राम के स्वरूप रूपी बच्चे को । पालिरी = हे सखी पालन कर । सों = से । प्रेमपय = प्रेम रूपी दूध से । नृपालजू = राजा के लडके ने । ख्याल हीं = बड़ी आसानी से । मण्डलीक ··दालिरो = राजा लोगो के प्रताप के अभिमान को दूर कर दिया । भाव तो ह्वैहै = चाह पूरी होगी । कोखि = गर्भ ।परतोषि = संतुष्ट । राय = राजा । वलैया लीजै = वलि जाओ । आलि = सखी ।

१३—रोचना = गोरोचन । कनकथार = सोने की थाली । करकज = कमल रूपी हाथों मे । रावोजू = रामजी को । झरोखे = रोशनदान । नीड = घोंसला । (वस्तूत्प्रेक्षालकार) पलकैं न लावती = टकटकी लगाकर ।

१४—निशान = वाजे । व्योम दुंदुभी = आकाश मे नगाडा वजता है । सुरनारि = अप्सरा । रूरे = सुन्दर । राचहीं = मुग्ध होते है । जयौ = जीतलिया । मोद माचहीं = आनन्द मंगल छागया । किसोर = सोलह वर्ष की अवस्था को किशोरावस्था कहते है । गोरी = सीता जी । तृन तोरि = तिनका तोड़ कर । (नजर न लगे इस भाव से) जाँच हीं = माँगती हैं ।

१५—भले भूप = भक्त राजा लोग । भदेस = खोटे, दुष्ट । लोक-लखि = दुनियाँ का रुख देखकर । मारखी—(आर्षी) ऋषि कथित या मार्के की बात । जोचो = देखो । कारखी = कालोंच, बुराई । पारिखी = परीक्षा करने वाले । चखचारिको = चार आँख वाला, दो प्रत्यक्ष और दो ज्ञानचक्ष । रमारमन—विष्णु । समधी = सम्बधी । सारिखो = समान ।

१६—वानी = सरस्वती । गौरी हर = पार्वती महादेव । सही भरी = समर्थन किया । लोमस ऋषि = काकभुशुण्ड के गुरू थे ये आदि काल में हुए थे । बहु बारिखो = बडी उमर वाला (अमर) । पारिखो—परखने वाला । चख चारिखो = चार आँख वाला अर्थात् साधारण आँखों के अतिरिक्त हृदय की ज्ञान चक्षु । रमा = लक्ष्मी । रमारमन = विष्णु । सारिखो = समान ।

१७—वेद जुवा पढाही = युवा ब्राह्मण मिलकर वेद पढते है । (किसी किसी ने जुवा जुरि का अर्थ जूआ खेलना लिखा हे । यह एक रस्म होती है जो दूल्हा दुलहिन पूरी करते हैं । यह कुहबर मे अर्थात् घर के भीतर खेला जाता है ।) रामको परछाहीं = कङ्कन मे जडे हुए नग मे सीता जी राम का रूप देखती है । यातें = इस कारण से । कर ˙ नाहीं = हाथ पकडे हुए पलभर भी नहीं छोडती या टकटकी लगा कर देखती है ।

१८—भूप मडली = राजाओ की सभा । चडीस = महादेवजी । कोदड = धनुप । खड्यो = तोडा । चगु हो = ऐसी प्रचंड भुजा वाला जो हो, मैं उसी से कहता हूँ । विदित = प्रसिद्ध है, जाहिर है । धारिवे की धीरताहि = सहने की शक्ति । चहतु हौं = चाहता हूँ । मृगराज = सिह । गजराज = हाथी । गहतु हौं = पकडता हूँ । छप्यो = छिपा हुआ । छोनिप = राजा । छौना = लडका । छोनिप छपन = राजाओं के नाश करने वाले । बाको बिरुद बहतु हौं = बाँका (कठिन) यश प्राप्त है ।

१६—कुठार पानि = कुठारि है पानि में जिनके, परशुराम । औनिपन = और राजओं ने । मौनता गही = चुप्पी साध गये । मापे = क्रोधित हुए । अकनि = (आकर्ण्य) सुनकर । अनखौंहि बातें = अनख जोश दिलाने वाली बाते, खिजाने वाली बातें । सरासन = धनुष । सरीकता = साझा ।

२०—अर्भक = बच्चे । पटधार = तीव्रधार । दल्यो = तोडा । लघु आनन ·· बडो । छोटे मुँह बडी बात । साको = उपद्रव, गजब । गोरो = लक्ष्मण । कौशिक = विश्वामित्र = ढोटो है काको = किसका लडका है ।

२१—मख राखिबे = यज्ञ की रक्षा करने के लिये । राजा = दशरथ । जातुधान = राक्षस । जे जितैया बिबुधेसके = जो देवताओं के राजा इन्द्र को भी जीतने वाले थे । गौतम की तीय = गौतम ऋषि की स्त्री । तारी = पवित्र की। पारकी । अघभूरि भारी = महा पापिनी । लोचन अतिथ = नेत्रों के महमान । जनेस = राजा । कौशलेश के = राजा दशरथ के ।

२२—काल कराल नृपालनके = राजाओं के लिये भयानक कालरूप। बिलोकि = देखकर । धीरसिरोमणि = बडे धैर्यवान । महारिस = भयानक क्रोध । भृगुनायक=परशुराम जी । सुभाय सिधाये = चुप चाप चले गये ।

अयोध्या काण्ड

(वन जाते हुए राम का वर्णन)

१—कीर-तोता । कागर = कागज या पिंजड़ा । ज्यौं पाई = जिस प्रकार राजाओं के वस्त्र और आभूषण राम के स्वाभाविक शरीर पर भाव यह है कि पक्षी के पर प्रायः गिर जाते है पर पक्षी को कोई चिन्ता नहीं होती । इसी प्रकार राम को वस्त्राभूषणों की कोई चिंता नहीं । दूसरा अर्थ कागर कारागार का अपभ्रंश जेलखाना या पिंजड़ा । पक्षी को पिंजड़े मे दुख होता है क्योंकि उसकी स्वतंत्रता छिन जाती है राम भी राजसी वस्त्राभूषणों को अपने लिये कारागार भाव से देखते है ।

औध ज्यौं = अयोध्या मार्ग मे पड़ने वाले पेड़ों की भाँति छोड़दी, अर्थात् कुछ चिन्ता या मोह नहीं किया । पथ ' लुगाई = अयोध्या के रहने वाले स्त्री-पुरुष ऐसे छोड़ दिये जैसे कि कोई रास्त चलते समय साथ हो जाने वाले लोगों को छोड़ देता है । धर्म ' ''' सुहाई = धर्म और क्रिया देह धर कर शोभा देती है । यहाँ धर्म को लक्ष्मण और क्रिया सीता जी को माना है । राजिवलोचन = कमल नेत्र । बटाऊ की नाई = बटोही (राहगीर) की भाँति । (उत्प्रेक्षालंकार,

२—कागर = कीर । सरीर ' काई = शरीर वस्त्राभूषणों के दूर होने पर ऐसा दिखाई दिया जैसे काई के अलग हो जाने पर पानी उज्ज्वल हो जाता है । सनेह सगाई = स्नेही तथा सम्बन्धी लोग या प्रेमीजन । दिन पहुनाई = मानो दो दिन अयोध्या मे मिहमानों की भाँति रहकर ।

(उत्प्रेक्षालंकार)

३—सिथिल सनेह = प्रेम से सिथिल होकर । न सौतिलखी = सौति नहीं समझा । सेई है = सेवा की है । बलैया लैहो = बलैया लेती हूँ । मतेई = सौतेली माँ । बाम = टेढ़ा । सिरिस सुमनसम = सिरस के फूल के समान । छल-छुरी = कपट की छुरी । कोह-कुलिस लै टेई है = क्रोध रूपी वज्र पर घिस कर पैनी की है ।

४—जीजी = बड़ी बहन । सहियतुहै = सहना पडता है । रावरो = आपका । चहियतुहै = ऐसा मुनासिब है । आपका स्वभाव तो इससे जाना जाता है कि आप राम जैसे पुत्र की माता हो । आप राज पुत्री, राजपत्नी तथा राज्य के अधिकारी पुत्र की मा हो। राम का स्वभाव उदार है । माता का उग्र स्वभाव होता तो राम का स्वभाव भी अवश्य उग्र होता । या दुष्ट स्वभाव वाली माता के त्रिलोकीनाथ राम पुत्र न बनते। न सुख लहियतु है = सुख नहीं मिला । सुधा गेह = अमृत का घर, चन्द्रमा । मृगहू मलीन कियो = मृग के चिह्न से काला है । बाहुविन राहु गहियतु है = बिना भुजाओं का राहु पकडता है।

५—अजामिल = एक प्रसिद्ध पापी का नाम है । भव = ससार । काढे = निकाले। गिरि-मेरु सुमेरु = बडे पर्वत का नाम है। सिला-कन = पत्थर का चूर्ण। अजा खुर = बकरी का खुर। बारिधि बाढे = बडे समुद्र। स्वै = (स्वय) खुद । तरिबे = पार होने को । करारे = किनारे ।

६—देखाईहोंजू = दिखला दूंगा । तरनी = नाव । कटिलौं = कमर तक । थोरिक = थो ी । पग धूरि = पैरो की रज । घरनी = (गृहणी) स्त्री । लरिका = बाल बच्चे । प्रभाव = ऐश्वर्य ।

७—बन-बाहन = पानी की सवारी, नाव । जल खाय रहा है = पानी से गल रहा है । पखार = धोकर । आयुस = आज्ञा। कहा = क्या। बैन = वचन, बाते । हाहा = हॅसी ।

८—पातभरी सहरी = नाव । बारे बारे = छोटे छोटे । कछु = कुछ । याहि लागि = इसी के सहारे । दीन = गरीब । वित्तहीन = निर्धन । गौतम की घरनी = अहिल्या । बाद न बढाइहौं = झगडा थोडे ही करूँगा । तुलसी के ईश = रामचन्द्र ।

९—जिनको पुनीत वारि = जिसका पवित्र जल है । पुरारि = महादेव। त्रिपथ गामिनी = तीन मार्ग मे चलने वाली। गगा जी आकाश पाताल और पृथ्वी तीनों लोक में बहती है। जसु = यश । जोगीन्द्र =

चडे बडे योगी लोग । देहभरि = जब तक जीवित रहे । मन लाइ के = ध्यान से । परसि = छूकर । गौनो सो लिवाइ कै = स्त्री की विदा कराके भाव प्रसन्नता का । खैहौ ·· कै = नाव खोकर दुनियाँ न हँसाऊँगा ।

१०—रुख = इशारा । कठौता = काठ का वर्तन । आनि = लाकर । पुनीत = पवित्र, चरणामृत । सानुराग = प्रेम सहित । विबुध सनेह सानी = देवताओं कीप्रेम से भरी हुई । अस्यानी = छलरहित । राघो = रामचन्द्रजी । हेरि हेरि = देख कर ।

११—पुरतै = अयोध्या से । रघुबीर-बधू = सीताजी । डगद्वै = दो कदम दिये । भरि-भाल = सब माथे पर । कनी जलकी = पसीने की बूँदे । पुट मधुराधर = सुन्दर-कोमल व लाल होंट सूख गये । व = वे अथवा केवल छन्द पूर्ति के लिये अव्यय । केतिक = कितना । कित ह्वै = कहाँ चल कर । आतुरता = घबडाहट । पियकी जलच्वै = स्वामी की सुन्दर आँखों से आँसू निकलने लगे ।

१२—लक्खन = लक्ष्मण । लरिका = बालक । परिखौ = राह देखना । घरीक ह्वै ठाडे = थोडी देर खडे होकर । पसेउ = पसीना । बयारि = हवा । भू भुरि डाढे = गर्म रेत मे जले हुए । श्रम = थकी हुई । बिलंब काढे = देर तक कॉटे निकाले । नाह = स्वामी । लख्यो = देखा । पुलकी तनु = शरीर रोमाचित होगया । बारि' बाढे = आँखों मे आँसू भर आये ।

१३—नौ · गहे = नये पेड की डार पकडे हुए । काँधे (स्कन्ध) कधा पर । कर·· · लै = हाथ में तीर लेकर । बिकटी भृकुटी = टेढी भौं हैं । बड़री = बडी बड़ी । अनमोल = बहुमूल्य । असि = ऐसी । हिये = हृदय मे । जड़··· · कै = मैं जड़ बुद्धि तुलसीदास प्राणों को नौछावर कर डालूँगा । स्रम··· · तारक से = साँवले शरीर पर पसीने की बूँदे ऐसी जान पडती हैं मानों अँधेरी रात में तारागण चमक रहे है ।

१४—मार्ग वासी राम के रूप का वर्णन करते है:—जलजनयन = कमल रूपी आँखे। जलजानन = कमल रूपी मुँह। जोवन· · · ·हैं = जवानी की पूरी शोभा शरीर पर प्रगट होती है। सुभामिनी सी = विजली के से वर्णवाली। मुनि-पट धरे = मुनि लोगो के पहनने योग्य वस्त्र पहिने हुए। करनि = हाथो मे। सिली मुख = बाण। काहू = किसी। अनूप = उपमा रहित। बिलोकि = देखकर। तिलोक के = तीनों लोक मे तीनो (राम, लक्ष्मण सीता) भूषण रूप है।

१५—आगे साँवरो = सब से आगे साँवला अर्थात् राम शोभा देते है। गोरे = लक्ष्मण। आछे = सुन्दर। लाजत अनंग है = कामदेव लज्जित होता है। बिसिपासन = तीरो का आसन अर्थात् धनुष। बसन बन ही के = छाल के वस्त्र। नीके राजत = अच्छे प्रकार मे शोभा देते है। निशिनाथ मुखी = चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली। पाथ-नाथ-नन्दिनीसी = समुद्र की पुत्री अर्थात् लक्ष्मी के समान। (धर्मलुप्तोपमा) चित्त · · ·सग है = चित्त को मोहित करती है। उमगत अग अंग है = अंग प्रत्यंग मे प्रगट होती है।

१६—सरसीरुह = (सरसि = तालाब मे, रूह-पैदा होते है) कमल। मंजुल प्रसून = सुन्दर फूल। असनि = कन्धे पर। लसत = शोभा देती है। लूटक पटनि के = रेशमी वस्त्रो की शोभा को भी लज्जित करने वाले। जाके उबटि कै = जिसके अग का उबटन करके जो मैल निकला था उसके। बिधि के = ब्रह्मा ने बिजली की छटा बनाई है। बरन = (वर्ण) रग। सोनो ·· लागे = सोने का रंग फीका लगता है। गर्वं घटनि के = बरसाऊ बादलो की जो घटा घिर जाती है उनका रंग भी फीका जान पडता है।

१७—घन-दामिनी-बरन = बादल के रंग राम, बिजली के रंग सीता, लक्ष्मण। नवल·· ते = नये कमल से भी। और = दूसरा। रति = काम-

देव की स्त्री । रति पति = कामदेव (तद्रूपकालकार) । तन ··· हरन है = शरीर मन का हरने वाला है । पथिक = राहगीर । पथै = राह में । लोक-लोचनन = आदमियों को नेत्र होने का फल देने को अर्थात् सब दर्शन कर प्रसन्न होवें ।

१८—(एक सखी का दूसरी से कथन) बनिता बीच = साँवले और गोरे के बीच में स्त्री शोभा देती है । मोहिसी ह्वै = मेरे जैसे मन लगाकर । सकुचात छ्वै = उनके कमल रूपी चरण इतने कोमल है कि पृथ्वी छूने से सकुचती है कि कहीं चोट न आजावे । बिथकी = अधिक थक गई ।

१९—मनोहरता है = मनमोहनी सुन्दरता ने कामदेव की शोभा को जीत लिया है । बिधु-बैनी = चन्द्रमुखी । रति दियो है = कामदेव को जिसकी थोडी सुन्दरता मिली है । पयादेई = पैदल ही । अजानी = मूर्ख ।

२०—पवि हूते = वज्र और पत्थर से भी । बिछुरे जियो है = इनके बिछुडनेपर जिनको ये प्यारे हैं वे कैसे जिये होगें । काज-अकाज = काम बिगडता हुआ । कान कियो है = मान लिया है । आँखिन मे राखिवे जोग = जिनकी आँखो की पुतली के समान रक्षा करनी चाहिये थी अर्थात सदा आँखो के सामने रखने चाहिये थे । कोकिम कै = किसलिये ।

२१—उर बाहु बिसाल = लम्बी भुजा और चौडी छाती है । तिरछी सी भौंहे = टेढी भौंह । तून = तरकस । सुठि सोहैं = सुन्दर शोभा देते हैं । सुभाय = स्वभाव से । चितै = देखते हैं । रावरे को है = आप के रिश्ते में कौन है ।

२२—सुधारस साने = प्यारी बाते । सयानी हैं = चतुर है । सैन = आँखों के इशारे से । मुसकाय चली = मुस्करा कर चली । औसर = समय । अवलोकति = देखती है । लोचनलाहु = आँखे पाने का लाभ ।

अली = सखी । अनुराग ... कली = प्रेम रूपी तालाब मे राम रूपी सूर्य निकले और उन्होने कमल रूपी सखियों को खिलाया (प्रसन्न चित्त किया) है। (उत्प्रेक्षालङ्कार)

२३—सजनी = सखी । रजनी रहि है = रातको ठहरेंगे । पोच = बुरा । फल लहि हैं = नेत्रो को तो अपना फल मिलेगा । बतियाँ = बातें। कल = सुदर । कछु पै कहि है = जो यदि ये आपस मे बाते करेंगे (उनको सुनकर) । अति प्रेम लगीपलकें = आँखो के पलक बहुत प्रेम होने कारण बद होगये । पुलकी ... महि हैं = अपने ध्यान में रामचंद्रजी को देखकर पुलकायमान हुई ।

२४—पद = पैर, पाँव । कलेवर = शरीर । राजत ... लजाये = करोड़ो कामदेवो की शोभा को मलीन करने वाली शोभा देते हैं । कर = हाथ । सरसीरुह लोचन ... सुहाये = लाल कमल के समान सुंदर नेत्र शोभा देते है । सत भावहुँते = अच्छे भाव से । तिनतौ ... पाये = वह अपना मन फिर लौटा न सकी अर्थात् राम के साथ चला गया । किसोर = किशोर अवस्था वाले राम लक्ष्मण । बधू बिधु बैनी = चद्र मुखी स्त्री, सीताजी । सिधाये = गये ।

२५—मनोज-सरासन = कामदेव के धनुप के समान [धर्मलुप्तोपमा] दीठि = [दृष्टि] परी ... है = उनकी तिरछी निगाह [दृष्टि] मेरे ऊपर पडी । तोहि सो = तुझसे । ह्वै ... यो है = वो मूर्ति मेरे मन में बस गई ।

२६—सो = से । चितै = जो देखा, चित्त दे, ध्यान देकर । चित चोरे = चित्त चुरा कर । प्रेम ... चोरे = प्रेम के साथ ध्यान से जो अपनी प्रिया को तिरछी निगाह से देखा, उस छटाने मेरा चित्त चुरा लिया । हुलसै = उमंग बढती है । चलै = चचल । काम ... तोरे = जिन पर कामदेव की कमान भी तिनके के समान तोड़ी जा सकती

है। (न्यौछावर के भाव से या भौहों के समान सुन्दर न होने से व्यर्थ समझ कर) धनुसों सर जोरें = धनुष पर बाण चढाते हुए । कुरंग = हिरन।

२७—चारिक = कोई चार, थोडे से । चारु = सुन्दर । बनाय कटि = सँभाल कर कमर से कसे हुए है। पानि = हाथ । मृगया = शिकार, आखेट । किमिकै = किस प्रकार । मृगी चित दै = हिरन आदि ध्यान दे कर तथा चकित हो कर देखते है अर्थात् धनुष बाण देख कर शिकारी का भाव होता है, यह रूप तथा स्वभाव मे शिकारी भाव दूर हो जाता है। जड मे रतिनायक है = पॉच बाण धारण करके कामदेव घूमता है, यह समझ कर चलते हैं न भागते हैं। (भ्रमालकार)

२८—(हास्य भाव) विन्ध्य दुखारे = विन्ध्याचल पर्वत पर रहने वाले उदासी (सन्यासी) तपस्वी आदि बिना पत्नी के बहुत ही दुखी हैं। ह्वै है तिहारे = आप (राम) के चरणों को छू कर सब विन्ध्याचल पर्वत की शिलायें सुन्दर स्त्रियाँ बन जायँगी। कानन = वन।

आरण्य काण्ड

पंचवटी = वह स्थान जहाँ ५ बरगद के पेड़ थे वहाँ पर राम कुटी बना कर रहे थे। वर = सुन्दर या सुभीते की। पर्नकुटीतर = पत्तो की झोंपडी के नीचे । सुभाय सुहाये = स्वाभाविक सुन्दर। लसैं = शोभा देते है। घने छाये = सब अङ्ग अत्यन्त सुन्दर थे। मृगा = सोने का मृग बना हुआ मारीच। मृगनैनी = सीता जी (छेकानुप्रास) प्रीतम = प्यारे (राम)। सोने का हिरण (मारीच)।

किष्किन्धा काण्ड

१—(सीता जी की खोज करते समय) अङ्गदादि = अङ्गद, जामवंत, नल और नीलादि। मति ' 'भई = खोज करने पर संपाती द्वारा लंका मे सीता जी का पता लगा, बीच मे भारी समुद्र था। उस समय सब लोग समुद्र पार लंका जाने को हिम्मत हार गये केवल हनूमान जी ने साहस किया। पवन के पूत = हनूमान। न कुदवे 'गो = (समुद्र पार लका में जाते समय) समुद्र लाँघने में देर न लगी। ह्वै = हो कर। सैल = त्रिकूट पर्वत पर। सहसा = जल्दी से। सकेलि = स + केलि खेलने की भाँति आराम से आ गये। औरन ' '' गो = राक्षस लोगों को डर लगा। रसातल = पाताल। सलिल = जल (यहाँ कूदते समय भारी बोझ मे पर्वत के दबने पर पानी ऊपर को उछलने का भाव है)। कलमल्यो = व्याकुल हुआ। अहि ''' जों = शेषनाग व कच्छप का बल जाता रहा (घबडाने का भाव) चारों हाथ पैरों की चोट से। चिपिटि गो = धसक गया या चपटा हो गया। उचकि ' गो = हनूमान जी के छलाग मारने पर पर्वत ऊपर को चार अंगुल ऊँचा हो गया।

सुन्दर कांड

१—(रावण के बाग की प्रशंसा) वासव = इन्द्र। वरुन = वरुण, जल का देवता। कानन = वन। बसत को सिगारु सो = बसत की शोभा को भी बढाने वाला था। समय पुराने पात परत = समय पर पुराने पत्ते गिरने से (नये पत्ते आने से पहिले पत्ते गिरते है)। डरतवात = हवा डरती है, पवन भय खाता है। मार = कामदेव। पालत ललात = लालन पालन। रति = कामदेव की स्त्री का नाम है। विहारु सो = विहार करने की जगह। वर = श्रेष्ठ। वापिका = बावडी। तडाग = तालाब। राग

वस भो = प्रेमवश हो गया। बिरागी = ससार त्यागी। बिटप अशोक = अशोक वृक्ष। तर = नीचे। बिलोक्यो सारुसो = हनुमान जी को वह तीनों लोकों के शोक के सार के समान दिखाई पडा। सार = शाला, घर।

२—माली मेघ माला = वहाँ बादल माली का काम करते हैं। वनपाल ' ''भट = बडे भयंकर (बलशाली) योद्धा उसके रक्षक थे। सुधासार नीर = अमृत रस। मेघनाद = (बादल की गरज के समान शब्द करने वाला) रावण के लडके का नाम है। तें = से। दुलारो = प्यारा। अति ''धीर को = रावण को हृदय से वह बाग प्यारा था। जानि सुनि = जानकर और सुनकर। दरस पाय = दर्शन पाकर, देखकर। पैठो = बैठा। वाटिका = बाग। बजाय बल रघुबीर को = रामचन्द्र जी के बल को प्रकट करना। विद्यमान = मौजूद। तहस-नहस = नष्ट कर दिया। साहसी समीर को = साहसी हनुमान जी ने।

३—(हनुमान जी की पूँछ से आग लगाई जा रही है) वसन बटोरि = वस्त्र इकट्ठे करके। बोरि बोरि तेल = तेल में डुबो डुबो कर। तमीचर = राक्षस। खोरि = गली। लँगूर = पूँछ। कौतुकी = खेल करने वाला। डरात'' कै कै = अपने शरीर को ढीला अथवा छोटा करके डरने का बहाना करता है। लात के कूर हैं सहे = लातों की चोट सहते हैं और चित्त में समझते है कि मूर्ख हैं। कूर हैं = बेवकूफ हैं। बाल '' 'गारी देत = राक्षसों के बालक किलक कर [हँस कर] ताली बजाते हैं और गाली देते हैं। निसान = नगाडे। तुर = तुरही, मुँह से बजाने का बाजा। बालधी = पूँछ। बिंध की दवारि = विंध्याचल की अग्नि है। दवारि = जगल की अग्नि। कैधौं = अथवा, या। कोटिसत सूर हैं = सैकडों कोटि सूरज हैं।

(४) लाइ आग = आग लगा कर। बाल जाल = बालकों का समूह। लघु ह्वै = छोटा हो कर। निबुकि = बधन से निकल कर। बिसाल भो = बडा हो गया। कपीस = हनूमान जी। बाल धी = पूँछ। कनक कँगूरा = सोने के कँगूरा। ठाडो तेहि काल भो = उस समय खडा

हुआ। व्योम = आकाश। हहरात भट = योद्धा घबडाते है। काल तें कराल भो = मृत्यु से भी भयंकर। कृसानु = अग्नि। नख = नाखून। रिस लाल भो = क्रोध मे लाल हो गया।

५—विकराल ज्वाल–जाल = भयंकर अग्नि का समूह। लोलिवे कों = खाने को। रसना पसारी है = जीभ फैलाई है। व्योम वीथि का = आकाश मार्ग, तारों की एक सडक सी दीख पडती है, आकाश गगा। हरि धूमकेतु = बहुत से पुच्छल तारे (धूम्रकेतु)। उघारी है = निकाली है। सुरेस चाप = इंद्र धनुष। कैधों दामिनी कलाप = अथवा बिजलियों का समूह क्रीडा (खेल) कर रही है। कैधों ' भारी है = अथवा सुमेरु पहाड से अग्नि की बडी लम्बी चौडी नदी निकली है। जातुधानी = राक्षसी। अब नगर प्रजारी है = अब नगर को भस्म कर देगा।

६—बुबुक = भभक, लौ। बुबकारी देत = डर कर चीख मारते है। निकेत = घर। धाओ धाओ = दौडो दौडो। कहाँ तात = भाई कहाँ। भामिनी = स्त्री। भाभी = भाई की स्त्री। छोहरा = लडके। भोरे = मूर्ख। छोरी = खोल दो। घोरा = घोडा। महिष = भेस। बृषभ = बैल। छेरी—बकरी। सोवे सो जगावे = जो सोता हो उसे जगाओ। न लागिरे = मत छेडो।

७—हाहाकार = रोना चिल्लाना। धरो धरो = पकडो पकडो। धाये = दौडे। सूल = त्रिशूल। सेल = बरछी। पास = फाँसी। परिग = कुल्हाडी, फरसा। दड = दंडा, लाठी। भाजग सनीर = पानी से भरे बर्तन (आग बुझाने के लिये)। समिध = यज्ञ में जलाने की लकडी। सौंज = सामान। पु गीफल = सुपारी। धान = चावल। स्रुवा = हवन करने का चमचा। हवि = साकल्य, हवन की सामिग्री। तुलसी समिध ' 'हनुमान है = तुलसीदास जी कहते है कि लंका यज्ञकु ड है, राक्षसों का सब सामान समिध है, राक्षस लोग सुपारी, जौ, तिल और चावल हैं, पूँछ अग्नि में साकल्य छोडने की श्रुवा है, बलवान वैरी ही साकल्य है, हनूमान जी की पूँछ 'स्वाहा' मंत्र है, जिसके साथ हनूमान हवन करते है।

८—गाज्यौ = गरजा। गाज ज्यों = विजली की भाँति। विराज्यो ज्वालजाल-जुत = अग्नि के समूह सहित शोभित हुआ। रावनो = रावण। जातुधानधारि = राक्षसों की सेना। उलहैं = उडेलते हैं। न सावनो = श्रावण के महीने मे भी नही वरसता। लपट • वात = हवा के जोर से चलने से आग की लौ भयानक हो गई। भहराने भट = योद्धा घवरा कर भागे। पगावनो = भागदौड। ढकनि ढकेलि = जवरदस्ती ढकेल कर। सचिव = मत्री। चले लै ठेलि = ढवों मे रावण को जवरदस्ती से ले चले। अनल = अग्नि। नाथ न चलैगो वल = हे स्वामी अव वश नही चलेगा।

९—सिहनाद = सिह के समान गर्जन। मारुत = हवा। मारतड = सूरज। वेग •वावनो = रावण कहता है हनूमान ने शीघ्रता में पवन तेजी मे करोडों सूर्य्य, भयकरता मे काल वडाई में वावन भगवान को भी हरा दिया है। वावनो = विष्णु का वामन अवतार। सो साहव अवै आवनो = ऐसा स्वामी अव आनेवाला है। वामदेव = शिवजी। विषम = अनमेल, वेमेल। काहेकी वढावनो = रामजी के क्रोध करने पर शिवजी की भी कुशल कैसी? अर्थात् नहीं हो सकती है। ऐसे वलवान से वैर वढाना व्यर्थ है।

१०—पानी पानी = आग वुझाने के लिये और घवडाहट से लगी हुई प्यास वुझाने के लिये रानी पानी पानी कहती है। जाति हैं चालि है = हाथी की जैसी मस्त चाल चलने वाले रावण की रानी डर के मारे भागती है। विसारें = छोड देती है। आनन = मुँह। क्यों है कोऊ पालि है = कोई किस भाँति रक्षा करेगा। मँदोवे = रावण की स्त्री मन्दोदरी। कान कियो न = ध्यान नही दिया। केतो = कितना। कालि = कल। वापुरो = वेचारा। वलाइ = आपत्ति। घने घर घालि है = वहुत से घर नष्ट करेगा।

११—विगारेउ = नुकसान, हानि। हार सों = खेत से, वाग से। निपट = विलकुल। न लख्यो विशेषि = विशेष रूप से किसी ने न समझा कि वानर क्यों निडर है। रावण के सामने साधारण वन्दर तो

डर जाता। कहि कुल के कुठार सों = मेघनाद से कहकर। पूतऊ = बेटे भी। अनेरे = मूर्ख,। साँपनि सों खेलें = जान जाने के काम करते हैं, मरने से नहीं डरते। मेलैं गरे छुरा धारसों = छुरे की धार गले पर रखते हैं, खतरनाक काम करते हैं। बिगोवे = गाली देना। दाढी जारसों = मेघनाद को सम्बोधन कर के, (जिसकी दाढी जल जाय) गाली दी जो प्राय स्त्रियाँ दिया करती हैं।

१२—डाढत = जलती हुई। परानी जाहि = भागी जाती है। केसरी-कुमार = हनुमान जी। दस माथ तिय = रावण की स्त्री। तिलौ न •• अगार को = तिलभर भी घर का सामान बाहर न हुआ, अर्थात् जल गया। असबाब = माल। डाढो = जलगया। जिय की भँडार को = प्राणों के सँभालने की पडी थी साज सामान को कौन ले जाय। खीझति = गुस्सा करती हैं, खिसियाती है॥ बयो लुनियत = बोया हुआ काटते है। बीसबाहु दस माथ सों = रावण से (बलवान् बनते थे पर कुछ न हुआ यह कटाक्ष है)।

१३—लाइ लेत क्यों न हाथ सों = हाथ का सहारा क्यों नहीं देता है। अतिकाय अकंपन = एक राक्षस का नाम है। भौंडे = धूर्त, निकम्मे। तिय साथ सों = गँवार स्त्री का साथ छोड कर भागा जाता है। बढाय बाहैं = साल के पेड से भी लम्बी भुजाएँ होते हुए भी निकम्मे हो। बालिसो = मूर्ख लोग।

१४—कोट ओट = परकोटे की आड में। अगार = घर। पौरि = देहली। खोरि खोरि = गली गली। झहरावे = झाडता, फटकारता है। झरैं बूँदियाँ = बूँदी, निकुती सी झडती है। लंक पागि है = लंका को पिघला कर बूँदियों को पागता है। चित्रहू • लागि हैं = बन्दर की तस्वीर से भी अब कभी छेडछाड न करना।

१५—धीय = लडकी। पूत = पुत्र। धूम धुंध अंध = धूऍं से अंधे धुंधे हो गये। बारे बूढे = छोटे बडे। बारि बारि = पानी पानी।

चार बार = हर दफे। रौंदि खौंदि = रूँदना खूँदना, भीड में धक्का देकर आदमी एक दूसरे के ऊपर गिरते पडते भागते हैं उसे रूँदना कहते हैं और किसी के ऊपर चलना खूँदना कहलाता है। बिललात = बिलबिलाते हैं, घबडाते है। तौंसियत = तपे जाते है। झौंसियत = झुलसे जाते है। झारही = लपट से।

१६—दसँ दिसि = दसों दिशाओं में। कौन काहिरे = कौन किसका है। ललात = तरसते है। पाइमाल जात = पामाल, नष्ट, पददलित। निवाहिरे = हम को बचाओ। (वे सब आपस में परस्पर कहते है।) पराहिरे = भाग जा। बीस चख चाहिरे = बीसो आँखों से (खूब) देख ले।

१७—बीथिका = गली। अगार प्रति = हर एक घर मे। पगार = दीवार। अध ऊर्द्ध = नीचे ऊपर। विदिसि दिसि = प्रत्येक दिशा में। तिलोकिये = तीनों लोकों में। सिखाओ मानो = सीख मानो। सतराइजात = अकड जाता था।

१८—रौज = भाग दौड। काढौ = निकालो। सौज = सामान। ओंजि = उँडेल कर। बनत न आवनो = अब नहीं आया जाता। (डरकाभाव) एक परे गाढे = कोई कोई गहरी विपत्ति मे है। डाढन ही काढे = जलते हुए निकाले गये। अजहूँ = आज भी, अब भी। नीके कपि = (वक्रोक्ति-अलकार) अच्छा बन्दर लाये, कैसी शुभ घडी पर बन्दर पकड के लाये। बाल = बालक (मेघनाद पर कटाक्ष) गाल को बजावनो = बक बक करना बावरे हो रावरे = आपलोग पागल तो नहीं हो। सिंधु = समुद्र। औरै आगि मावनो = यह आग नही है, वर्षादि से भी नहीं बुझती, यह पापों का फल है। (भेदिकातिशयोक्ति) सावनो = श्रावण के बरसाऊ बादल प्रलय-पयोद = सृष्टि के नाश करने के बादल।

१९—बोले = बुलाये। रावन रजाइ = रावण की आज्ञा पाकर। आए जूथ जोरिकैं = इकट्ठे होकर आये। बुताओ = बुझाओ, ठडा करो। वेगि = शीघ्र ही। महावारि बोरिकैं = बहुत से जल में डुबाकर। पाथप्रद-

नाथ = बडे बडे बादल । घोरि कै = गर्जना कर के । जीवनते जागी आगी = पानी से आग और तेज हुई । चपरि = जल्दी से । भभरि = घबडा कर । मुख मोरिकैं = मुँह मोड कर, छुपाकर ।

२०—इहाँ = आग बुझाते हुए । ग्लानि = लज्जासे । गरं = गलता है । (कि हम से आग न बुझी) । सूखे सकुचात = पानी से खाली हो कर सूखे सकुचाते है । जुग-षट भानु = (छ के दूने) बारह सूरज । प्रलय कृसानु = सृष्टि का नाश करने की प्रचंड अग्नि । शेष मुख अनल = शेषनाग जी के मुखकी अग्नि (विष से भरी अग्नि) सर्पोसमान = घीके समान पानी जलते हुए न सुना । सचिवन्ह = मत्री लोगों ने । ईस बामता बिकार है = ईश्वर से विरुद्ध रहने का नतीजा बुरा है ।

२१—हिमवानु = चन्द्रमा । डवॉडोल है = काँपते है, डरते रहते हैं । माहिच महेस = महादेव से रक्षक है । संकित मोहि = विष्णु मुझ से डरते है । महातप साहस = तपस्या के बल से । दूजो न विराजे राजा = दूसरा राजा शोभा नही देता है । वाजे वाजे = कोई कोई । ओल = आड, गिर्वी किसी राजा का पुत्र या और कोई प्यारा गिर्वी रहता है कि वह सन्धि न तोडे । बाम होत मोहू सो = जो मुझ से विपरीत हो । बावरे से बोल हैं = पागलों की सी बातें करते हो ।

२२—व्याल पालक = सर्पो का स्वामी, वासुक । नाकपाल = इन्द्र । सुभट समाज हैं = जो योद्धा सभा मे है । मनहूँ अकाज आनै = जो मन मे भी आपका बुरा विचार करे या लावे । रामकोह-पावक = राम जी का क्रोध अग्नि के समान है । समीरसीयस्वॉस = राम जी के वियोग मे सीता जी का आहे भरना ही उस अग्नि को और भी तेज करने वाली हवा है । ईस बामता बिलोकु = ईश्वर की प्रतिकूलता देखो । बानर को ब्याजु है = बदर का बहाना है । प्रचारि = ललकार कर । तो सो सूर सिरताज = जहाँ तेरे समान शूरवीर मौजूद है (उसका कुछ न विगाड सके) । पान = पीने की वस्तु । पकवान ··· को = भाँति भाँति के भोजन तरह तरह के भोजन ।

२३—सँधानी = अचार, चटनी। विविधि विधान = तरह तरह के। बरत = जलते हैं। बखारही = बुखारी में ही। कनक किरीट = सोने के मुकट। पेटारे = पिटारे, सन्दूक। पीठ = पीढ़ा। पगार = दीवार। हथिसार = हाथी बाँधने का स्थान। घोरसार ही = घुड़साल में ही।

२४—हाट बाट = बजार और रस्ते। हाटक = सोना। कनक कराही = सोने की कढ़ाई। तलफति ताप सों = तप रही है। नाना मत्र = मत्र बलवान राक्षस नाना प्रकार के पकवान हैं। भाइ सो = प्रेम से। पाहुने परोसी = अग्नि उसे खाने वाला महमान है। और पवन परोसने वाला है। वायु से अग्नि बढ़ती है और अग्नि वस्तुओं को जलाती है। तुलसी ••• रामराय सों = तुलसीदास जी कहते हैं कि राक्षसों की स्त्रियाँ गाली दे दे कर कहती हैं इस मूर्ख रावण ने राम जैसे राजा से वैर किया। (रूपकालंकार)

२५—रावण रोग = रावण रूपी राजरोग। विराट-उर = विराट शरीर वाले पुरुष के हृदय में (यहाँ संसार ही पुरुष है)। रावन सो मो = रावण रूपी राजरोग (क्षयरोग) बढ़ता ही गया। जिसके कारण विराट शरीर दिन पर दिन दुबला हो गया और सब सुख दूर हो गये। रोंक्सो = (रक) खाली। यह संसार दिन पर दिन व्याकुल होता गया और शून्य सा हो गया। उपचार = इलाज। विशोक = आराम नहीं होता। ओत पावै न मनाक सो = थोड़ा सा भी आराम नहीं मिलता है। रसायनी = रसायन विद्या जानने वाला पारा आदि धातुओं का फूँकने वाला रसायनी कहलाता है। समीर सूनू = हनुमान जी। सोधि = रसायन बनाने के पदार्थ को राक्षस रूपी बूटी मे शुद्ध करके। सरवाक सो = सकोरा, दो सरवाओं के बीच में रख कर कपर मिट्टी करते हैं। धातु फूँकते समय नीबू आदि के रस में दवायें घोटी जाती हैं। पुट पाक लंक जात रूप = लंका के सोने को पुट दे कर। धातु को किसी रस आदि में घोंटते घोंटते सुखा कर फूँकना एक पुट कहलाता है। रतन सो = रत्न को यत्न से जला कर मृगांक बना लिया। मृगांक = सोने की भस्म। मृगांक से भयानक से भयानक राजरोग दूर हो जाता है।

२६—विधूम = धुआँ रहित भस्म करके । वारिध बुताइ लूम = समुद्र में पूँछ बुझा कर । पगनि = (सीता के) पैरों मे । सहदानि = पहचान की निशानी । चूड़ामनि छोरि कै = चूड़ामनि उतारकर दी । बिहात दिन = दिन कट रहे हैं । बडी · तोरिकै = तुम से बडा सहारा हो गया था सो उसे तुम तोड कर जाते हो । सनीर नैन = नेत्रों में आँसू भर कर । निहारि कै = अत्यन्त नम्रता के साथ ।

२७—अवधि = समय । थोरिकै = थोडा सा । भानकुलकेतु = रामचन्द्र जी । कपि कटक = वदरों का झुण्ड । बटोरि कै = इकट्ठी करके । त्रिकूट = एक पर्वत का नाम है जो लंका में है । डफौरि कै = पुकार के हाँक दे कर । कूद्यो = कूदा । वातघात = हवा के सहारे चलने से जो हवा का झोंका उठा उसके बल से । हिलोरि कै = हिलोर के, उठा कर ।

२८—साहसी = निडर । लक सिद्धि · ·मसान सो = लका को सिद्धि पीठ (मुर्दे की छाती) की भाँति समझ मसान सा जगाया । जिस प्रकार मसान जगाने में मंत्र का देवता प्रसन्न होता है उसी प्रकार यहाँ सीता देवी प्रसन्न हुईं । मसान जगाना = अमावस्या या पूर्णमासी के दिन आधी रात में श्मशान भूमि में इसका अनुष्ठान होता है । सिद्ध मुर्दे की छाती पर बैठ कर मंत्र जपता है । इसमे वडे विघ्न पडते है, भूत पिशाच छेडछाड करते है । पर साहसी वीर इससे विचलित नहीं होते । डरने पर जान जोखो रहती है । देवी सिय सारिपी = सीता देवी के समान । अच्छ-धारि = अक्षयकुमार की सेना । प्रतापभानु = प्रताप का सूर्य । विसोक = तीनों लोक कमल की भाँति प्रसन्न हुए । कोक-कपि = बन्दर रूपी चकवा चकवी । (उपमा और रूपक अलंकार)

२९—किलकारी भारी = वडी प्रसन्नता सूचक वोली । सानद सचेत = आनन्द से सावधान हो गये । आजु जाये = आज पैदा हुए हो । आपस में गले मिलते है । नचत रेत रेत है = समुद्र की वालू में नाचते है । मयंद = वन्दर का नाम है । मुख · लेत हैं = मुँह वनाते हैं (आनन्द प्रदर्शन करते है) ।

३०—लँगूल = पूँछ । भो विगत स्रम सूल है = सब थकावट दूर हो गई । ताके जाके = उसके । सानुकूल = अनुकूल हैं, कृपा करने वाले हैं ।

३१ = चाय सों = आनन्द से । सिरानो पथ छिन में = थोडे समय में रास्ता तै हो गया । पेलि पैठि = जबरदस्ती घुस गये । देवान गे = न्यायालय में गये । तुलसीस = रामचन्द्र जी । महामोद = बडे आनन्द मे लवलीन, परमानन्द मे ।

३२—कुबेर का नगर = लंका, रावण के बडे भाई कुबेर की थी । उससे रावण ने छीन ली थी । निरमान भो = बनाया गया । ईसहि = महादेव जी को । रजतेज को निधान भो = रजोगुण के तेज का भंडार, रजोगुणी । समृद्धि = शक्ति, ताकत । मौज सपदा = धन की सामिग्री । चाखि राखी = सुरक्षित करके रख ली । जाँगर = खाली । तीसरे दान भो = समुद्र के पास तीन दिन के उपवास के पीछे एक दिन मे विभीषण को दान दे दी । (राम की निर्लोभिता दिखलाई है) ।

लंका कांड

१—पहार = पर्वत, पहाड । पयोधि तोपि है = समुद्र पाट देंगे । बरिबंड = बलवान । बाहुदंड = भुजदंड (रावण के) । खंडि = तोडकर मंडि लोपि है = भूमण्डल के जीतने वाले बलवान रावण की मर्यादा नाश करके पृथ्वी को ढक देंगे । उछाह = उत्साह । काहुन के = किसी के । पोखरोपि है = विश्वास करके । बाचि है न पाछे = पीछे यह रावण नही बचेगा । मुरारि = विष्णु भगवान । त्रिपुरारि = महादेव । रन रारि का = रणक्षेत्र मे युद्ध के लिये । कोसलेस = रामचन्द्र जी ।

२—त्रिजटा = एक राक्षसी का नाम है । तुलसीस्वरी = तुलसी + ईश्वरी अर्थात् सीताजी । सोपिहैं = सोख लेंगे । सँघारि = नाश करके सकुल जातुधान धारि = सम्पूर्ण राक्षसों के समूह को । जंबुकादि = सियार आदि माँस खाने वाले जानवर । जोगिनी जमाति = योगनियों का झुँड ।

कालिका कलाप • कालिकाओं का झुंड। तोपि हैं=संतुष्ट करेंगे। निवाजि हौं= रक्षा करेंगे। बजाग के=प्रकट करके। विभीषनै=रावण के भाई का नाम विभीषण है। बाजने=बाजे। विबुध=देवता। पोपिहैं=पालन करेंगे। कीट=कीडा, अर्थात् बहुत ही छोटा। रोपि हैं=क्रोध करेंगे।

३—आरजसुवन=आर्यपुत्र,पति। (स्वामी को स्त्रियाँ आर्यपुत्र कहती हैं)। कटक कुलि=कुल सेना। दूत दारुण दवनिके=खोटे राक्षसों के दूत। मिटे • भुवनके=संसार से राक्षसों का नाश होगा अर्थात् राक्षस रूप निशा के मिटने से अंधकार दूर हो जायगा। लोक पति सोक कोक= चक्रवाक के समान दुखी लोकपाल या राजा। कपि कोकनद=कमलरूपी बंदर। आदित उवन के=सूर्य के निकलने से।

४—सुभुज=सुबाहु नाम का राक्षस। त्रिसिर=तीन सिर वाला निशाचर। दलन=मारने में। आनि=लाकर। परवाम=दूसरे की स्त्री। विधि वाम=जिससे ब्रह्मा भी विरुद्ध है (रावण)। सकत काँध्यो= ऐसे राम से क्या रावण युद्ध ठान सकता है। घैरु=हाहाकार। पाथोधि =समुद्र। नसत गाँध्यो=लंका में रावण जैसे पापी राजा के कारण कोई पका हुआ भात (भोजन) नहीं खा सकता है डर के मारे खाने पीने की भी सुध न रही। (अर्थान्तरन्यास)

५—बिस्वजयी=संसार के जीतने वाले। भृगुनायक=परशुरामजी। विस्वजयी • • • हजारी=श्री रामचन्द्रजी से संसार के विजयी सहस्रबाहु के मारने वाले परशुरामजी भी हार गये। बातुल=बकवादी। मातुल=मारीच, यह रावण का मामा था। अजहूँ=अबभी। मिले= मिलने पर। फिर गजारी=नहीं तो फिर मालूम पडेगा कि कौन हाथी है कौन सिंह है अर्थात् कौन बहादुर है। कीत्ति जन=जिस आदमी के काम बडे होंगे उसकी बडाई भी बहुत होगी। बात बजारी=जिस आदमी की खाली बातें बडी हैं वह तो कोरा बकवादी है, बडा बजारू है अर्थात उसकी बात का कोई विश्वास नहीं गप्पी है।

६—पाहनसे बन वाहन = पत्थर नाव जैसे होगये । जप रामरटे = राम राम रटते हुए । बनरा = बंदर । बल बारिबढे = पानी का बल बढने पर । आयसु = आज्ञा । कौतुक = खेल ही खेल में आसानी से । चतुरग चमू = चतुरंगिणी सेना यानी जिसमे रथ, हाथी, और घोडा पर सवार तथा पैदल सैनिक होते है । पल मे दलिकें = पलभर मे नाश करके । रन गढे = युद्ध मे निकम्मे रावण की हड्डियाँ तोड दी ।

७—बिपुल = असख्य, बहुत से । करपा = क्रोध । ताल तमाल = लम्बे लम्बे और ऊँचे पेड होते है । तमाल का रग काला होता है । तोपैं तोयनिधि = समुद्र पाट दिया । सुर को समाज = देवताओं की सभा । दिग कुँजर = दिशाओं के हाथी । टगे = हिलने लगे । कमठ = कच्छप । कोल = शूकर । धराधर धारि = पर्वतों का समूह । पृथ्वी इनके बोझसे दबी हुई है इसमे हिलती नही है । धराधर = शेषनागजी । धरपा = मलिन हुआ । तमकि = क्रोध करके ।अटक = रुकावट । अमरपा = क्रोधित हुआ ।

८—सुक सारन = रावण के दूतो का नाम है। पुलक फहमही = स्मरण करते ही डरके मारे रोमाञ्चित होगये । रहे कहाँ = ऐसे विशाल अब तक कहाँ रहते थे । समाहिगे मही = धरती पर कहाँ समावेगे । सहमही = डर के मारे । विधि = ब्रह्मा । हरि = विष्णु । हरहू = महादेव जी । रहम = दया मे ।

९—सोई बानर = वही बदर (हनुमानजी) बहोरि = फिर । सोर = हल्ला । जुबराज = युवराज अंगद । काढे सौज = सामान निकाले । धौंज = भाग दौड । पोच भई महा = बडा बुरा हुआ । गाज्यो = गर्जा । सपथ = सौगद । गाजे गाज के = बिजली के गरजने पर । बातजात = हनुमानजी । सुरति = याद । लवा = बटेर । लुकात = छुप जाती है । झपेटे = झपट्टा, हमला ।

१०—तुलसीस बल रघुबीरजू के = रामचद्र जी के बल पर । चाहि न गनत = उसको (रावण को) कुछ नहीं (समझता) गिनता ।

क्ररेरी सी = कडी । वखसीस = इनाम । ईसजू = महादेवजी । खीस = नष्ट । रिस'' 'तेरीसी = तुझे क्रोध क्यों आता है मैं तो तेरे भले की वात कहता हूँ । चढि ' ढेरीसी = जब बंदर क्रोध करके किले, छत कोट की बुर्जोंपर चढ़ेगे तो जरा से धक्का देने मे (लंका को) ढेलो की ढेरी सी गिरा देंगे । हाथ लका लाइहै ' हथेरी सी = अगर लंका से हाथ लगवेंगे तो सब बरवाद हो जायगी (मैदान सा हो जायगा) ।

११—तालऊ बिसाल बेधे = बडे ताल के वृक्ष भी बेध दिये (जब बाली को मारा था तब सात वृक्ष बेधे थे) । कौतुक कालि को = कल का खेल है । बिसिप = बाण । बाँकुरो = बाँका । तोहू है '''बालि को = तुझे भी बलशाली बालि का बल मालूम है । सक = डर, भय । मेरो कहा जैहै = मेरा क्या जायगा । कुचाल को = बुरे चलन का । बीर-करि-केसरी = वीर रूपी हाथियो के लिये सिंह । कुठार पानि = परशुराम जी । तेरी क्या चली = तेरा क्या सामर्थ्य है । बिड = धूर्त । तोसो घालि को = तुझे कोई पासग (थोडा भी) के बराबर भी नहीं गिनता है ।

१२—बौरे = बावले । भीति में दौरे = कहावत है, दीवार की ओर दौडने से सिर मे चोट लगेगी, दीवार का क्या बिगडेगा । ऐसिय '' .. तोहिधौ = ऐसा ही तेरा हाल है । धौ अव्यय है जो भाव को जोरदार बनाता है । नतु = नहीं तो । न राखि सके = रक्षा नहीं कर सकते है । सौ = समान ।

१३—हूँ ' ' हौ हौ = तू राक्षसो के राजाओ का राजा है और मैं राम के सेवक सुग्रीव का दास हूँ । स्वान = कुत्ता । हरौ = तोड डालूँ । न डरौं ' जो हूँ = यदि राम की आज्ञा भग का मुझे डर न होता तो । खेत ' '' तौ हौं = मैदान मे जिस प्रकार सिंह हाथी को पछाडता है उसी प्रकार तेरे दल को मैं पछाड दूँ तब तू मुझे बालि का बेटा समझना । (पूर्णोपमा)

१४—कोसलराज = राम। उपारि लै = उखाड कर । बारिध बोरौं = समुद्र में डुबा दूँ। महा॰ फोरो = मै (राम की आज्ञा भग का डर न होता तो) ब्रह्माण्ड को भी अपने हाथों की चपेट से चटाक शब्द के साथ तोड सकता हूँ (लका तो कुछ नही) । सोनित खोरौं = खून मे नहा लूँ । रद तोरौं = दाँत तोड डालूँ ।

१५—अति कोप = बडे क्रोध के साथ । ससकित = डर गई । घननाद से = (घन इव नाद) मेघनाद के समान वीर । पचारि कैं = ललकार कर । हारि पचा = सब राक्षसों की सेना पचिहारी पर पेर न उठा । न टरै रचा = पैर सुमेरु पर्वत से भी भारी हो गया ऐसा जान पडता है मानो ब्रह्मा ने पृथ्वी के साथ ही रचा है— अलग नहीं ।

१६—लागे टसकतु है = योधा इकट्ठे होकर एक साथ लगे पर हिलता भी नहीं है । तज्यौधीर धरनि = धरती ने धीरज छोड दिया । धरनिधर = पहाड । धराधर = शेष नाग । महाबली मसकतु है = बालि का बेटा अगद इतना बलवान है कि दबाने से धरती हिलती है, समुद्र उछलता है और सुमेरु पर्वत धसकता है । कमठ = कछुआ । घठा = पुरा बार बार चोटों से कुछ निर्जीव सा चमडा हो जाता है । कमठ कसकतु है = कछुए की पीठि पर मदराचल पर्वत के बार बार मथने से पुरा पड गया है अब वही काम आया अर्थात् उसमे दर्द नहीं हुआ पर बोझ इतना भारी है कि कलेजे मे दर्द होने लगा ।

समुद्र मथने के समय मदराचल पर्वत राई (मथनी) की भाँति घुमाया गया था । विष्णु भगवान ने कछुआ बनकर मदराचल को अपनी पीठ पर धारण किया था । क्योंकि पर्वत बहुत भारी था डूबने का डर था । पर्वत के घिसने से कछुए की पीठ मे गड्ढा सा पड गया था ।

१७—कनकगिरिशृ ग = स्वर्ण पर्वत की चोटी पर । मर्कट कटक = वानरों की सेना । वदति = कहती है । परम भीता = अत्यत डरकर ।

२४—उदधि = समुद्र । उतरत = पार होने में । वार = देर । केसरी कुमार = हनुमान । अदड = (अदंड्य) जिसको दंड नहीं दिया जा सके । डाँडिगो = दड दे गया । रच्छकनि = रक्षकों को । भट · काँडिगो = आपके बडे बडे योद्धाओं रूपी धान कूट कर चावल निकाल गया । विद्यमान = मौजूद होते हुए । जुवराज = पम्पापुर का युवराज अंगद । छोहाइ छाँडिगो = दया करके छोड गया । कहे की न लाज = कहने की शर्म नही है । अज हूँ = अब भी । बाज = (उर्दू का महावरा है) छोडना । गढ राँड कै सो = विधवा अर्थात सामर्थ्य हीन के किले की तरह । भाँडिगो = खखोर गया सब बर्तन आदि को भी देख गया ।

२५—दुसह = असह्य । त्रिदोप = वात, पित्त, कफ तीनो के कुपित होने से जो कठिन बीमारी होती है अर्थात् सन्निपात । दाह = जलन । क्षत्री खोज = क्षत्रियों का चिह्न । खलक = दुनियाँ । महिष्मती = नगरी का नाम है । सहस बाहु = सहस्र बाहु जिसने रावण को पराजित किया था परंतु जो परशुराम द्वारा मारा गया । समर समर्थ = युद्ध मे सामर्थ्य वान । हेरिये = देखिये । हलक मे = कठ मे, हृदय में । सहित · · · छलक मे = परशुराम जी के बल रूपी सागर की तरग मे सहस्रबाहु व उसका सेना रूपी जहाज डूब गया । टूटत पिनाक के = (रामचद्रजी द्वारा) शिवजी का धनुष टूट जाने पर । मनाक = थोडे ही । बाम = विरुद्ध, कुपित । नाक बिनु भये = बिना नाक (प्रतिष्ठा) के हो गये अर्थात् प्रतिष्ठा खो बैठे ।

२६—छोनी = छोणी । छत्री बिनु = बिना क्षत्री के कर दिया । छोनिप-छपनहार = राजाओं के मारने वाले । कुठार-पानि = कुठार है जिन के पानि (हाथ) मे, परशुराम । बीर बानि = वीरों का जैसा स्वभाव ब्राह्मण होकर क्षत्रित्व दिखाना । धनुहाई है = धनुभग होगा । नाक राम = रामने धनुष-भग होने पर, नाक भौं चढाने पर अर्थात् थोडा क्रोध करने पर उन्हे देखकर । लोक . .भानि के = लोगों का भारी भ्रम कि परशुराम अजेय हैं, अवतार है या नही इस भाव को दूर करके । रोस्यो

परलोक = परशुराम के स्वर्गलोक जानेकी शक्ति रोक दी। पै = पर (जो राम राजा व लोक पालों पर कृपालु हैं)। जब··· अनुमानि कै 'जब धनुष टूट गया तो हयहयराज भी हार मान गया। पिय = हे पति।

२७—कह्यो मत = सलाह दी थी। मातुल = माता का भाई, मामा। आँचर पसारि = ओढनी फैला कर अर्थात् अत्यन्त विनती के साथ माँगना। लै लै = छू छू कर (पैरों पडी)। बिदेहपुर = जनकपुर। भृगुनाथ गति = परशुराम की दशा। समय सयानी = समय के अनुकूल चतुरता। जैसी आय गो परी = जैसा अवसर सामने आया। वायस = इन्द्र का पुत्र जयत, जिसने कौआ बन कर सीता के चरणों में चोंच मारी थी। बिराध खरदूषन, कबन्ध = ये लोग राक्षस थे। बैर परी = राम से बैर करने में किसी का पूरा नहीं पडा है। कंत = हे स्वामी। बीस लोचन = रावण (यहाँ विशेष आलोचक का भाव है)। बिलोकिये = देखिये, समक्ष देखिये। कुमत फल = बुरी सलाह का फल। ख्याल··· झोंपडी = हनुमान ने लका को अनाथ के घर की भाँति जला दिया।

२८—सो = मे। साम किये = सन्धि करने मे। कोमल काज = सीधे काम को। आपन सूझि कहौं = मैं जो समझती हूँ कहती हूँ। जूझिबे नाठे = युद्ध करने योग्य अवसर नहीं है। लडने मे नष्ट हो जाओगे। नाठे = नष्ट। साठे = जिद करने से, अकडे रहने से। सायर-काँठे = समुद्र के पास।

२९—कपि भालु चमू = बन्दर रीछों की सेना। जम = यमराज। कालकराल = कठोर काल। पहारी है = पहरेदार। बक महागढ दुर्गम = अत्यत ही कठिन। ढाहिबे = नाश करने। दाहिबे = चलाने। कहरी = क्रोधी। तीतर-तोम = तीतर पक्षी का समूह। तमीचर-सेन = राक्षसों की सेना। हिये हहरी है = दिल में घबडा गई है।

३०—बीर बानइत = नामी योधा। जानत = जानते है। संजुग समाज की = लडाई लडने की सामिग्री। चपरि = शीघ्रता से रातिचर-राज = रावण। किलकत = किलकारी देते है। ललकत = ललचाते है। कगाल = भूखा। पातरी सुनाज की = स्वादिष्ट भोजनो की पत्तल। खेलवार = खिलाडी। सीस ताज बाज की = बाज की टोपी खोली। शिकारी लोग प्राय बाज की आँखे एक टोपी मे ढके रहते है और शिकार पर छोडते वक्त टोपी को उतार लेते है।

३१—सानि कै सनाह = बख्तर पहिन कर। गजगाह सउछाह दल = सेना बडे उत्साह मे थी। मेरु मदर से = सुमेरु और मदराचल पर्वत जैसे। नार निधि तीर के = समुद्र के किनारे के। तमकि क्रोध मे भर कर। ताकि = देखकर। जुद्ध = लडाई। सेनप = सेनापति। भट भीर के = योद्धाओं के समूह को। झुकरे मे नाचे = नशे मे जिस प्रकार झुक झुक कर नाचते है।

३२—तीखे तुरग कुरग = (तीक्ष्ण) हिरन के समान तेज चलने वाले घोडे। सुरगन = अच्छे रग वाले। साजि चढे...छबीले = साज सजाकर जिन पर सुन्दर छट हुए छैला चढे हुए थे। कबहूँ ' 'ढीले = लडाई मे कभी कायरता का विचार भी नहीं किया। ढीले = शिथिल, कायर। गज के लौ = हाथी को देखकर जिस प्रकार सिह झपटता है, उसी प्रकार। पटके = मार गिराये। सलीले = सजीले शानदार, प्रतिष्ठा वाले। हठीले = जिद्दी जो चाहे उसे करके छोडे। घूमि = चक्कर खाकर।

३३—सजोइल चुने हुए। सुबाजि = सुन्दर घोडे। सुसल = भाला धरे हुए। बगमेल = कतार बाँधकर। भारी भरी = भारी और मजबूत बाहे। सब है = सब प्रकार से सुन्दर। जिन्हे धाये = जिनके दौडने से। धुकै = हाँफने लगे जल्दी जल्दी साँस लेने लगे। धरनीधर = शेषनाग। बोर धकानि सो = दौड के धक्को से। ते रन ' ' हले है = जिस प्रकार कोई दानी पुरुष लाखो रुपयों का दान करके दरिद्री की दरिद्रता दूर कर

देता है । उसी प्रकार लक्ष्मणजी ने रणस्थल रूप तीर्थ-स्थान मे लाखो बाण चलाकर दरिद्रता रूप दलो को नाश कर दिया ।

३४—गहि मदर = पर्वत उठाकर । यहाँ मदराचल से साधारण पर्वत का बोध है । भालु = रीछ । उनये घन = सावन की घटा घिर आई है । उत झुके = इधर (लका मे) बलवान वीर लडाई मे प्रवृत्त होगये । सुरदावन = देवताओ को पीडित करने वाला रावण । विरुझे = लड गये । विरदैत = बानेवद, नामी वीर । जे खेत अरे = जो मैदान मे अड गये । न टरे के = वैर वढाने वाले रावण के रणवीर योद्धा पीछे न हटे, डटे रहे । मारि मची = मार काट होने लगी । उपरी उपरा = कभी कोई जीतता था कभी कोई ।

३५—तोमर = बर्छा । सेल = भाला, साँग । पँवारत = फेंकते हैं । तरु = पेड । इतते = इधर से (बन्दर लोग) । खर = तीक्ष्ण । महीधर = पर्वत । करि-केहरि नाद = हाथी की और सिह की भाँति शब्द करके भिडते है या सिहनाद करके भिडते है । भट खग्ग खगे = वीर लोगो ने तलवारें घुमेड दी । खपुआ खरके = कायर भाग गये या खपुवा (खप्पर) खटकने लगे अर्थात् जोगनियो की जमात जुड आई । बिहडत = काटते थे । रुण्ड से झर के = धड से सिर अलग हो गया ।

३६—मत्त गयद घटा = मतवाले हाथियो का समूह । बिघटै = मारता है । मृगराज लडै = सिह के समान लडता है । सौह करे = सपथ करते है । हाँक दे = ललकार कर । दशानन = दस है आनन जिसके (बहुव्रीहि) रावण । जो काल ' परै = काल को भी काल रूप दीख पडता है ।

३७—कराल-बिलोकत = देखने मे बडे भयकर हैं । बिलोकत खाए = काल भी उनको नही खाता (डरता है) । रन-रौर = भयकर लडाई । बरजोर = शक्तिशाली । परे फँग पाये = अचानक चाल मे फँसा मिला । भ्रमबात = चक्कर खाती हुई हवा । भूतल = धरती ।

३८—दससीस = रावण । महीधर-ईस = ईश का महीधर कैलाश पर्वत । बीस·· हारौ = बीस भुजाओं से निधडक खेलने वाला । सहमे = डरते हैं । सुनि ··· भारौ = रावण के अटूट साहस को सुनकर जग पवारौ = अब भी जिसके बल की धाक जमी हुई है । गाज को मारौ = बज्र का मारा हुआ । सो हनूमान मारौ = उस रावण के हनूमान ने मुष्टिका (घूँसा) जमाया और वह ऐसे गिर गया जैसे बज्र का मारा पर्वत गिर जाता है । (उदाहरण)

३९—दुर्गम दुर्ग = ऐसा किला जहाँ कोई न जा सके । लक्ख मे पक्खर (प्रखर) = लाखों वीरों मे जो महाबली थे । तिक्खन तेज = प्रचण्ड तेज वाले । गाज गने हैं = बज्र के समान (मजबूत) गिने जाते हैं या वीरों मे जिनकी धाक जमी है । रन-बाँकुरे = रणधीर । हाँकि = गर्जना करके । बन्धु को = भाई को । घूमत·· ···बने हैं = जिनके बहुत से घाव लगे हुए हैं वे लोग घूमते है । नाम लै = मरने वाले राक्षसों का या मारने वाले हनूमान का नाम ले कर ।

४०—घोडे सँहारे = घोड़े से घोड़ा मार कर मार डाला । बिदरनि = फाडना, नाश करना । बलवान की = हनमान की । चचल = फुर्ती से । चपेट = धक्का मुकी या पाँव खीच कर एक को दूसरे से भिड़ा देना । चरन चकोट = लातों की चोट दे कर । हहरानी जातुधान की = राक्षसो की सेनायें घबडाकर भाग गई । सेवक ··सराहना = हनूमान की प्रशसा करते है । सराहै ·· सुजान की = चतुर स्वामी सेवक की प्रशंसा करते है ऐसी रीति होती है, इस रीति से सेवक दूने उत्साह से काम करता है । लाँमी लूम = लम्बी पूँछ । लसत · भट = लपेटकर वीरो को पटकता है । लरनि = लडने का ढंग ।

४१—दबकि दबोरे = दपट कर या झपट कर दबोच दिये । बोरे = डुबो देते हैं । मगन मही मे = पृथ्वी से चिपट कर चुपचाप पडे हैं । एक गगन उडात है = आकाश में उडते हैं । पकरि पछारि कर = किसी को हाथ पकड कर पछाड दिया । चरण ·· एक = किसी के

पैर उखाड लिये। एक लात है = कोई कोई लातों से कुचल दिये। बिबुध = देवता। चक्रपानि = विष्णु। चण्डीपति = शिवजी। चण्डिका = देवी। सिहात हैं = प्रसन्न होते हैं। बडे बडे बातजान हैं = बडे बडे बलवान और बानेयन्द वीर हनूमान ने मार डाले। बातजात = हनूमान।

४२—बरिवण्ड = बलवान। घेरिकै = घेर लिया। महाबल··· फेरिकै = महा बलवान हनूमान ने गर्जना करके पूँछ फिरा फिरा कर उन राक्षस वीरों को पटक दिया। कहैं · टेरिकै = पुकार कर कहते हैं कि हमारी रक्षा करो, तुम्हे राम की सौगध है। ठहर ठहर = ठौर ठौर पर, स्थान स्थान पर। कहरि = कराह कर। हहरि हहरि कर = खिलखिला कर। हर = शिवजी। सिद्ध = एक प्रकार की देवयोनि।

४३—जाको = हनूमान की। बाँकी = अनोखी। सहमत = डर जाते हैं। जाकी आँच = जिसकी जलाई। लाह सो = लाख सी पिघली हुई दिखाई देती है। बानइत = नामी। कपत आह सी = अकपन काँपता है, अतिकाय का शरीर सूखता है, कुम्भकरन भी आह करके रह गया। समीरसूनु = हनूमान।

४४—(हनूमान की दूँक की प्रशसा) मत्तभट = बल मे चूर। मुकुट = शिरोमणि। सइल सृङ्ग बिदरनि = पर्वत की चोटी को तोडने वाली। मत्तभट टाँकी = बल में चूर वीरो में श्रेष्ठ रावण के साहस रूप पर्वत की चोटियो को तोडने के लिये मानो वज्र की टाँकी है। दसन दिग्गज = दाँतों को धरती पर धर कर हाथी चिघारत है। सकुचित = बोझ के मारे दबे जाते है। पिनाकी = महादेव। चलित मेरु = पृथ्वी और पर्वत हलते हैं। उच्छलित' सकल = सम्पूर्ण समुद्र उछलते है। बिकल 'झाँकी = ब्रह्मा ने बहरे होकर इधर उधर झाँकना शुरू करदिया। रजनिचर-घरनि घर = राक्षसों की स्त्रियाँ

के घरों में। गर्भ-अर्भक स्रवत = गर्भ के बच्चे गिरते हैं। हाँक बाँकी = भयंकर हूंक सुनकर। (किसकी ललकार पर)।

४५—चौंक = चौंकपटे। चडकर = सूरज। थकित = थककर। बलसीम से = भीम के समान बली वीरों ने। भीमता = भयानकता। निरखि = देखकर। नयन डाँके = आँखें मूँद लीं। दास विदुष = तुलसी दास कहते हैं कि पण्डित लोग हनूमान के प्रचण्ड यश को इस प्रकार वर्णन करते हैं। बीर बाँके = कि उन्हों ने बानेवट वीरों के हृदय में अपनी धाक जमादी। नाक = स्वर्ग, नरलोक = मृत्युलोक। कोउ कहत किन = कोई कहता क्यों नहीं अर्थात् कोई भी नहीं।

४६—जातुधानावली वटा = राक्षसों की सेना रूप मतवाले हाथियों के समूह पर। निरखि = देखकर। गिरते टूट्यौ = पर्वत से टूट पड़ा। विकट चपट = असह्य तमाचा। निघटगए = खतम होगये। सत = सत्व, प्राण। परत धरनि = सब राक्षस धरती पर गिरते हैं। धरकत = डरते हैं। झुकत = झुकजाते हैं। हाट लूट्यौ = गीदड़ उन राक्षसों के माँस पर ऐसे टूटकर गिरते हैं कि मानों उठते हुए बाज़ार (हाट) को जिस प्रकार लुटेरे लूटते हैं। कुलि-कटक-कूट्यौ = सब फौज मार डाली।

४७—बिटप = वृक्ष। भूधर = पर्वत। उपारि = उखाड़ कर। पर = वैरी भी। सैनबरक्खत = सेना पर बरसाते हैं। मर्दि = मलकर। करक्खत = (कर्षत) खींचते हैं। चरनचोट = लात की मार। चटकन = तमाचा, थप्पड़। चकोट = नखों से नोचना खोसना, दांतों से काटना। अरि-उर-सिर बज्जत = वैरी के सिर और छाती पर मारते हैं। बिद्दरत = नाश करते हैं। बारिद जिमि गज्जत = बादल जैसे गर्जते हैं। लंगूर लपेटत = पूँछ से लपेट कर। पवन-नन्दन = हनूमान जी। कौतुक = तमाशा।

४८—अँग अँग दलित = प्रत्येक अँग घायल होगया है। ललित फूले = टेसू की भाँति लाल। लषन = लक्ष्मण। बिदारे = मारे। कवध

के कदम्ब = केवल धडो के समूह । बब सी करत = मानो ब, ब बोलते है । लावौ = (लाघव) फुर्ती, चतुरता । रावौ वान के = राम के वाणो की । मसान = श्मशान भूमि रणस्थान ।

४९—लोथिन = लाशो से । गिरिन = पर्वतो मे । गेरु = रग विशेष जो प्राय खान से निकलता है । सोनित घोर = खून की भयकर नदी । हाथी भारे = हाथी भारी भारी किनारे हैं । बाजि परत है = घाडा रूप वृक्ष किनारे से टूटकर गिरते है । सुभट शरीर = भारी भारी योधाओ के जो शरीर है (रूपक) । नीरचारी = जलजीव है । सूरनि = योधाओं का । फेकरि फेकरि = चिल्लाकर । फेरु = गीदड । काक = कौआ । कक = गिद्ध ।

५०—(घृणा भाव अर्थात् वीभत्स रस) ओझरी = पेट की झिल्ली । काँधे = कधे पर । + सेटही = पगडी । मूड के = सिर के । खप्पर कोरिकै = उन्ही खोपडियो को खोदकर खप्पर बना लिया है । गूदा = गोश्त । सतुआ से = सतुआ की भाँति । प्रेत एक = कोई प्रेत । बहोरि = फिर । भूतनाथ = महादेव ।

५१—ते चले = से छूटे । हडावरि = हाडो का जाला । रावन गनी = धीरजवान रावण को कुछ दु ख नही हुआ । जूटी = इकट्ठी होगई सोनित जटे = खून की बूँदो की छटा से । प्रभु सोहैं = प्रभु शोभा देत है । महाछबि छूटी = बहुत ही सुन्दर दीख पडते है । मानौ बहूटी = मानो नील मणि पर्वत पर बीर बहूटी (एक लाल रग का पौदा जो बरसात के दिनो मे दीख पडता है) फैली हुई चलती है ।

५२—मानी = अभिमानी । पुकारि = पुकार कर ललकार कर । आपने ढील की = अपना अपना पुरुषार्थ दिखाने मे कमी नही की । लषन-लाल = लक्ष्मणजी । बिलखाने = दुखी हुए । जगन्निवास दीलकी = राम के चित्त की, (राम के अरमान रह गये) । लका जीतना, सीता का पाना, अयोध्या जाना आदि । न सबीलकी = प्रबध नहीं किया । वोह

बोले की = शरण में लेने की । नेवाजे की = रक्षा करने की । सभार सार (सार-सँभार) = देख रेख । सील की = सरल स्वभाव की ।

५३—आनन ... ... लियौ है = मुख की शोभा ने चन्द्रमा की शोभा जीत ली है । कपि पालि = बन्दरों की रक्षा करके । तीय हरी = स्त्री हरली गई । रनबन्धु परयौ = लड़ाई में भाई मूर्छित पड़ा है । पैं हियों है = हृदय में शरणागत का सोच भरा है कि उसकी बात पूरी नहीं हुई । बाँह-पगार = भुजा ही जिसकी शरणागत की रक्षा के लिये पगार (चहार दीवारी) है । बियो = दूसरा ।

५४—(हनूमान का सञ्जीवनी बूटी लाना) बिलम्ब न लायो = देर नहीं की । मारुत कौ = आँधी का । मन चंचल कहा जाता है । खगराज = गरुड़ । बेग लजाय = हनूमान जी इतने तेज दौड़े कि पवन, मन और गरुड़ भी नहीं चल सकते है । तीखी तुरा = तीक्ष्ण त्वरा, बहुत तेजी से । पैं आयो = हृदय में उपमाही नहीं सूझ पड़ी । मानों धायो = हनूमान जी इतने तेज दौड़े मानो आकाश में पर्वतों की लकीर सी बन गई थी । (उत्प्रेक्षालंकार)

५५—चल्यो हनूमान = हनूमान सजीवन बूटी लेने गये हैं । सुनि जातुधान = रावण ने सुना । काल नेमि पठ्यौ = काल नेमि को भेजा । मुनि भयौ = मुनीश्वर बन गया । छवि कै = छल का । भारे दलिकै भारी भारी वीरों को मार गिराया । भरत की कुसल = भरत का कुशल समाचार और पर्वत । भलो मान्यौ = कृतज्ञता प्रगट की ।

५६—बापु सौं = पिता राजा दशरथ ने बन दिया तो भी मुख प्रसन्न ही रहा । बैरी हरन् भौ = रावण जैसा बैरी हो गया जिसने सीता जी को हर लिया । नेवाजि = रक्षा करके । सेतु ·· हरन भो = पुल बाँध समुद्र पार हुए । कपिराज = सुग्रीव । घोरि रारि हेरि = भयानक लड़ाई देख कर । बानर बरन भो = लाल वर्ण हो गये । ऐसे सरन भो = तीनो लोक जो बड़े शोक में थे राम की

शरण मे आने पर रावण को मार कर पल मे ही सब का शोक दूर कर दिया।

५७—कंधर तोरे = कंधे तोड डाले । पूषनु तेजप्रताप = सूर्य वंश को शोभित करने वाले भूषण राम के प्रताप रूपी तेज से बैरी ओले की भाँति गल गये। साँवत गो = वीर बाना चला गया। मन भोरे = मन चाहा हुआ। नाचत होरे = तुलसीदास कहते है कि जीत की खुशी में भालु बन्दर नाचते है और कहते है अहा भैया ! हार गये हार गये (राक्षसो की ओर सम्बोधन करके)।

५८—सकुल दल = सेना और कुटुम्ब सहित । बरषतु है = बरसाते है । बाम ओर = बाँई तरफ । करषतु है = बढ़गया । आयसु भो = आज्ञा हुई । के कै = करके । सरपतु है = परवाना लिखा हुआ हुकम ।

उत्तर काण्ड

१—बालि बिदारि = बालि के समान बलवान का भी नाश कर दिया । सुकंठ = सुग्रीव । थप्यो = रक्षा की । दल्यौ = नाश किया । दासरथी = दशरथ के पुत्र राम । गलगाजे = डींग मारने लगे। कायर हद = अत्यन्त कर्त्तव्य हीन और खोटे, निष्ठुर । हद = सीमा । नेवाजे = बचाये । गरीब निवाज = राम ।

२—(रावण का प्रताप वर्णन है) शंभु सभीत = महादेव डर करके । दयावने = दया योग्य । दिन = नित्य । दूरिहि नावै = दूर से ही (डर से) नमस्कार करते है। ऐसेहु ते = ऐसे प्रतापी रावण का भी भाग्य भाग गया । कोविद = पण्डित । गावै = कहते है । बाम भये = बैर करने से । बामहिं = खोटे से । बाम लखै = सब सुख और सम्पत्ति दूर हो जाती है ।

३—(राम भक्तो पर अत्याचार नहीं सह सकते) बेद-विरुद्ध = वेद का अनादर किया । ससोक किये = दुःख दिया । सुर-लोक = स्वर्ग ।

सिह का मिश्रित शरीर, नरसिंह अवतार । यहाँ = मै । अक राज = मगर ग्राह । ग्रस्यौ = पकड लिया । विलम्ब = देरी । तहाँ = भीड पडने पर । राखी है = रक्षा की है । पाडु वधु = द्रौपती । पट जहाँ = करोणो राजाओं की भीड मे जहाँ दु शासन द्रोपती का चीर खीचता था । जन कहाँ = सेवक की बात कहाँ पूरी नही की ।

९—नर नारि = अर्जुन की स्त्री द्रौपती । दियौ पट = चीर बढाया । विवाद निवारन = दु ख दूर करने वाले । बारन तारन = हाथी की रक्षा करने वाले । मीत अकारन को = निस्वार्थ मित्र । भार पन का = अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का ही जिस पर बोझ है । तजि भरोस = दूसरे का भरोसा छोड कर । जनको = सेवक का ।

१०—ऋषि-नारि-उधारि = अहिल्या को तार कर । कियो मीत = नीच केवट मित्र बनाया । पुनीत = पवित्र । सुकीर्तिलही = सुन्दर यश मिला । निजलोक = वैकुण्ठ । सबरी = भीलनी । खग = जटायु । सबही = सबको । जगलीक रही = यह बात अमर होगई । भजुरे = ध्यान करो । सही = सच्चे (नाथ) ।

११ विप्रबधु = अहिल्या । मिथिलाधिप = जनक । सोच दले = (धनुष तोड कर) चिंता मिटा दी । सत्रु = वैरी । सु साहिब शील = राम के उदार स्वभाव को । अनूप = अद्भुत । अगनी = जो गिनने मे न आवे असख्य । गाहैं = कथाएँ । निज छाहैं = अपने हाथो मे रक्षा करते हैं ।

१२—(हे राम) तेरे बेसाहे = जिसको तू मोल ले लेता है । (वह इतना शक्ति शाली हो जाता है) बेसाहत औरनि = और देवताओं को मोल ले लेता है अर्थात् उसके गुलाम बन जाते है । और हारे = अन्य देवता जिसे अपना बनाते है उसे दूसरो को बेच देते है अर्थात अपने भक्त की मनोकामना पूरी नही कर सकते जिससे और देवता का सेवक बन जाता है । ब्योम = आकाश । रसातल = पाताल । भरे

कुसाहिब = अयोग्य स्वामी भरे पडे हैं। सेतिहुँ खारे = बिना दाम भी अच्छे नहीं। कौन मरै = कोई नहीं मर सकता। रज भारे = धूल के छोटे कण को भी पर्वत से बडा बना दे। दशरथ दुलारे = हे राम।

१३—जातुधान = विभीषण। विहंग = जटायु। पाल्यो = शरण में लिया। सद्य = शीघ्रही। सो सो भयो काम काज को = वह (निकम्मे मे) कर्मण्य हो गये। आदर पाने योग्य होगये। आरत = दुखी। मलिन = मलसे युक्त पापी। राखे अपनाय = अपने बनाकर रक्खे। नाम तुलसी दगाबाज को = मेरा नाम तो पवित्र तुलसी के नाम पर है परतु और गुणा मे भाग मे भी बुरा हूँ अर्थात् बद नसीब हूँ तब भी तुलसीदास कहलाया। मुझ इतने बडे धोके बाज को भी भगवान् ने स्वीकार किया है। समत्थ = सामर्थ्यवान। दशरथके = हे दशरथ के पुत्र। तुही लाज को = अपने भक्त की लाज रखने वाले तुम्हा एक हो।

१४—बालि दलि = वाली को मारकर। कायर सुकठ कपि = कायर सुग्रीव बदर अपने बडे भाई बालि के डर मे भाग गया था और ऐसे स्थान पर रहता था जहाँ बालि श्राप वस नहीं आसकता था। सखाकिये = मित्र बनाये। हौं = मै (तुलसीदास)। भ्रात-घात सरन आये = राक्षस विभीषण अपने भाई रावण की मृत्यु की इच्छा रखने वाले ऐसे पापी के शरण आने पर। एते बडे = इतने बडे। वाम को = धर्म्म प्रतिकूल चलने वाले को। कूरको = छोटे को, पापी को। रामको = राम का भक्त। अपने निवाजे = अपने सेवक। महाराज को = रामचन्द्रजी को। समुझत गुलाम को = यह समझकर मुझ गुलाम का मन प्रसन्न होता है।

१५—रूप-सील-सिधु = रूप और शील के समुद्र। गुनसिधु = गुण के समुद्र। बधु दीन को = गरीबों का सहारा। जानि-मनि = मनुष्यों की परख करने वालों मे श्रेष्ठ। बीर बाहु-बोलको = भुजाओं और वचनों के वीर अर्थात् बलवान और प्रण पालक। श्राद्ध कियो गीधको = जटायु

गिद्ध जैसे तुच्छ जीव का श्राद्ध (अत्येष्टिक्रिया) अपने हाथों से किया। सराहे फल सबरी के = शवरी के जगली फलों की (उसकी भक्ति के कारण) प्रशसा की। सिला-साप-समन = पत्थर बनी हुई अहिल्या के शाप को दूर करने वाले। निबाह्यो कोल को = (मल्लाह) से प्रेम निबाहा। उराउ = उत्साह। को न बलि जाय = कौन निछावर न होजाय। न बिकाय मोल को = कौन बिना दामके न बिकजाय अर्थात् कौन निष्काम बुद्धिसे उनका भक्त न होजायगा। ऐसेहू अनुरागन = ऐसे अच्छे स्वामी से भी जिसका प्रेम न हो। बड़े अभागे लोलको = उस लोभ से चलायमान चित्त वाले का भाग्य ही भाग गया है अर्थात् खोटा है।

१६—सूर-सिरताज = शूर शिरोमणि। सुखेत = अच्छाखेत। ऊसरो = ऊसर भी (जिसमे कुछ पैदा न होता हो) सुखेत ऊसरो = जिसका नाम लेने से निकम्मा भी काम के योग्य और निर्बुद्धि बुद्धिमान हो जाता है। जहान = ससार। सुजान = चतुर। मराल = हस। खूसरो = खूसर भी। पषान = पत्थर। धींग = गँवार, असभ्य। धमधूसर = बहुत मोटा और निकम्मा आदमी। अपनायो धमधूसरो = तुलसीदास जैसा गँवार निकम्मा तथा व्यर्थ ही इस मोटे शरीर को धारण करने वाला भी अपना लिया। बोल को = प्रतिज्ञा को। अटल = जो टल न सके, दृढ। बाँह को पगार = भुजाओं का कोट (चहारदीवारी) शरणागत की रक्षा करने वाला, शरणागत की रक्षा करने के लिये अपनी बाँह का कोट बनाने वाला। दूबरे = दुर्बल। दानी = सहायक। को दूसरे = दूसरा कौन दयासागर है ? (काकुवक्रोक्ति)

१७—कीबेको = करने को। लोक = ससार। बिसोक = शोक रहित। चरवाहो = चराने वाला, सुमार्ग में लाने वाला। पवि = वज्र। ख्याल ही = खेल ही में। बापुरो = बेचारा, गरीब। घरौंधा = छोटा घर। प्राय बच्चे बनाया करते है। घरौंधा बालु को = बालू के बने हुए घरौंधा की भाँति निर्बल था। निखोट = निर्दोष। खोटे = दोषी, पापी। चोटबिनु

मोटपाय = बिना कष्ट व श्रम के मालकी गठरी पाकर । न निहाल को = कौन प्रसन्न न होगा । ढील = विलव, देर । बिगरी सुधारिबे = बिगडी हुई बात बनाने के लिये । (काकुवक्रोक्ति) ।

१८—पूत = पुत्र । (अजामिल को अपने पुत्र "नारायण" का नाम लेन पर मुक्त कर दिया) । पातकीस = अजामिल । आरति = दुखी । निवारी = दूर किया । पाहि = रक्षा करो । पील = हाथी । छलिन की छोंडी = छलियाओं की लडकी (शवरी) । निगोडी = निकम्मी । कीन्ही आपुमें = अपने में लीन करली, मोक्ष पद दिया । भौंडे = भद्दे, असभ्य । तुलसी औं = तुलसीदास को भी । बिसारिबो = भुलायेंगे । नीके = अच्छी तरह, पूर्ण । रावरे = आपके । दयानिकेत = दया के वर । दादिदेत = न्याय करते है । (अनुपलब्ध, प्रमाण)

१६—पाहन = (पाषाण) पत्थर पर । कृपा = दया की । कोलनी = शवरी । नायेमाथजू = माथा झुकाने पर, नम्र होने पर । सुजानराय = ज्ञानियों म श्रेष्ठ । ऋनियाँ = कर्जदार, ऋणी । बिकाने ताके हाथजू = उनके हाथ बिक गये अर्थात् उनके वश मे होगये । खोटे खरे होत = पापी भी निष्पाप हो जाते है । तेजी = महँगी । माटी मगहू की = मार्ग की धूल भी । कस्तूरी के जमीन पर गिरने से उसके साथ की मट्टी भी उठाली जाती है और वह बजार मे खुशबू के कारण महँगी बिकती है । मृगमद = कस्तूरी । बिलग = बुरा मानना । बातचले = प्रसगवश । मानिबो = मानना । बलि = मै आपकी बलि जाऊँ । काकी = किसकी । रीझिके = प्रसन्न होकर । नेवाजो = अपनाया । (काकुवक्रोक्ति) ।

२०—कौसिक = विश्वामित्र । पषान = पत्थर (अहल्या) । पास = स्पर्श करके । बनिगई है = काम बनगया, प्रतिष्ठा होगई । कौशिक जनककी = रामचन्द्रजी को साथ लेकर चलतेही विश्वामित्र का काम बन गया (क्योंकि रामने ताडका आदि को मार कर आश्रम निर्भय कर दिया) चरण छूने से अहल्या का काम बनगया । धनुष टूटने पर जनक की प्रतिज्ञा पूरी हुई । कोल = भील । पशु = पशु, पशुके समान ।

बिहग = जटायु । रातिचर = राक्षस विभीषण । भालु = रीछ जामवत । रतिन = रत्तियों के । मनक = मनभर । लालचिन = ललचाते थे । कोटि-कला-कुसल = जो करोड़ों कलाओं में निपुण है । नतपाल = नत्रे हुए को पालनेवाले, शरणागत पालक । किनिक = कितने । तिन = तिनका । तनक = जरासी । राजमनि = राजाओं मे श्रेष्ठ । हेरे = देखने । लोपै = मिट जाती है । गनक = गणक, हिसाब लगाने वाला ।

२१—सिला साप पाप = अहल्या के पाप और उसके श्राप की कथा । गुह = नीच जाति का राजा जिससे रामचन्द्र जी का सखा भाव था । सुरधुनी = गगा जी । कपि नायक = सुग्रीव । आलसी ताल = निकम्मे अभागे, पापी, दुखी और अनाथों के पालने वाले । नीके गुनी मे = अच्छी तरह समझ लिया । दोष दलैया = दोष, दुख और मलीनता को नष्ट करने वाला । दुनी मे = दुनियाँ में ।

२२—(राम शत्रु मित्र नहीं देखते भक्ति देखते है, अर्थात् अपने वैरी बालि के भाई तथा पुत्र और रावण के भाई को भी मित्र बनाया ।) मीत = मित्र । बालिबन्धु = सुग्रीव । पूत = (बालि-पूत) अंगद । सचिव = मन्त्री । सराध = श्राद्ध (पिण्डदान आदि) । सेवा न खटाय को = ऐसे स्वामी की सेवा करना किसको बुरा लगेगा । कहैगो घटाय को = कौन घटा कर कहैगा, कौन अपने आप छोटा बनेगा । साँकरे = संकट मे । राम साहिब = राम जैसा स्वामी न मिलेगा । कुमति कटाइ को = कौन कुमति का नाश कर सकता है ।

२३—भूमि-पाल = पृथ्वी पर के राजा लोग । व्याल-पाल = शेषनाग, वासुकि । नाकपाल = इन्द्रादि । कारण कृपालु = कारण पाकर कृपा करते है । अर्थात् मतलबी है । पाहली = परीक्षा कर ली है । सेवा-सुजान टाह ली = सेवा मे चतुर सेवक । पच्छपात = तरफदारी । कौने ईस = किस मालिक ने । खास माहली = महल में आने जाने वाले सेवक । भाव यह है कि राम अयोग्य का भी विश्वास करते हैं । सन मानियत = आदर होता है । काहली = कादर (कर्त्तव्यहीन) ।

२४—सेवा-अनुरूप = जैसी सेवा करो वैसा फल देते हैं। कूप ज्यों = कुएँ की भाँति बिना रस्सी के मनुष्य प्यासा ही लौट सकता है इसी प्रकार गुनहीन राम के अतिरिक्त अन्य स्वामी से विमुख लौट सकते है। पथके = राहगीर। गुन = रस्सी या गुण। बिगने गुन = गुण रहित। लेखे जोखे = और स्वामी दिखावट में तो अच्छे हैं। स्वारथ हित = अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये। नीके गथ के = भली भाँति धन देते हुए देखे है। गथ = धन। मानो गुरु = गुरु या पिता के समान आदर किया। पुनीत गीत साके = कीर्त्तिगान, अचभा पैदा करने वाला कीर्तिगान। परखि = परीक्षा, देख भाल। सुलाखि = छेद करके या कसौटी पर घिस कर। तौलि = तोल कर। ताय लेत = तपा कर (इन चार प्रकार से सोना जाँचा जाता है। ससम = खोटा, कायर। खसम = स्वामी।

२५—नेवाजिये मो = सेवक जो माँगता है वही देते है। दोप-दुख-दारिद-दरिद्र = दोप, दुख और दरिद्रता का दरिद्री (हानि)। कै कै छोडिये = करके छोड देते हैं। काम तरु = कल्पवृक्ष। चारि फल = अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष। ताहि = उसको, ऐसे उदार स्वामी को। बिहाय कै = छोड कर। बबूर रँड = बबूल और अरण्डी का पेड। जाँच को नरेस = किस राजा से माँगे। कलेस को = जगह जगह दौडता फिरे। दै दै बोडिये = यदि बडी खुशामद से प्रसन्न हो कर कौडी का माल देगा। बोंडी = कौडी, दमडी। हाथ ओडिये = हाथ फैलावे।

२६—जाके बिलोकत = लक्ष्मी के देखते ही। बिसोक = प्रसन्न। लहैं = पाते है। सुठौर = सुन्दर स्थान। कमला = लक्ष्मी। करि कला = करोडों प्रकार के उपाय रच कर। सिरमौरहि = विष्णु के अवतार राम को। रिझवहि = प्रसन्न करती है। ताको कहाइ = उसका हो कर। कूकर = कुत्ता। जीह = जिह्वा। औरहि = राम के अतिरिक्त।

२६—जाके = जिस लक्ष्मी के। बिलोकत = देखने से। लोकप होत बिसोक = लोकपाल शोक रहित हो जाते हैं। सुठौरहि = सुन्दर स्थान

को । सो कमला = वह लक्ष्मी । तजि चचलता = चंचलता को छोड कर अर्थात् चलायमान न हो कर एक जगह रहती है। रिझवै = प्रसन्न करती है। सुर मौरहि = देवताओं मे शिरोमणि विष्णु भगवान को । ताको कहाय = उसका दास कहा कर। कूकर कौरहि = और देवताओं से कुत्ते के ग्रास के समान तुच्छ वस्तु । जानकी जीवन = सीता जी के प्राण रामचन्द्र जी । जन ह्वै = दास हो कर । जरि जाउ = जल जावे । जीह = जिह्वा ।

२७—जड = जो चेतन नहीं है। पच = पाँच तत्त्व, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, हवा । धरनी-धर = (यहाँ पर) रामचन्द्र जी । धौं = तो । सँभार = सँभाल । सार करै = सँभाल करता है । सचराचर की = जड और चेतनयुक्त ब्रह्माण्ड की । आन = दूसरा । घरकी = स्त्री । रमा = लक्ष्मी । गति = पहुँच, शरण । नर = मनुष्य ।

२८—जग कोऊ न = संसार में किसी को कुछ नही मांगना चाहिये। जाँचिये जौ जिय = यदि मन म माँगने की इच्छा हो तो । जानकी जान = जानकी जिनकी स्त्री है अर्थात् रामचन्द्रजी । जेहि जाय = जिनसे माँगने से माँगने की इच्छा ही जल जाती है। जो जहानहिरे = वह माँगने की इच्छा जो अपने वल से ससार को जलारही है अर्थात् कष्ट देरही है। गति = दशा । अरुआनहिये = और ध्यान करो । दारिद-दोष-दवानल = (मलिनता) दरिद्रतारूपी दोष को नष्ट करने के लिये दावाग्नि के समान। सकट कोटि कृपान = करोडों संकटों को काटने के लिये तलवार के समान रामचन्द्रजी ।

२९—सुनुकानदिये = ध्यान लगाकर सुनो । नित नेम लिये = नित्य नियम के साथ । गुन गाथहि = गुणों की कथा को । सुख मंदिर = सुख का घर । उर आनि = हृदय में रक्खो। धरे धनुभाथहिरे = धनुप और तरकस लिये हुए को । रसना = जिह्वा । निसिवासर = रात दिन । सो = उन । कूर = कपटी ।

३०—दार = स्त्री । अगार = आगार, घर । कुसमाजहि = बुरा समाज, दुख दाई संग । ममता = 'यह मेरा है' ऐसा भाव, मोह । समतासजि = समता का भाव लेकर, सब को एकसा समझ कर । न बिराजहि = क्यों नहीं बैठते । नरदेह कहा = मनुष्य शरीर क्या है अर्थात् सदा स्थायी है । बिगारु ' काजहिरे = हे मूर्ख काम मत बिगाड अर्थात् शरीर को व्यर्थ मत खो । जनि = मत । लोलुप = लालची ।

३१—विषया = सांसारिक विषय भोग । निसा तरुनाई = यौवन रात्रि । विषया अनुरागहिरे = तू यौवन रूपी रात्री में विषय रूपी पर स्त्री को पाकर उनके प्रेम में पडा हुआ है । जमके पहरु = जमके पहरा देनेवाले यमदूत । वियोग = किसी सबंधी की मृत्यु । जरठाइ = बुढापा । दिसा = पूर्व दिशा में । रविकाल उग्यो = कालरूपी सूर्य निकला ।

अर्थ—हे जड जीव तू यौवन रूपी रात्रि मे अन्धा होकर विषयों रूपी पर स्त्री को पाकर उसके प्रेम मे पडा हुआ है यमदूत के पहरुए दुख रोग मृत्यु को देख कर भी ससारिक सुखों से विरक्त नहीं होता ममता के कारण तू ज्ञान वैराग्य सब भूल गया है अब प्रात काल होगया है महा भय भाग गया है बुढापा रूपी पूर्व दिशासे काल रूपी सूर्य उदय होगया है अर्थात् मरण काल पास आगया है परन्तु हे जड प्राणी तू अब भी सचेत नहीं होता । (अलकार रूपक)

३२—जनम्यो जेहि जोनि = जिस योनि में जन्म लिया । अनेक बरनी = उसमे सुख के लिये बहुत से काम किये जिनका वर्णन नहीं हो सकता । जननी जरनी = और उस योनि में माता पिता आदि अनेक हित चाहने वाले हुए फिर भी हृदय की जलन नहीं मिटी अर्थात् सुख नहीं मिला । चातक = पपीहा । धरनी = रटन । बंस को वेष करि = भक्तों का सा वेष बना कर । तजि दे '' बक बायस की करनी = बगुले और कौए के से काम अर्थात् छल, कपट, चालाकी, चंचलता छोड दे ।

३३—भलि = अच्छी । समाज ' 'लहिके = अच्छा साथ व अच्छा' नर शरीर पा कर । करषा = क्रोध । परुषा = कठोर दु सह । हिम =

बर्फ मधे । मारुत = हवा । घाम = धूप । सयान = (सज्ञान) चतुर । हठ गहि के = जिस प्रकार प्यासा पपीहा बादल की लगन में पीउ पीउ पुकारता है उसी प्रकार राम नाम की रट लगा कर । बये = बोये । और सबै = और सब लोग जो भगवान का भजन नहीं करते हों । हर-हाटक = सोने का हल । कामदुहा नहि के = कामधेनु गाय को जोत कर । नतु = नहीं तो । कवि ने भारत-भूमि में जन्म लेना सोने का हल और मनुष्य शरीर कामधेनु गाय माना है । इसी योनि में जीव मोक्ष पा सकता है । राम का भजन न करके मनुष्य विष बीज बोता है ।

३४—सुकृती = पुण्यात्मा । सुचिमंत = पवित्र, शुद्धात्मा । सुसंत = सज्जन । सुसील सिरोमनि = सब मे उत्तम शील वाला । सवै = सोई, वही है । तासु = उस (रामभक्त) का । ता तन छ्वै = उसका शरीर छू कर । गुन गेह = गुण का घर । भाजन = पात्र वर्तन । उठाइ द्वै = दोनों भुजा उठा कर कहता हूँ अर्थात् सब को चेता कर । रहै ह्वै = जो राम का भक्त हो कर रहता है । (निदर्शना)

३५—सो जननी = वही माता है । भामिनि = स्त्री । हित = हितू, मित्र । सगो = सम्बन्धी, खास । सुर = देवता, इष्टदेव । चेरो = सेवक । नेह = स्नेह, मोह । सनेह सों सवेरो = शीघ्र ही राम का भक्त हो जाता है । (तुल्य योगिता)

३६—(श्री तुलसीदास जी के विचार से जिन्दा और मरे की पहिचान) सनेही = मित्र स्नेही । राम की सौंह = राम की सौगन्ध । राम रंग्यौ = राम के प्रेम में अनुरक्त, गरक । रुचि केही = और किसी प्रकार की रुचि नहीं । जेही = जिसकी । नत देही = नहीं तो और सब शरीर होते हुए भी मुर्दे हैं ।

३७—अगाध = अथाह, गहरा । अनूप = उपमा रहित, अनोखा । विलोचन मीनन = नेत्र रूपी मछलियों को (अगाध) जल है अर्थात् अगाध जल में जिस प्रकार मछली प्रसन्न रहती है उसी प्रकार आँखें राम का रूप देख कर प्रसन्न होती हैं । स्रुति = कान से सुनने को । थलु है = स्थान

है। मति = बुद्धि । गति = पहुँच, शरण । रति = प्रेम । तुलसी की मतै = तुलसीदास जी की सम्मति से।

३८—दानि-शिरोमणि = दान देने वालों में प्रथम। पुराण-प्रसिद्ध = पुराणों में जिनका यश प्रसिद्ध है। सुन्यौ ...मैं = मैंने यश सुना है। नाग = (देवयोनि है) सर्प । सुरासुर = देव दानव। मन कै = मन भाया हुआ किसने फल नहीं पाया। जेहि देह = जिस शरीर को आप से स्नेह नहीं। असि ऐसा शरीर धारण करके । जाय जियें = व्यर्थ जीना है।

३९ - झूठो है = असार है, अनित्य है। कहत = कहते हैं। जे लहा है = जिन्होंने पूरा अनुभव कर लिया है । सठ = हे दुष्ट जीव। ताको = उस (झूठे) संसार के लिये। काढत दत = बड़ी नम्रता के साथ, आजिज हो कर, दीनता पूर्वक । करत हहा है = हाहा करता है। जानपनी = अपने ज्ञान का, जानकारी का। तुलसी के विचार में—गँवार—अनसमझ। जानकीजीवन कहा है = यदि जानकी जीवन, राम को नहीं जान पाया और ज्ञानी कहलाते है, तो तुमने क्या जान लिया है अर्थात् कुछ नहीं।

४०—खर = गदहा। सूकर = सूअर। स्वान = कुत्ता। जडतावस = अज्ञानी होने के कारण। न कहै कछु पै = वे कुछ कहते तो नहीं है। सो सही पशु = वह वास्तव में पशु है। पूँछ विखानन द्वै = पूँछ और दो सींगों के बिना । जननी त्यै = माता दस महीने तक बोझ क्यों सहती रही ? बाँझ क्यों न हो गई ? गर्भस्राव क्यों न हुआ, गर्भ गिर क्यों न गया। जानकीनाथ = हे राम। जरि जाउ = नाश हो जावे।

४१—गज बाजि घटा = हाथी घोड़ों का समूह । भले भटा = अच्छे और बड़े वीर। वनिता = स्त्री। भौंह तकैं = भौंहों की ओर तकते हैं, इशारा देखते हैं अर्थात् आज्ञाकारी हैं । धरनी भलो = धरती का राज्य, घर, सम्पत्ति और भला शरीर होवे । सुरलोकउ त्वै = उसके लिये स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख होवे। फीटक = छूँछ,

सारहीन, फीके । सारक = छिलका, भूसी । सपनो दिन द्वै = दो दिन के लिये स्वप्नवत् है ।

४२—सुरराज समाज = इन्द्र के समान वैभव सम्पन्न राज्य हो । समृद्धि = बढती, उन्नति । धनाधिप = कुबेर । सो धन भो = के समान धन हो गया हो । पवमान सौ = पवन के समान शीघ्रगामी, पावक के समान तेजस्वी । जम = यमराज के समान प्रबल । सोम = चन्द्रमा के समान शीतल । पूषन = सूर्य । भव भूषन = संसार को सुन्दरता बढाने वाला । करि जोग = योग सिद्धि करके । समीरन साधि = प्राण, उदान, अपान, व्यान वायुओं की साधना करके, प्राणायाम करके । समाधि = ब्रह्माण्ड में प्राण वायु का रोकना । वसह्न मन भो = मन भी वश में हो गया है । सब जाय = सब व्यर्थ है । सुभाय कहै = अच्छे भाव से । जन भो = सेवक हुआ ।

४३—काम से रूप = कामदेव के समान सुन्दर रूप । दिनेस = सूर्य । गनेस से माने = गणेश जी के समान पूज्य माने । साँचे = सत्य व्रतधारी । मघवा = इन्द्र । महीप = राजा । विषै-सुख-साने = सांसारिक सुखों में लिप्त । सुक = शुकदेव जी के समान विरक्त और ज्ञानी । सारदा से बकता = सरस्वती के समान बोलने वाले । चिर जीवन = लोमस ऋषि के समान बहुत दिनों तक जीने वाले । अधिकाने = बढ कर ।

४४—झूमत = बल और मद में चूर हाथी प्राय झूमा करता है । मतग = हाथी । जंजीर = लोहे की साँकर । जटे = जकडे हुए । मद अम्बु चुचाते = मस्त हाथी के गण्डस्थल से मद चूता रहता है । चुचाते = चुचाते हुए । तीखे ' ' चंचल = तेज घोडे जो मन की गति से भी चचल है । पौन जाते = हवा से भी तेज चलने वाले । (मन में पल भर में दुनियाँ भर की वस्तुओं का विचार कर सकते हैं ।) भीतर = घर के भीतर । अवलोकति = बाट निहारती हैं । खरे = खडे हुए । न समाते = बहुत भीर बढ जाती है । रंग न राते = प्रेम में अनुरक्त नहीं हुए ।

४५—पचासक को = पचासों इन्द्रों का । कर को = हाथ का लिखा हुआ । पटो = (पट्टा) लिखा हुआ प्रमाण-पत्र पाया हो । मदनाए = घमण्ड चूर कर दिया हो । मनसा = इच्छा । चितवैं = देखती हैं । चित लायें = ध्यान लगा कर । न जीव कहाये = जिंदा नहीं कहलाते अर्थात् मरे के समान हैं ।

४६ — कृसगात = दुर्बल शरीर । ललात = भटकते फिरते हैं, तरसते हैं । परवात = घर का सामान । घरें = घर में । खुरपा = घास खोदने का औजार । खरिया = रस्सी की जाली जिसमें घास बाँधी जाती है । तिन · लहे = सुमेरु पर्वत सा सोने का ढेर मिल जाय । मन तौ न भरो = संतोष न हुआ । घर पै भरिया = चाहे घर भर जावे । तुलसी · करिया = तुलसीदास जी ने दोनों (धन तथा दारिद्र की) दशाओं को देख कर दरिद्रता का मुँह काला कर दिया अर्थात् उसकी कुछ परवाह न की । दया दरिया = दया का समुद्र ।

४७ —भरिहै = भरेगा, रक्षा करेगा । रितये = खाली किये हुए, जिनकी समृद्धि नाश कर दी है । को · भरिहै = जिनको राम ने नष्ट कर दिया है उनको कोई दूसरा देवता नहीं बचा सकता । रितये ·· को = कौन खाली कर सकता है । हरि·· भरिहै = जिनको राम ने भर दिया है । उथपै = नाश करे । थपैं = जड़ जिनकी जमाई है । टरिहै = उखाड़ दिया है । कुमया · औरन की = औरों न के क्रोध से कुछ हानि नहीं । मया = कृपा ।

४८—काल कराल = विषैले साँप । महाविष = हलाहल विष । मत्त = मतवाले । गयद = हाथी (प्रहलाद को उसके पिता हिरण्यकश्यप ने उसको बहुत से दुःख दिये, विषधर साँप उस पर छोड़े परन्तु भाग गये । विष पिलाया उसका असर कुछ नहीं पड़ा । अग्नि में डाला वह शीतल हो गई । मतवाले हाथी उसके ऊपर छोड़े उनके दाँत तोड़ डाले । साराश यह है कि भगवान ने अपने भक्त को हर बला से बचाया और अन्त में उसे नरसिंह अवतार लेकर मार डाला । साँसति = कष्ट, कठोरता प्रहलाद

को दिये गये । सकि चली = डर कर भाग गई। डरपे हुते किंकर = हिरण्यकश्यप के सेवक जो प्रहलाद को दण्ड देने पर नियत किये गये थे डर गये। ते मोरे = उन्होंने उनके सुपुर्द किया हुआ काम पूरा नहीं किया अर्थात् उसको मारा नहीं। विषाद = दुख । कारन होरे = उसका कारण केवल नरसिंह ही थे । त्रास = डर । राखि है = बचाने वाला। कोरे = कौन मार सकता है अर्थात् कोई भी नहीं।

४९—कृपा = राम के अतिरिक्त अन्य स्वामी की कृपा । कछु काज नहीं = किसी काम की नहीं है, कोई लाभ की नहीं। मुख मोरे = नाराज होने पर । करे परवाहि ते = ऐसे छोटे स्वामी की चिंता वे करते है। जो • दोरे = बिना पूँछ और सींग के पशु हैं और इधर उधर विषयवासना की तृप्ति में दौड़े फिरते हैं । नाथ = स्वामी। सुसेवत थोरे = जो थोडी सी सेवा से प्रसन्न हो जाते है। कहा धौ = उन्हे आवागमन आदि सांसारिक कष्टों की कोई चिंता नहीं। तिन सों तृन तोरे = उनसे सम्बंध छोड कर, उनकी परवाह न करके।

५०—कानन = वन मे अर्थात् जहाँ कोई सहायता न हो। भूधर = पहाडों पर। बारि = जल मे । बयारि = पवन से । व्याधि = रोग। दवा घेरे = दावाग्नि तथा बैरियों के बीच में फँस जाना। (आदि ?) न नेरे = पास कोई नहीं होवे। जेहि केरे = उसके (हनूमान से सेवक) है। नाक = आकाश मे। रसातल = पाताल। भूतल = पृथ्वी पर।

५१—रजायसु ते = आज्ञा से । भट = वीर, यमदूत । बाँधि नटैया = गर्दन बाँध कर। बिसाल बटैया = भारी आपत्ति के समय बाँटने वाले, हिस्सेदार । सासति घोर = असह्य कष्ट मे। हटैया = दण्ड देने वाले, रोकने वाले। बन्दि कटैया = आपत्तियों से बचाने वाले। जहाँ = जहाँ पर, मरने के पीछे नरक मे।

५२—जम-जातना = यमराज का कष्ट। घोर नदी = वैतरणी नदी, (पापियों को खून और पीव की नदी में होकर निकलना पडता है।)

भट कोटि = करोडों दण्ड देने वाले । जलचर = जल जीव, मगर मच्छ आदि । दंत टेवैया = दाँत पैना कर तेज करने वाले अर्थात् खाने को तैयार । वार न पार = इस पार न उस पार, मझदार मे । बोहित = जहाज । नीक खिवैया = अच्छी भाँति खेने वाला । कोउ देवैया = सहारा देने वाला कोई कही नही है। विसाल लेवैया = अपनी लम्बी भुजाओ से पकड कर बचा लेने वाले । (आवश्यकता पडने पर जहाँ चाहो वहाँ रक्षा करने वाले अर्थात् वैतरणी आदि के दु ख से छुडाने वाले) ।

५३—जहाँ = नरक मे । हित = मित्र (कोई पास नहीं हो) काय छमैया = मनसा, वाचा, कर्मणा से किये हुए पापों को निष्कपट भाव से क्षमा करने वाले । दारुण दु ख दमैया = कठिन दुख के दूर करने वाले । जहाँ रमैया = जहाँ पर सब प्रकार के कठिन दुःखो की भीर होवे तहाँ सर्वव्यापी मेरे स्वामी राम बचाते है । रमैया = सर्वत्र रमण करने वाला ।

५४—तापस देव = तपस्वियो के ही वर देने वाले देवता ब्रह्मा, शिव आदि । सबै बाढे = जब वर पाया हुआ उनका भक्त बढ जाता है, शक्तिशाली हो जाता है तब सब वैर करने लग जाते है । भाव यह है, कि रावण, भस्मासुर आदि ने तपस्या करके बडे बडे वर पाये । वर पा कर उन्होंने उत्पात मचाना शुरू किया देवताओ को कष्ट दिया । ऐसे लोगो को फिर पीछे वर देने वाले देवता को ही मारना पडा । थोरेहि ठाढे = थोडी सी बात पर प्रसन्न थोडी सी बात पर अप्रसन्न अर्थात् जितनी देर मे बैठते है उतनी देर के लिये कृपालु हो जाते है और उठने मे जो देर लगे उतनी ही देर में अप्रसन्न हो जाते है अर्थात् जोडने तोडने मे कुछ समय नही लगता । ठीकि गजराज = हाथी ने पूरी परीक्षा कर ली है अर्थात् ग्राह से हारने पर सब देवताओं से प्रार्थना की पर कोई रक्षक नही मिला । कहाँ लौं कहौं = कहाँ तक वर्णन करूँ । केहिसों काढे = ऐसा कोई न बचा जिससे प्रार्थना न की हो । सही = सच्चे । दिन गाढे = दु ख पडने पर ।

५५—महामख-साधन = अश्वमेधादि बड़े बड़े यज्ञों का अनुष्ठान। दम = विषयों से इन्द्रियों का रोकना। कोटि करै = ऐसे करोड़ों काम करे। सेवत मरै = सेवा करते अनेक जन्म बीत जावें। निगमागम = वेद और शास्त्रों को पढ़ कर ज्ञान प्राप्त करे। तपसानल = तपस्या की अग्नि से। जुग जरै = अनेकों युगों तक अपने को कष्ट दे। पन रोपि = प्रतिज्ञा करके।

५६—पातक पीन = पाप से पुष्ट बहुत पापी। कुन्मारिद दीन = भोजन वस्त्र के लिये भी तरसने वाला, बुरा दरिद्री। मलीन = मैला। धरे कथरी करवा है = गूदड़ी, मैले चिथड़ों के कपड़े धारण किये हुए है, पास में करवा (मिट्टी का छोटा टोंटीदार बर्त्तन) मात्र है। नहीं अपने बर बाहै = अपनी बाहुओं में बल नहीं (अपने आप कुछ नहीं कर सकते)। राम सो = यदि वह राम का सेवक हो जावे तो। समुझहि रवा है = उसकी जो दशा हो जायगी अनुभव कर सकते हैं कह नहीं सकते। ऐसे को ऐसो = ऐसे दीन मलीन प्राणी का उद्धार कभी नहीं हुआ। बिन बानर के चरवाहे = बन्दरों के चराने वाले अर्थात् तुझ राम के बचाये बिना।

५७—जन जाय तज्यो = मा बाप ने पैदा होते ही छोड़ दिया। भाल = लिलार में, भाग्य में। नीच = खोटा। निरादर भाजन = निन्दित। कूकर ललाई = कुत्ते की भाँति जूठे टुकड़े तक का भटकने वाला (मैं तुलसीदास)। राम सुन्यौ = राम दीनदयाल हैं आरतबन्धु हैं ऐसा मैंने सुना। बारक = एक बार। पेट खलाई = खाली पेट दिखा कर भीख माँगना। स्वारथ = सांसारिक स्वार्थ। परमारथ = पारलौकिक स्वार्थ अर्थात् मोक्ष (देने में)। खोरि न लाई = कमी नहीं रक्खी। (प्रहर्षणालंकार)

५८—(हे राम) पाप हरे = मेरे आपने पाप दूर कर दिये। परिताप = दुःख। तन शीतलताई = मेरा शरीर पूजनीय हुआ लोग मेरी पूजा करने लगे और हृदय को सांत्वना मिली। हंस ··

बक तें = मैं जो बगुला की भाँति झूँठा ध्यान लगाता था सो आपने मुझे हस बना दिया अर्थात् मुझे बुरे भले का विवेक हो गया। परतीति अघाई = मन में अत्यत विश्वास है। जन्म तहँ = जहाँ जिस योनि में जन्म हो। रावरे सो = आप से। निबहै सगाई = आप से ही जन्म भर स्नेह और प्रेम होवे।

५६ = लोग हीकौ = ससार के लोग और मैं भी यही कहता हूँ कि मैं बुरा या भला राम का सेवक और कृपापात्र हूँ। बडी लघुता = आप की बडी बुराई है। जसु मेरौ भयौ = मेरा यश हुआ। ही कौ = हृदय का। कै सहौ = या तो निन्दा आदि जो आप की हानि है उसको सहो। मोहूँ ही को = या मुझे अपने योग्य सेवक बनाओ। आनि करौ = अपने हृदय में विचार कर मेरे ऊपर ऐसा हित करो। हौं ·· ही कौ = कि मैं धनुष बाण धारी राम का ही ध्यान करूँ।

६०—आपु जानत = मैं अपने आप को अच्छी तरह जानता हूँ। भरायो गढायो = बनाया तथा पाला पोपा हुआ अर्थात् जो मुझे प्रतिष्ठा मिली है आपकी ही दी हुई है। कीर ज्यों = तोते की भाँति। सो कहै जग = ससार कहता है। जिस प्रकार तोता पढाया जाता है वैसे ही राम ने 'तुलसी' को पढाया है ऐसा लोक प्रसिद्ध है। सोई बढायौ = मुझे डर है कि मैं घट न जाऊं, पर वेद तो ऐसा कहते हैं कि राम का बढाया हुआ घटता नहीं और मुझे भी आपके नाम ने ही हाथी पर चढाया है नहीं तो मैं गधे का असवार था हीं अर्थात् आपने मुझे बडा किया है अब घट नही सकता।

६१—छार = राख, (कण से भाव है)। सँवारिकैं = सँभालकर। पहार भारौ कियौ = मुझे पहाड से भी भारी कर दिया अर्थात् बडी प्रतिष्ठा दी। गारो ···से = बडा होगया, अर्थात् जनता मे गौरवशाली होगया। पच्छ पाइकै = सहरा, आश्रय पाकर। हौं अब = मैं जैसा आपके सेवक कहलाने से पहिले था वैसा ही अब हूँ अर्थात

मेरे कर्त्तव्य नीच है, आपने अपनी कृपा से ही मुझे प्रतिष्ठा दी है। अधमाई' गाइकै = अधम काम करने और आपके पवित्र गुण गा गा कर पेट भरता हूँ। आपने' ' लाज = आपने बचाया है इसकी आप लाज रखिये नहीं तो आपकी निन्दा होगी कि रामने अपने सेवक की रक्षा नहीं की। हेरिकै = देखकर। न रिसाइकै = रिस होकर न बैठना चाहिये। ब्याल-बाल = सर्प के बच्चे को भी। बिषहू को रूख = बिषका पेड लगाकर।

६२—बेद न पुरान ज्ञान = वेद और पुराणो का मुझे ज्ञान नहीं है। विज्ञान = स्वय प्राप्त किया हुआ अनुभव। धारना = चित्त की एकाग्रता। साधन प्रवीनता = साधना करने मे चतुर। बिराग = विषय वैराग्य। जाग = यज्ञ। भाग तुलसी के = भाग्य (नाहिन) तुलसी के भाग्य मे नहीं है। दया-दान-दूबरो = दूसरो पर दया कर सकता हूँ न दान दे सकता हूँ। पाप' पीनता = मोटा पापी हूँ। लोभ कोप = लोभ मोहादिक का खजाना। कलि हू जो मलीनता = कलियुग ने भी मुझ मे खुटाई सीख ली है। एक ही दीनता = एक ही विश्वास है कि मुझे दुनियाँ आपका कहती है। हे राम आप दीनदयालु है मै दीन हूँ।

६३—रावरो = आपका दास। रावरोई = आपके। पावौ = मिलती हैं। रावरीही कानि हौ = आप की शर्म से अर्थात आपका कहाता हूँ इस लिये आप मेरा पालन करते हैं। गुमान बडो = बडा अभिमान है। मान्यो मैं न दूसरो = तीनो कालो मे मैंने आपके सिवाय किसी को नहीं माना। पाँच न = पच लोगों का मुझे भरोसा नहीं हैं। आपनोई = अपना भी भरोसा नहीं। तबैहीं = उसी समय। जानिहौं = जानूँगा। गढि गुढि = भली भाँति गढकर। छोल छालि = छिली हुई। कुदकीसी = खराद की हुई जैसी चिकनी, मीठी मीठी बनावटी और ऊपरी बाते। तैसी जीय जब आनिहौं = जी मे भी वेही बातें हों अर्थात आपका सच्चे हृदय से भक्त हो जाऊँ।

६४—बचन-बिकार = कपट से बात करने वाला। खुआर = खराब। मन बिचार = मन मे कोई सच्चा विचार नही। कलिमल को निधानु है = पापों का घर है। रामको = राम का भक्त। नाम खाय = राम नाम का उपदेश देता हू उसके बदले मे लोग मुझे भोजन देते है। सेवा न जाउ = न सेवा करता हूँ न सत्सग करता हूँ। पाछिले उपखानु है = जहाँ पिछले (पुराणादि) भक्तो की कथाओं का वर्णन हो। तेहू तुलसी = उस तुलसीदास को। ताको = इस कहने का। एक = केवल एक ही कारण है अर्थात राम ने अपना लिया है। लोकरीति = दुनियाँ का नियम है। स्वामी के सनेह = जिसपर स्वामी का स्नेह हो।

६५—स्वारथ को साज = अपने लिये सासारिक सुखकी सामिग्री। समाज को = मोक्ष होने के साधन। मोसो = तुलसीदास के समान। दूसरो है = दूसरा कोई धोखेबाज या ढोंगी नही है। कै न आयो = भूत काल मे भले काम नही किये। करौ न करौंगो = अब करता हूँ न आगे करूँगा। भूलि भाल है = भूलकर भी भाग्य मे (भलाई नही लिखी) नामही मेरे = मेरी पहुँच तो आपही तक है। इहाँ झूँठी = आपके सामने, या अब आप मे निवेदन करते समय झूँठ बोलूँ। झूठो काल है = तीनो लोक और तीनो काल मे झूठा ठहरूँ। अथवा इहाँ झूठो = आपके सामने सासारिक सुख झूठे है। वह तीनो लोक और तीनो काल मे भी सच्चे नही हो सकते। बलि = बलिहारी जाता हूँ। पानी भरी ग्वाल है = यह महावरा है। इसका भाव है कि जीवन नाशवान है न मालूम कब नाश हो जावे।

६६—राग साज = सासारिक सुखो की सामिग्री। न जिय = चित्त में वैराग्य, योग और यज्ञ करने की भी इच्छा नही है। काया कुठाटको = शरीर भी दिखावटी ठाट बाट को सजाना नहीं छोडता। मनोराज करत = मनमानी करने से। अकाज लगि = अबतक काम बिगडा ही है। चाहै चारु चीर = (मन) सुन्दर चीर चाहता है। पै को = परन्तु टाट का टुकडा भी पैदा नही हुआ।

अर्थात् मन की माँग पूरी नहीं होती । भयो कृपालु = ऐसे कूर के लिये भी राम कृपालु होगये । पायौ पारस = रामनाम के प्रेम रूपी पारस पत्थर पाकर भी। हौं बराट को = मैं एक २ कौडी को ललचाता हूँ अर्थात संसार का सुख चाहता हूं । पारस से लोहा सोना हो जाता है। यहाँ राम प्रेम रूप पारस पत्थर से नीच का भी सर्व श्रेष्ट होने का भाव है । ना तौ = नहीं तौ । कूकर = कुत्ता । घर का न घाट का = इधर का रहा न उधर का अर्थात् न स्वार्थ बना न परमार्थ (छेकोक्ति अलङ्कार,।

६७—ऊंचौ मन = बड़ी बड़ी ऊँची आशाएं । रुचि = अभिलाषा । भाग निपटही = भाग्य में कुछ भी नहीं । लोक न = लोकाचार के अयोग्य । लगर लबारु हूं = उद्दण्ड (जान कर अपराध करने वाला) और लबार (झूठी २ बातें बनाने वाला हूँ) । स्वारथ अगम = स्वार्थ बनाना कठिन है । कहाचली = परमार्थ का तो कहना ही क्या है ? पेट की कठिन = पेट की अग्नि शान्त करना कठिन है। जग है = संसार जान के लिये जंजाल है । चाकरी न आकरी = नौकरी चाकरी । (इस अनुप्रास का निरर्थक शब्द बोलने की प्रथा है,जैसे—पानी आनी ।) बनिज = व्यापार करना । जानत न = जानता नहीं हूँ । कूर है = कूर तुलसीदास कोई उद्योग धन्धा भी नहीं जानता जिससे पेट भरले । बाजी = खेल में जीतना । बाजी राखी = नाम रख लिया, भटकन नहीं दिया । नतु = नहीं तो । भेट बारुहै = अपने सिर पर बाल भी नहीं कि अपने पित्रा को भेट करदूं । हिन्दुओं में रस्म है कि गया आदि तीर्थो में जाकर पित्रो की शान्ति के लिये बाल मुड़वाते है ।

६८—अपत = निन्दनीय, पापी । उतार = पतित । अपकार = बुरे काम, बुराई । अगार = घर । सहमत = झिझकते है, डरते है । बाधक··· व्याध = जीवहिंसक । जाकी · बाध कों = जिसकी छाया तक छूने से बहेलिया तक घृणा करते है अर्थात् उनसे भी नीच । पातक पुहुमि = पाप रूपी धरती को । सहसानन सो = शेष नाग की भाँति भार धरन वाला हूँ अर्थात् बहुत पापी हूँ । कानन कपट को = छल छिद्रों का वन

अर्थात् घने जंगल में रास्ता आदि का कोई पता नहीं लगता ऐसे ही मेरे मन का भेद नहीं खुलता। पयोधि = समुद्र। तुलसी' 'दयानिधान = तुलसी जैसे नीच के लिये राम कृपालु हुए। सिहात = प्रसन्न होते हैं। साध को = साधना करने वाले साधु। भो = हुआ। ललाम = सुन्दर। रामनाम' '''आध को = सुन्दर रामनाम ने आधी कोडी जिसका मूल्य था ऐसे बडे कपूत और कायर तुलसी को लाखों रुपये के मूल्य वाला बना दिया।

६९—सब-अंग-हीन = सब अङ्गों का अपना अपना काम, जैसे.—कानों का राम की कथा आदि सुनना पैरों का तीर्थ आदि करना इत्यादि है, वह किसी अंग ने अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं किया। इसी भाव से तुलसीदास जी ने अपने को अंग हीन कहा है। विहीन = रहित। मन' ' मलीन = कपटी मन तथा कपट भरी बातें करने वाला। हीन हौं = मैं कुल का और कर्त्तव्य का हीन हूँ। अथवा कुल के कर्त्तव्यों से रहित, ब्राह्मण योग्य कर्त्तव्य न करना। विभूति = ऐश्वर्य्य।

७०—मेरे जान = जहाँ तक मुझे याद है। ह्वै = होकर। जनम्यौं = पैदा हुआ। तब ते = जबसे पैदा हुआ। बेसाह्यो = खरीदा। लोह कोह काम को = लोभ मोहादिक ने ही मुझे खरीद लिया अथवा इनहीं में फँसा रहा। तिनहीं = काम क्रोध मद लोभ मोह। भाव नीको = वेही अच्छे लगते हैं। वचन राम को = यह तो आप को दिखाने के लिये कहता हूँ कि मैं राम का भक्त हूँ। नाथ परी = राम ने मुझे अपना नहीं बनाया और लोग कहते है कि तुलसीदास को राम ने अपना लिया है। या इस प्रकार कहो कि जो राम की शरण आता है उसको वे अपना लेते हैं यह बात झूठी पड गई। पै = परन्तु। प्रभु हू तें नाम को = प्रभु से भी प्रभु के नाम का प्रताप बढकर (प्रबल) है। आपनी ' दाम को = आप का स्वभाव अकारण कृपालु है इससे यदि आप मेरा उद्धार करो तो करो नहीं तो फिर मुझ तुलसी के खोटे कामों का खजाना खुल जायगा।

७१—तीरथ · किमि है = न तीरथ गया न धर्म किया और वेदोक्त करने योग्य कर्म कौन से हैं यह भी नहीं जानता । पोच = नीच । सोंचे अब = यदि भगवान् तुलसी के पापो पर विचार करें । याके = इस (तुलसी) के । छमि हैं = छमा करेगे । मेरे तौ नडरु = मैं तो डरता नहीं । खल अनखैहै = (तुलसी से नीच को अपना लिया इस पर) दुष्ट बुरा मानेगे । न गमि है = सज्जन भी सह न सकेंगे । भले ··· नमि है = यदि बडे पुण्यात्मा के साथ मुझे तराजू मे तोलो तो रामनाम के प्रताप से मेरा ही पलड़ा नीचा रहेगा । भाव यह है कि नाम का प्रताप राम से अधिक प्रतापी है ।

७२—जाति के दुनी सो = पेट की आगि अर्थात् भूख के कारण मैंने खाने मे धान्य कुधान्य का विचार नहीं किया अर्थात् नीच, ऊँच जिसका टुकडा मिला खालिया । सतिभाव = सच्चे भाव से अर्थात् हर प्रकार के पाप निडर होकर किये । पाउ प्रताप = मैने कीर्ति पाई और प्रतापी होगया । तुलसी सो = तुलसी जैसे निन्द्य को महा-मुनी समझते है । अति ही · रामपद = हे जीव (या मन) तू बडा भाग्यहीन है जो राम के चरणों में प्रेम नहीं करता । मूढ सुनी सो = अरे मूर्ख, इतनी बडी आश्चर्यजनक बात सुनकर कि तुलसीदास महा-मुनि कहलाते है) और देखकर । अपने समय में तुलसीदास एक चमत्कृत भक्त थे । उनका सन्मान बहुत था । उन्होंने अपने इतने बढने का कारण केवल रामनाम का प्रभाव ही बतलाया है ।

७३—(तुलसीदासजी मूलों में पैदा हुए थे । जो माता पिता को अरिष्टदायक है । इस कारण उन्होंने इन्हे जन्म से ही त्याग दिया था । उसीका इस कवित्त में आभास है । इसमे रामनाम का प्रताप वर्णन किया है ।) जायो कुल मान = भीख माँगने वाले ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ । ब्राह्मण को प्राय भिखारी भी कहते थे शायद तुलसीदासजी ने यही भाव व्यक्त किया हो । बधावनो···सुनि = पुत्रजन्मोत्सव पर जो गीत आदि गाकर आनन्द मनाये जाते हैं उनको सुनकर । भयौ को =

माता पिता को पाप और दुःख हुआ (अभुक्त मूल में होने से)। बारे त= लड़कपन से ही माता पिता के छोड़ देने के कारण। ललात दीन= दीन होकर द्वार द्वार भोजन को भटकता और ललचाता फिरा। जानत हो 'को=थोड़े से चनों के मिलने से इतनी प्रसन्नता होती थी मानो चार फल (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) मिल गये। सो तुलसी=ऐसा दीन मलीन तुलसीदास। साहिब है=अब एक सामर्थ्य वाले स्वामी का सेवक है। (जिसका अपूर्व यश लोगों में प्रख्यात है।) सुनत=यह सुनकर। सिहात=प्रसन्न होता है (सज्जन दूसरे की उन्नत देखकर प्रसन्न हुआ करते हैं। सोच=दुःख ब्रह्मा को दुःख इस लिये है कि उसने तुलसी के भाग्य में जो लिखा था उसके प्रतिकूल हो रहा है। या तुलसी के भाग्य का भविष्य न समझ पाया। बिधिहू को=सबके भाग्यों की गणना करने वाले ब्रह्मा को भी। सयानो=सज्ञानी। किधौं=अथवा। बावरो=मूर्ख। गिरि तें गरु=पहाड़ से भारी। तृन ते तनक को=तिनका से छोटे को भी।

७४—बेद कही=वेद और पुराणों में भी जिसका वर्णन है। लोकहू बिलोकियत=लोक में भी ऐसा ही देखा जाता है। रीझे=प्रेम करने में। कासी सोई=काशी में मरते समय महादेव जी भी मोक्ष के लिये रामनाम का उपदेश देते हैं। (शास्त्रों में लेख है कि काशी में मरने पर मोक्ष मिलती है। कवि का भाव यहाँ भी रामनाम का ही प्रताप बतलाना है) साधना लाई है=मोक्ष की अनेक साधना है पर किसी की भी ओर ध्यान न गया न उनको देखा ही। (यह शास्त्रों की बात हुई)। छाछी को ललात=छाछ को भटकते थे। प्रसाद=कृपा से। खात खुनसात=खाने में अरुचि दिखाते हैं, खाने से चिढ़ते हैं। सौंधे=स्वादिष्ट, विचित्रस्वाद। कहने का भाव यह है कि जिन लोगों को किसी प्रकार की सुविधा नहीं थी। रामनाम के प्रताप से वे सुखों से भी ऊब गये। (यह लौकिक बात होगई।) सुनियत=सुना जाता है। राजनीति की अवधि=राम के राज्य में जिसमें पूर्णतया राजनीति बर्ती

जाती थी। नाम चलाई है = पर हे राम आपके नाम ने तो उसका भी उलघन करदिया है। अयोग्य को ऊँचा पद दे दिया। (लोकोक्ति) चमडे का सिक्का चलाना एक लोकोक्ति है एक रुपये के बराबर चमडे के टुकडे का मूल्य नही के बराबर है। पर जब उसका सिक्का बनाया जाय और राज्य की ओर से जारी होजावे तो उसका मूल चाँदी या सोने के रुपये के बराबर हो जायगा। अर्थात बहुत बढ जायगा। इससे छोटे से छोटा आदमी पूरा सुख उठा सकता है। यह बात राजनीति के प्रतिकूल है। इसमे प्रजा व राजा दोनों को हानि उठानी पडती है। चमडे का सिक्का मुहम्मदतोगलक ने चलाया था जिससे राज्य मे हलचल मचगई थी। शायद तुलसीदास जी का भी उसी पर इशारा हो।

७५—(सुन्दर रामनाम के प्रभाव मे) सोच परत = चिंता और दुखों को भी दुख होता है अर्थात् सोच और सकट मिट जाते है। जर जरत = ज्वर आदि मिट जाते है। बूडियो तरनि = डूबी हुई नाव भी तैरने लगती है यानी जिसकी कोई आशा नहीं वह बात भी बन जाती है। होत वाम का = विमुख ब्रह्मा का भी अनुकूल स्वभाव होजाता है। भागत-अभाग = दुर्भाग्य भाग जाता है। अनुरागत विराग = वैराग्य मे प्रेम होजाता है (विरोधाभासालकार)। भाग जागत = भाग्य जग जाता है। निकाम = निकम्मे का। तुलसी हू से = तुलसी जैसे का भी। धाई धारि फिरिकै = आक्रमणकारी सेना भी फिरकर हित हो जाती है। गोहारि = पुकार कर अर्थात् स्पष्ट रूप से। आई मीचु मिटति = आई हुई मौत लौट जाती है।

७६—आँधरो = अधा। अधम = नीच। जड = मूर्ख। जाजरो = जर्जरित, दुर्बल। जरा = वृद्धा। जवन (यवन) म्लेच्छ। सूकर मग मे = सूअर के बच्चे ने रास्ते मे ढक्का देकर ढकेल दिया। हहरि = घबडाकर। हराम = (मुसलमान सूअर को हराम कहते है। हराम हन्यो = हराम ने मुझे मार डाला। यहाँ कवि का भाव राम शब्द के

निकलने से है) परीगो=पड़गया । काल फग मे=काल के चक्कर मे (मरगया)। बिसोक=प्रसन्न होकर । त्रिलोकपति-लोक गयो=वैकुण्ठ मे गया । नाम के प्रताप=रामनाम के प्रताप से । सोई=(अज्ञानावस्था में हराम शब्द में आए हुए रामनाम जपने से वैकुण्ठ जाने वाला यवन)। सनेह .... जन=जो सेवक प्रेम से जपता है । कही है जाति=कही नही जाती । अर्थात् अपूर्व फल मिलेगा ।

७७—जापकी न=जप करने वाला नहीं हूँ । तप . कियो=न तपस्या मे शरीर घुलाया । तप=कष्ट सहकर कोई काम करना । न तमाइ जोग=न योग करके किसी वस्तु का लालच किया। तमाइ=तमअ, (अरबी भाषा का शब्द है) लालच। (कोई साधन नहीं किया)। भाई.. न= भाई का भी कोई भरोसा नही है कि जो समय पर सहारा दे। न.. सौं= सच पूछो तो मैंने वैरी से भी वैर नहीं किया । बल जनको= और न शरीर बल है, मित्र, माता, पिता किसी का भी बल नहीं या मा बाप भी हितैषी नहीं है क्योंकि उन्होंने बचपन ही मे मुझे छोड दिया । लोक को न डर=यदि ससार बुरा कहेगा इस बात का भी डर नहीं । देव सहाय=न किसी देवता की सेवा ही की जो सहाय करें । गर्व .. को=धन व घर या वश का भी अभिमान नहीं है। राम . मनको=राम अपने स्वभाव से ही जो कुछ करेंगे वह अच्छा है, ऐसा तुलसीदास का स्वभाव है ।

७८—ईस=महादेव । दिनेस=सूरज । धनेस=कुबेर । सुरेस=इन्द्र । सुर=देवता । गौरि=पार्वती । गिरापति=ब्रह्मा। नहीं जपने=इनका मुझे जप नहीं करना है । तुम्हरेई=हे राम आपके ही नाम का । भव तारिबे को=ससार सागर से पार करने का, मोक्ष देने का । बागन=चलते फिरते (प्रत्येक दशा मे) । है बावरो सो=तुलसी तो बावला सा है अर्थात् नासमझ है । रावरो सौं=आपकी सौगन्ध । रावरेउ अपने=आप अपना समझ कर अपना लीजिये । जानकी-रमन=राम । रावरे बदन फेरे=आपके विमुख होने पर । ठाऊँ न=

स्थान नहीं । समाउँ कहाँ = मेरी गुजर कहाँ होगी । सकल निरपनें = कोई अपना नहीं । यहाँ सब देवताओं को छोड एक राम को अपना जान उन्हीं के पीछे पीछे लगा फिरना पागलपन का भाव दिखाता है ।

७९—जाहिर जहान में = यह बात संसार जानता है । एक भाँति भयौ = विचित्र हो गया । बिबुध धेनु = देवताओं की गाय सब आशा पूरी करने वाली कामधेनु गाय । रासभी = गधैया । बेसाहिए = खरीदते हैं (मोक्षदायक शुभ कर्मों को छोड कर विषयासक्त हो रहे हैं) । कराल·· में = कठोर कलियुग में । न · ·दाहिये = तीनों ताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) से भी शरीर नहीं जलता । तिहारो तेहि = तुलसीदास मन से, वचन से कार्य से आपका है । नाते निबाहिए = हे नाथ अब आप अपने स्नेह के नाते को और शरणागत पाल के नियम का पालन कीजिये । रक के निवाज = दीन की रक्षा करने वाले । उमरि दराज = आपकी उम्र लम्बी हो, दीर्घायु हो । चाहिये = ऐसा चाहता हूँ । (यहाँ भक्त रूप प्रजा का राम रूप राजा के लिये आशीर्वादात्मक भाव है)

८०—स्वारथ परमारथ = मैं अपनी स्वार्थ सिद्धि में चतुरता दिखलाता हूँ और परमार्थ के कामों में छल छिद्र । बाप = हे पिता । आजु लौं नीके = आज तक तो आपने मेरा अच्छा निर्वाह किया है । आगे = भविष्य में भी । सबल हे = शक्तिशाली और चतुर हो । कलि हहरातु है = कलियुग की दिन दिन दूनी कुचालि देख कर कि पहरेदार ही चोर हैं चित्त घबडाता है अर्थात् जिन से रक्षा की कुछ आशा करते है वही जड़ काटते है । तुलसी हे = मैं बलि जाता हूँ, यद्यपि आप सावधान है पर तथापि मेरी बार बार सँभाल करना कि कलियुग की कुचाल मे न आ जाऊँ ।

८१—(कलियुग का प्रभाव) दिन दिन दूनो = नित्य प्रति बढते जाते है । दुकाल = दुष्काल । दुरित = पाप । दुराज = दुष्ट राज या दो राज, कोई एक राजा नहीं, कभी कोई राजा बना कभी कोई उसको

उतार कर स्वय गद्दी पर बैठ गया जैसा यवन राज्य मे प्राय· होता आया है । सुकृति = शुभ कर्म । सकोचु है = कम होते जाते है । पैंत = दाव, ढोंग से । माँगे · पोचु है = यदि प्रचण्ड पापी को कुछ मिलने का दाँव लग जाता है और काल की कठिनता से भले बुरे हो जाते हैं अर्थात् उनको कुछ नही प्राप्त होता । अपने को = मुझ तुलसी को । अवलम्ब = सहारा । अम्ब डिम्ब ज्यों = बच्चे को जैसे माता का सहारा होता है । सकट-बिमोचु है = सब दुःख दूर करेंगे । तुलसी की साहसी = तुलसीदास के साहस की । सराहिये = प्रशसा कीजिये । राम सोचु है = राम के भरोसे पर अपने परिणाम का कि क्या होगा कुछ सोच नही है ।

८२ — (तुलसीदास जी अपने को अजामिल से भी गया बीता समझते है) मोह-मद-मात्यौ = मोह माया रूपी शराब से पागल । रात्यो··· ·नारिसो = मै कुबुद्धि रूपी स्त्री पर आसक्त हूँ (अजामिल शराबी और वेश्यागामी था) अजामिल वेद विहित धर्म से विमुख था, मैंने लोक लज्जा को छोड दिया है । आँकरो = अत्यन्त । सरकस हेतु है = इसका प्रबल कारण है । सहत नाहि = किसी की नहीं सहता । अजामिल ते = अजामिल से भी (अधिक नीचता) । ताहू = उस पर भी । सहाय है = कपट का घर कलियुग मेरा सहायक है । अर्थात् अजामिल सतयुग मे हुआ था इससे पाप अवश्य कम होगे पर कलियुग तो पाप बढाने वाला है । जैबे · ··टेक = जाने (नाश होने) के अनेक कारण (ढग) है । ह्वैबे = होने का केवल एक ही । पेट· ·हेत = पेट रूपी प्यारे पुत्र के लिये अर्थात् अजामिल ने उद्धार के लिये अपने पुत्र का नाम लिया था मैंने पेट को रामनाम लिया है । (रूपक मिश्रित व्यतिरेक) सोइबो = सोना । सोइबो सुख = यदि तुझे किसी बात का विचार न करके सोना ही है तो श्रीरामचन्द्र जी के स्नेह में मग्न हो कर सुख की समाधि क्यों नहीं लगा लेता अर्थात् राम के प्रेम में मग्न हो कर संसारी जाल को भूल जाना चाहिये । जागिबे रामनाम

को = यदि तू संसार में भली प्रकार से रहना चाहता है तो इस जिह्वा से रामनाम जपता रह । 'भूरि भागी' का भी 'अभागी' इसलिये कहा कि वह बुराइयों में फँसा हुआ तथा रामनाम हीन है । चाहे सांसारिक दृष्टि से वह भले ही भाग्यवान समझे जायँ किन्तु उन्हें बार बार इस संसार में जन्म ले कर दुःख भोगना पड़ेगा । कबध = सिर कटा हुआ धड़ जो युद्ध में कभी कभी उठ कर दौड़ता है, रुड । तुलसी •• •• अंध = तुलसीदास जी कहते हैं कि अंधे जीव विचार कर देख कि तेरा यह जीवन रुण्ड के दौड़ने के समान व्यर्थ है । धुन्ध = जिसे कम दिखाई देता है, धुंधला । धुंध परिनाम को = सारा संसार परिणाम के सम्बन्ध में धुँधला दिखाई देता है अर्थात उसके लिये लोग कुछ विचार ही नहीं करते ।

८३—जागिए न सोइए = इस संसार में न तो हम लोग जागते ही कहला सकते हैं और न सोते ही अर्थात् भ्रम में पड़े हुए हैं । बिगोइए •• जाय = अपने जीवन को व्यर्थ ही नष्ट करते हैं । दुख • रोइए = दुख के रोग से रोते हैं । कोह = क्रोध । कलेस = (क्लेश) दुख । कलेस कोह काम को = काम क्रोध के कारण दुख पाते हैं । राजा रंक = राजा से ले कर रंक तक । रागी = संसार के झगड़ों में फँसे हुए । भूरि भागी = जो संसार में बड़े भाग्यवान माने जाते हैं । जरत = जलते हैं । प्रभाव • नाम को = कठोर कलियुग का प्रभाव है ।

८४—बरन धरम गयो = वर्णाश्रम धर्म अर्थात् ब्राह्मणादि जो चार वर्ण हैं उन्होंने अपना धर्म त्याग दिया । आश्रम •••तज्यो = ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के अनुसार धर्म पूरा करना छोड़ दिया । त्रासन चकित = पापों के भय से डरे हुये । परावनो•••••है = भगदड़ सी परी हुई है । करम बिनास्यो = कुवासना अर्थात् बुरी इच्छाओं ने शुभ कर्म और उपासनाओं का नाश कर दिया है । ज्ञान-बचन = ज्ञान केवल बातों में रह गया है, वास्तविक ज्ञान नहीं रहा । बिराग बेष = वैरागियों का भेष बनाना ही वैराग्य है । जगत•• हरो सो है =

ऐसे पाखडों ने ससार को हर सा लिया है । गोरख=गुरु गोरखनाथ एक योगी थे । उनके उपासक लोग कानों में बडे बडे बाले डाले रहते हैं । जगायो जोग=योग का साधन फैला दिया । भगति लोग=लोगो को भक्ति के मार्ग से हटा दिया । निगम नियोग=वेदों की आज्ञाओं से । केलि ही छरोसो हे=खेल ही मे छल जैसा लिया हे अर्थात भुला दिया । रामनाम··· भरोसो है=तुलसीदास को तो एक केवल रामनाम का विश्वास है वही भव बधन मे छुडा सकता है और कलियुग मे अन्य साधन कारगर नहीं ।

८५—बिहाइ=छोड़कर । सुपथ=अच्छा मार्ग । कोटि=करोडों । कुचाल=बुरी चाल, कुमार्ग । वेद चली है=वेद और पुराणों के अच्छे मार्ग को त्याग कर लोगों ने बुरे मार्ग मे जाकर करोडो कुचालें चली है । काल कराल=बुरे समय में । काल कराल · ·छली है=इस बुरे समय मे दयालु राजाओं के भी सभासद आदि बडे छली हैं । वर्न बिभाग=वर्णों का भाग अर्थात् लोग अपने अपने वर्णों के अनुसार अब काम नहीं करते हैं अर्थात धर्म पर नही, चलते । दुनी=दुनिया । दुनी दली है=यह दुनिया दुख, पाप, दरिद्रता मे कुचली जारही है । स्वारथ को परमारथ को=इस लोक और परलोक की भलाई के लिये । कलि=कलियुग । कलि बली है=कलियुग मे रामनाम ही सब से बडा बली है ।

८६—भवसकट=ससार के कष्ट । दुर्घट=कठिन । अटो=परिश्रम करो । न मिटे अटो=ससार के जो कठिन दुख है वह नहीं मिट सकते, चाहे परिश्रम करके अनेक जन्म लेकर तप और तीर्थों में भ्रमते रहो । फोकट=थोथी वस्तु । झूठ जटो=झूठ मे जडा हुआ कलि में जटो=कलियुग मे न ज्ञान है न वैराग्य वह सब व्यर्थ और झूठे हैं । कौतुक=खेल । ठाट=समान । ठटो=तेयार करो । नट ठटो=नट के समान पेट रूपी बुरे पिटारे के लिये अनेक प्रकार के चेटक और खेल मत तैयार करो । निसिबासर=रात दिन । तुलसी · रटो=तुलसीदासजी

कहते हैं कि यदि तुम सदा सुख चाहते हो तो रात दिन श्रीरामचन्द्रजी का ही भजन करो ।

८७ –दम = इन्द्रियों का दमन । दुर्गम = कठिन । मख = यज्ञ । कर्म सुधर्म = धर्म के काम । अधीन धन को = सब धन के अधीन है अर्थात् सब धन से हो सकते हैं । साधन जोग = योग करने की क्रियाएँ । सों = से । दृढता तनको = चित्त को शान्ति नहीं होती । राम कृपालु = राम ही कृपा करेंगे और उद्धार होगा । अवलम्ब = सहारा है । सजमहीन = सब लोग सब प्रकार से सयम रहित हैं । इक·· जनको = सेवक को तो केवल राम नाम का आधार है ।

८८ = पाइसुदेह = सुन्दर मनुष्य शरीर पाकर । बिमोह ··लही = अज्ञान रूपी नदी के पार होने को मुक्ष पर कोई नाव भी नहीं है अर्थात् ज्ञान नहीं सीखा । करनी की = कोई अच्छा कर्त्तव्य भी नहीं किया । बरनी न बनाइ = भली भाँति वर्णन नहीं किया । (भक्तों की कथा सुनने से ईश्वर प्रसन्न होता है ।) अब गयो = अब बुढ़ापे मे शरीर निर्बल होगया । मन · मूकी = मन ने घृणा करके भी बुरी आदतें नहीं छोडी । नीके · तुलसी = तुलसीदास ने अपने मन में भली भाँति निश्चय कर लिया है । अवलव दूकी = दो अक्षर का ही अर्थात् राम के नाम 'राम का ही बडा सहारा है ।

८६—राम विहाय = राम से विमुख । मरा जपते = राम का उलटा "मरा, मरा" जपने से । बाल्मीकि आरभ में बहेलिया थे सो राम का सीधा नाम उनसे नहीं लिया गया था । उन्होंने 'मरा' शब्द का ध्यान किया था जिसके प्रभाव से आदि कवि हुए उन्होंने रामायण को रामजन्म से कई हजार वर्ष पहिले रच दिया था । कवि ··कोकिल = कवियों मे कोयल की भाँति मीठा शब्द बोलने वाले । गनि का = वैश्या । चलि चूकी = चाल और अपराध निभ गये अर्थात् अपराधी होने पर भी उनका निर्वाह हो गया । कुसमाज = दुष्ट लोगो की सभा के बीच मे । बजाइ = डंके की चोट अर्थात् सब के सामने । रही की = दु शासन

आदि मे द्रौपदी की प्रतिष्ठा भग न हुई । पाण्डु वधू = द्रौपदी । ताको दूकी = तुलसीदास कहते हैं कि दो अक्षर 'रा' और 'म' पर जिसका विश्वास और प्रेम है उसका अब भी वह भला करते हैं ।

९० नाम = रामनाम । अजामिल तारन = अजामिल जैसे दुष्टों को पार करने वाला है । वारन = गजराज । बारबधू = गनिका । हरे = दूर किये । विषाद = दुख । पिता सूको = पिता के दिये हुए कठोर दुःख और भय का समुद्र सूख गया । बिहीन = विमुख । गिल्यो = निगल गया । कलि चूको = कठोर कलयुग चूका नहीं अर्थात वे पाप करने लगते हैं और नर्क मे जाते हैं । राखि हैं राम = राम रक्षा करेंगे । जासु हिये = जिसके हृदय मे यह है । हुलसै बल = (रामनाम का) बल उमडता है ।

९१—जीव जहाँ = संसार मे जहाँ कहीं यह मेरा जीव पैदा हुआ । सो··· ··· दहो है = तुलसीदास कहते हैं कि वह वहाँ ही तीनो तापो से जलता रहा है । कियो अपनो = अपने कर्त्तव्यो के कारण । सुख· ·लहौ है = स्वप्न मे भी थोडा सा भी सुख न पाया । राम होउ = राम के नाम मे जो कुछ बुरा भला होवे वह होवे । न सोउ हिये = वह रामनाम भी हृदय से नहीं केवल जीभ से कहता हूँ । कियो ·रहो है = न तो मैने कुछ किया है और न करने का विचार है न कुछ कहता हूँ केवल मरना ही रह गया है । स्वर्ग नर्क की चिंता नहीं ।

९२—जी जै ·गाँउ = मेरे पास जिन्दा रहने को कोई स्थान है न कोई मेरा गाँव है । सुरालय = स्वर्ग । सम्बल = बलबूता या सामान । नाम रटौ = मैंने रामनाम रटा है । जम जाउँ = नर्क में मैं क्यो जाऊँगा । को ···नेरे = मेरे पास कौन जमदूत आ सकता है । तुम्हरो सब भाँति = सब प्रकार से मैं आपका हूँ । बलि = बलिहारी जाता हूँ । ठाहरू गहेरे = रहने को स्थान तलाशने वाले या मैने देखलिया मेरे रहने का स्थान तो आप ही है । बैरख = पताका, झण्डा । बैरख· ·पै =

अपनी पताका लगाकर अपनी रक्षा में रखिये । तुलसी   खेरे = तुलसी दास जी कहते हैं कि व्याध और अजामिल के जो स्थान हैं उन्हें ही मुझे बता दीजिये । भाव यह है कि अजामिल व्याध आदि पापी थे उनका आप ने उद्धार किया मैं भी ऊपर से आपका नाम लेने वाला हूँ (हृदय से नहीं) मुझे भी भवसागर से पार कीजिये ।

६३—का   जू = अजामिल ने कौनसा योग किया, अर्थात् कोई नहीं । कबहीं   पगाई = कभी भी आप से भक्ति नहीं की । व्याध   कहिये = बतलाइये तो सही, व्याध कब का साधु था (वाल्मीकि आरम्भ में व्याधा थे ।) अपराध   जनाई = क्या मैं ही ऐसा गहरा अपराधी हूँ कि जिसकी आप खबर नहीं लेते । करुनाकर   हित = दयालु राम की कृपा अकारण होती है उसके लिये यदि राम नाम लिया जाय । जो   दगाई = तो वह दगा देना ही है और कुछ नहीं । (यहाँ तुलसीदासजी की अकारण भक्ति का परिचय है) । काहेको   खीझिय = क्यों अप्रसन्न होते हो । पै रीझिय = परन्तु प्रसन्न हो जाओ । तुलसी   सगाई = तुलसीदास से भी तो आपका वही सम्बन्ध है । जैसा कि व्याध, अजामिल आदि से है ।

६४—जे मद-मार-विकार भरे = जो लोग कि अभिमान और कामदेव के विकारों अर्थात् इन से पैदा होने वाली बुराइयों से भरे हुए हैं जो अभिमानी और कामी हैं । अचार विचार = धर्म विहित काम, पूजा पाठ शौच आदि शास्त्रोक्त कर्म । समीप न जाहीं = कभी नाम भी नहीं लेते । तऊ = तिसपर भी । हे   दीन न पाहीं = तिसपर भी मन मे बड़ा अभिमान है कि यह जन दूसरे लोगों से कभी कुछ नहीं माँगेगा । उनकी निगाह में सब छोटे हैं और उनसे माँगना अपमान समझते हैं । तुमहूँ उर माहीं = आप हृदय की जानते हो । हम हैं तुम्हरे = हम आपके दास हैं । तुममें सक नाहीं = आप मेरी रक्षा करोगे इसमें सन्देह ही क्या है ।

६५—दानव = दनुके पुत्र, राक्षस लोग । देव = देवता, वेदों में देव शब्द का प्रयोग कहीं कहीं राक्षसों के लिये हुआ है पर अधिकतर देवताओं को । अहीस = शेषनाग । महीस = राजालोग । सिद्ध समाजी = सिद्ध

आदि के समाज या भिन्न भिन्न समुदाय। जगजाचक=ससारभर। (मुनि सिद्ध आदि) माँगने वाला है। दानि दुतीय नहीं=तुम्हारे सिवाय दूसरा दानी नहीं है। सब रावत बाजी=सब काम पूरा करते हो। तुलसीस=तुलसी के स्वामी। तऊ=तोभी। सबरी बिनु=सबरी के बिना दिये अर्थात बिना जूठे बेर खाये। (अटूट भक्तवत्सलता का भाव)। भाजी=गई। राम गरीब नेवाज!=हे राम आप गरीब पर दया करने वाले थे। भयेहो नेवाजा=आप गरीबो का उद्धार करके ही गरीब निवाज हुए हो।

९६—किसबी=काम करनेवाला, कारीगर। बनिक=वैश्य। भाट=वंश प्रशसक। चाकर=नोकर। चपल=बातून। चार=चर, दूत। चेटकी=अचभे के काम करने वाला, बाजीगर। पेट को=पेट भरने के लिये, भोजनो के लिये। गुन गढत=गुणवान होते जाते है अर्थात् नई नई कलाएँ निकालते जाते हैं, या किसी के गुणो की प्रशंसा के पुल बाँध देते हैं। अटत बन=घने जंगलो मे घूमते फिरते हैं। अहन=दिन दिन भर। अखेटकी=शिकार के लिये। ऊँचे नीचे=बुरे भले। पेटही को पचत=पेट भरने के लिये ही पचते है। बेचत बेटकी=पेट के लिये क्या नही करते बेटा बेटी तक को बेच देते है। आगि पेटकी=समुद्र की अग्नि से पेटकी अग्नि बढ़कर है अर्थात् मनुष्य की तृष्णा किसी प्रकार दूर नही हो सकती। तुलसी हीतें=वह (पेट की अग्नि) केवल रामनाम रूपी काले बादल से ही मिट सकती है अर्थात रामनाम की भक्ति से ही मनुष्य की तृष्णा दूर हो सकती है।

९७—(किसी को कोई उद्यम नही) खेती न किसान को=किसान के लिये खेती के उद्यम से पूर नही पडती, या खेती फलती नहीं। बलि=मैं बलिहारी जाता हूँ। बनिज=बाणिज व्यापार। जीविका बिहीन=बिना उद्यम के। सीद्यमान=कष्ट पाते है, दुखी है। कहाँजाई=कहाँ जाँय और क्या करें। लोकहू=संसार मे भी। बिलोकियत=ऐसा देखा जाता है। साँकरे सबै पै=कष्टपडते समय सब पर। रावरे

हरी=आपही ने कृपा की है। दारिद 'हहाकरी=हे नाथ दरिद्रता रूप रावण ने संसार को दबा लिया है। और आप पापों के नाश करने वाले हैं जिससे तुलसीदास 'हाहा' (विनय) करता है।

९८—जोबनै जुर=यौवन के ज्वर में ये सब बातें कुल करतूति आदि जलती हैं। अर्थात कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विचार नहीं करते। कल=चैन, आराम। राजकाज कुपथ=(उस यौवन रूपी ज्वर मे) राजकाज रूपी कुपथ्य कर डालते हैं। कुसाज' 'के=सब भोग रोग का ही सामान है। बात यह है कि राज काज से जो भोग प्राप्त होता है वह सब रोग बढ़ाने वाले हैं। वेद-बुध=वेद के जानने वाले। बलकहीं=बकते हैं विद्या' 'बलकही=विद्या पाकर प्रलाप करते है, बकते है (रूपक) पब्बय तें छार=पर्वत से कण। पलकहीं=थोडी ही देर मे। कासों कीजे रोष=किस पर क्रोध करें। पाहिराम=हे राम, रक्षा करो। कुलि=बिल्कुल। खलल=बखेडा मचादिया। खलक ही=दुनियाँ मे।

९९—बबुर=काँटेदार वृक्ष। बहेरे=बहेड़े का वृक्ष। बनाय बाग लाइयत=सँभालकर बाग लगाते हैं। रूँधिबे=मिट्टी दबा दबा कर लगाना या बारि करना जिससे कोई उखाड न ले। सुरतरु=कल्पवृक्ष। बबूल आदि का बाग लगाकर कल्पवृक्ष काट कर बारि लगात है अर्थात् लोग राम नाम को छोडकर ससारी विषयों में मन लगाते है। गारी देत' 'हूको=हरीश्चन्द्र जैसे दानी, दधीचि जैसे परोपकारी को (जिन्हो ने हड्डी दान देकर शरीर छोड दिया) गाली देते है। आपु ' हैं=आप इतने लोभी हैं कि चना जैसी खुश्क चीज खाकर हाथ चाटते हैं कि कोई अंश रह न जाय। (छेकोक्ति) हूको=पर भी। अभागी=भाग्यहीन। भूरिभागी=बडे भागवाला। डारियतु है=फटकारते हैं। कलि ''' 'महत=कलियुग के पापों से मनको अत्यत मैला किये हुए हैं। मसक' ' पाटियतु है=मच्छर की पसली (हड्डी) से समुद्र पर पुल बनाना चाहते हैं अर्थात् असभव को सम्भव करना चाहते हैं।

१००—(तुलसीदासजी, कलियुग से प्रार्थना करते है) सुनिये भूमिपाल = हे कलियुग राजा । जाहि' ताहिको = जिसको आप बरबाद करना चाहो उसको कौन बचा सकता है । हौं तौ दीन = मैं तो गरीब । दूबरौ = दुबला पतला । ढारौ = फैलाया बिगाडा । रावरौ न । आपका कुछ नहीं । मैं हूँ = मै भी । तें हूँ = तू भी । ताहि को जाहि को = उसी के हैं जिसका सब ससार है । कोह = क्रोध । लाइकै = लाकर । दिखाइयत = दिखाता हे । आँखि मोहि = मुझको आँखें दिखाते हो, डराते हो कि इनसे पीडा दिलवाऊँगा । एते मान = इतना अधिक । अकस = अनस, नाराजगी । कीबे को = करने के लिये । आप आहि को = आप कौन हैं (जो इतना नाराज होते हो) स्वान = कुत्ता (राम-राज्य काल मे एक ब्राह्मण ने मार्ग मे पडे हुए कुत्ते के लात मारी थी । कुत्ता ने राम से प्रार्थना की । राम ने कुत्ते का पक्ष लिया और ब्राह्मण को दण्ड दिया ।) राम बोला नाम हौं = मेरा नाम रामबोला है । और राम स्वामी का सेवक हूँ । आरम्भ म तुलसीदासजी का नाम रामबोला था ।

१०१—मोहि रहा है = मुझसे माया लगादी है । हौ आजु = इस समय आप संसार के स्वामी होने योग्य हो । पै महा है = मेरी भी टेव (आदत) कुटेव (बुरी है) जग' 'हहा है = मैं राम के अतिरिक्त दूसरे से निवेदन नही करूँगा ।

१०२—भागीरथी = गगाजी, राजा भागीरथ राम के पूर्वज थे । ये अपने पूर्वज सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार हित कठिन तपस्या कर के गगाजी को धरती पर लाये थे । इसीसे इनको भागीरथी कहते हैं । जलपान करौं = जल पीता हूँ । अरु = और । नाम द्वै राम के = राम के दो नाम अर्थात् थोडी देर रामनाम जपता हूँ । या राम के नाम के दो अक्षर 'रा' और 'म' या राम और सीता दो नाम । नितै = नित्य । हौं = मैं । कलि = हे कलियुग । भूलि हौं = भूलकर भी तुम्हारी ओर नहीं देखूँगा । जानि करौ = मुझसे समझ बूझकर जोर लगाना या यह जानकर कि मैं तुम्हारे हाथ नही आ सकता । परिनाम हौं = अन्त में

तुम्ही पछिताओगे पर मैं नहीं डरूँगा। कहने का भाव यह है कि तुलसी दास जी को कोई सांसारिक प्रलोभन सन्मार्ग से नहीं हटा सकता। उर-गारि=(उरग + अरि) सर्पो का बैरी गरुड। एक बार गरुड ने सर्प समझ कर एक ब्राह्मण को निगल लिया था। ब्रह्म तेज के कारण उनके पेट मे जलन होने लगी। अन्त में उनको उगलना पडा। वह उसको पचा न सके। हौ हितैहों=उसी भाँति मैं हे कलियुग तेरे लिये हितकर न पडूँगा।

१०३—राजमराल=राजहंस। पेलिकै=ढकेल कर, (घृणा से) छोड़कर। खूसर=खूसट। सुचि को=सुन्दर और पवित्र स्थानो को छाँटकर (चुनकर) ऊसर भूमि को बीच मे इकट्ठा करते हैं=अर्थात मोक्ष देने वाले शरीर की शक्तियों को अनित्य सुख मे काम लाते हैं। भभेरि=चक्कर खाकर। गुन भभेरि=गुन और ज्ञान की बातों म चक्कर खाकर, अर्थात कुछ नहीं समझते। मूसर को=ओखली मे अनाज कूटने का एक डंडा सा होता है, धनकुटा। कलि हरो=कलियुग ने आचार विचार दूर कर दिये हैं। धमधूसर=मूर्ख बुद्धिहीन। न सूझ को=मूर्ख को अपना हानि लाभ नहीं सूझ पडता।

१०४—कीबे कहा=क्या किया जाय। पढिबे को कहा=क्या पढा। फल विचारे=जो यदि वेद के फल को समझ कर उस पर विचार नहीं किया। स्वारथ विसारे=राम का नाम जो कलियुग मे लौकिक तथा पारलौकिक इच्छा पूरी करने वाला है उसको छोड देते हैं। स्वारथ=लौकिक इच्छा। परमारथ=पारलौकिक इच्छा। बाद विवाद=व्यर्थ की जिद व बहस करके। विषाद बढाइ=दुख बढा कर। छाती जारी=आप भी दुख पाते हैं और दूसरों को भी दुख देते है। चारिहि को=चारों वेदों का। छहों=छ शास्त्रों का। नव को=नौ, व्याकरण का। दस आठ=अठारह पुराणों का। इनके पवित्र पाठों को कुपाठ की भाँति फाड़ देते हैं अर्थात इनका ज्ञान रामनाम की भक्ति के बिना व्यर्थ है।

१०५—आगम = शास्त्र (न्याय, वैशेषिक, साख्य योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमासा या वेदान्त)। मारग जाने = ईश्वर प्राप्ति के करोडों मार्ग बतलाते हैं जिन से कुछ जान नही पडता है। अर्थात् वेदादि मे ईश्वर प्राप्ति के सन्यास आदि के अनेक मार्ग हैं। जे सयाने = जो मुनि आदि हैं वे फिर अपने आप को ही ईश्वर समझने लगते हैं। चतुर है वही सिद्ध कहलाते है अथवा चालाक लोग मुनि और सिद्ध बन जाते हैं। धर्म ग्रसे = सब धर्मो को कलियुग ने दबा लिया। लै जीवा = जान लेकर। पराने = भाग गये। को मरै = तुलसीदास कहते हैं कि कौन इस प्रकार की चिंताओ मे जान घुलावे। हम हाथ बिकाने = हम तो राम के होगये हैं, दास बन गये हैं।

१०६—धूत = धूर्त, मूर्ख, कपटी। रजपूत = राजपूत क्षत्री। जोलाहा = कोली (मुसलमान कोली को जुलाहा कहते हैं)। काहू ब्याहब = किसी मे सम्बन्ध नही जोडना है जो किसी की जाति बिगरेगी। (चाहे किसी जाति का समझो ऊँच या नीच)। सरनाम = प्रसिद्ध। ओऊ = वह भी। जाको ओऊ = जिसको जो कुछ भी अच्छा लगे वह वैसा कहै। यहाँ तो। माँगि कै खैऊ = भिक्षा माँग कर खाना मसीत (मसजिद), अर्थात् मन्दिर मे सोने के अतिरिक्त मुझे किसी से कुछ काम नहीं है। इस से यह जान पडता है कि तुलसी दास जी के विषय में इस प्रकार की अफवाएँ उडा रक्खी होंगी। लैवेको दोऊ = लेना एक न देना दो (लोकोक्ति) किसी से कुछ सरोकार नही।

१०७—मेरे पाँति = मेरी कोई जाति पाँति नही है। न चहौं पाँति = न मैं किसी जाति पाँति मे होना ही चाहता हूँ या मैं किसी जाति पाँति मे होकर किसी की जाति पाँति नही बिगाड़ना चाहता हूँ। मेरे को = न तो मै ही किसी का कुछ लाभ कर सकता हूँ और न मेरा ही कोई कुछ लाभ कर सकता है। तुलसी को = तुलसीदास को एक रामनाम का ही भरोसा है। अयाने = मूर्ख। उपखानो = (उपाख्यान) कहावत, लोकोक्ति को। नही बूझैं लोग = लोग नही जानते

हैं कि । साह को = सेवक का गोत वही होता है जो स्वामी का । साधु ' कहा = साधु हूँ अथवा धूर्त्त हूँ नीच हूँ या ऊँच इसकी किसी क क्या चिंता है ? का पर्गों = क्या किसी के दरवाजे पर धरना देता हूँ । जो ' राम को = जैसा हूँ (भला या बुरा) वैसा राम का हूँ ।

'१०८—कुसाज = बदनामी के काम बुरे काम । खरो खूब है = सच्चा सेवक है, पूरा सेवक है । साधु माधु = साधु लोग सच्चा साधु समझते हैं । खल = दुष्ट । बानी = बातें । बबूब = बुलबुले । बानी है = बुलबुले की भाँति लोग अनेक प्रकार की बातें गढगढ़ कर इधर उधर कहते फिरते हैं । डर न ऊब है = मैं सब की सह ही लेता हूँ किसी से घृणा नहीं करता दुखी नहीं होता । भलो पोच = तुलसी की भलाई बुराई । राम दूब है = राम की शक्ति रूप धरती में मेरी बुद्धि रूप दूब उग रही है अर्थात् मैं तो केवल राम की भक्ति करता हूँ । सांसारिक भलाई बुराई पर मेरा कोई ध्यान नहीं है ।

१०६—जगम = घूमने फिरने वाले साधु लोग । जागै जगम = दुनियाँ में घूमने फिरने वाले साधु सजग (चैतन्य) रहते हैं । जती = (यती) सयम करने वाले । जमाती '' जमात = समाज बाँध कर रहने वाले साधु । ध्यान धरैं = ईश्वर में ध्यान लगाये रहते हैं । डर काम को = इन साधुओं के हृदय में लोभ, मोह, क्रोध, काम का डर लगा रहता है । जागैं = चैतन्य रहते हैं । बडे बाम के = भयानक वैरी के समाचार सुन कर सोचते हैं । चकितचित = अचम्भे में होकर । जागैं धाम के = लोभी लोग धन, घर तथा धरती के लोभ से चिंतित रहते हैं । भोग ही = भोग के लिये । सोग बस = शोक के कारण ।

११०—राम हित = मेरे राम ही माता, पिता, भाई-बन्धु, कुटुम्बी, गुरु, आदि पूज्य लोग और परम हितैषी हैं अर्थात् जो कुछ हैं मेरे राम ही हैं । साहेब = स्वामी । सखा = मित्र । सहाय = सहायता देने वाले । नेह = स्नेही । नाते = रिस्तेदार । पुनीत चित = जिनके चित्त पवित्र

हैं। कोस = कोष, खजाना। कुल = कुटुम्ब। गति = अन्तिम गति या दशा। लागि पति = सब हमारी राम स्वामी तक ही हैं अर्थात् मैं उपरोक्त बातों से सम्बन्ध तोड सकता हूँ पर राम से नही। सुजस = अच्छा, बडाई। सुलभ = अच्छा लाभ। राम तें मोर भल = राम ही से हमारा भला है या राम ही हमारा भला करेंगे।

१११—बलि जाऊँ = बलिहारी जाता हूँ। राम ˙ ˙ सुख दायक = राम अपने सेवकों को सुख देने वाले है। राम ˙लायक = राम सब प्रकार से सुन्दर और योग्य है। सकट मोचन = कष्टों से छुडाने वाले। राजीव विलोचन = कमल रूपी नेत्र। करुना यतन = दया के घर। प्रनतपाल = जो शरण में आवे उसका उद्धार करने वाले। पातक हरण = पाप दूर करने वाले। कलि ˙विकल = कलियुग से डरे हुये तुलसीदास।

११२ (राम के कर्त्तव्यो का वर्णन) जय = आपकी जय होवे। मथन = मारने वाले। मानहर = अभिमान हरने वाले अर्थात् मारने वाले। मुनि दच्छ = मुनि के यज्ञ की रक्षा करने में चतुर। सिला तारन = शाप वश अहिल्या जो शिला होगई थी, उसको तारने वाले। करुना-कर = दया के सागर। नृपगन विहंडन = राजा लोगों के बल और अभिमान सहित शिवजी के धनुष को तोडने वाले। कुठारधर-दर्प-दलन = परशुराम के अभिमान को दूर करने वाले। दिनकर मडन = सूर्यवश की प्रतिष्ठा बढाने वाले। जनक प्रद = जनकपुरी को आनन्दित करने वाले। सुखमा भवन = सुन्दरता के घर। सुर-मुकुट-मनि = देवताओं के मुकुट की मणि रूप अर्थात् सब देवताओं से पूज्यनाय। जानकि-रमन = सीतापति राम।

११३—जयंत-जयकर = जयंत को जीतने वाले। सज्जन-जन-रंजन = सज्जनों और भक्तों के चित्त को प्रसन्न करने वाले। विराध-वध-विदुष = विराध राक्षस के नाश करने में विद्वान् अर्थात् चतुर। विबुध ˙˙ भंजन = देवता और मुनि लोगों के भय को मिटाने वाले। निसिचरी˙

प्रयाग । यच्छेस = कुबेर । तीरथ पति 'तेहि = उसमें प्रयाग के समान अंकुर पैदा होय और कुबेर उसकी रखवाली करें । मरकत मय शाखा = नीलमणि की उस में शाखा होवे । लच्छ = लक्ष्मी । सुपुत्र ' जेहि = लक्ष्मी ही जिसके सुन्दर पत्ता की मजरी होय । कैवल्य = कैवल्य मुक्ति, जब आत्मा को पूर्णज्ञान हो जाता है और वह प्रकृति से छूट जाता है। तब वह केवल शुद्ध पुरुष रह जाता है। उस अवस्था को कैवल्यावस्था कहते हैं । कल्पतरु = कामना पूरी करने वाला वृक्ष । कैवल्य ''बरिस = उस थाँवले में ऐसा कल्पवृक्ष पैदा हो जो मोक्ष, चारों फल (अर्थ धर्म काम और मोक्ष) का देने वाला हो, अच्छा जिसका स्वभाव हो, सम्पूर्ण सुखों की वर्षा करने वाला हो । तोहि सरिस = तो भी क्या वह आप के हाथ के समान दानी हो सकता है ? अर्थात नहीं । रूपक से-पुष्ट (मिश्रित) अतिशयोक्ति ।

सुमेरु पर्वत का थाँवला बनाकर सुन्दर चिंतामणि का बीज बोया जाय । वह बीज कामधेनु के अमृत सदृश पवित्र दूध से सींचा जाय । तीर्थराज प्रयाग के समान अंकुर उगे जो यच्छराजकुबेर से रक्षित होवे । उस अंकुर में नीलमणि की शाखायें निकलें । लक्ष्मी से उसमें सुन्दर पत्ते हों । ऐसा जो कल्पवृक्ष जो मोक्ष तथा चारों फलों का दाता होवे । हे राम आपके हाथ उससे भी अधिक दानी है । पृथ्वी से लेकर वृक्ष तक सब वस्तुएँ अलग अलग इच्छा पूरी करने वाली हैं सब का सार रूप जो कल्प-वृक्ष होगा वह सब से बढ़कर होगा । परन्तु तुलसीदास उसको राम की भक्ति से तुच्छ ही समझते हैं । अर्थात उन्हें मोक्ष आदि की कोई चिन्ता नहीं है ।

११६—जाय = नाश हो जाय अथवा व्यर्थ है । सुभट समर्थ = बलवान योद्धा हो कर । रारि न मडै = लड़ाई न लड़े । जती = (यती) संयमी जितेन्द्रिय । विषय वासना = सांसारिक सुखों की इच्छा । छडै = छोड़े । जाय धनिक बिनु दान = वह धनवान हो कर व्यर्थ है जो दान नहीं करता । जो रत न सुकर्महिं = जो अच्छे कामों में न लगे । तिय'

हित = वह स्त्री व्यर्थ है जिसे स्वामी से प्रेम न हो । सब तुलसीदास जी कहते हैं कि जिसका नियम से श्रीराम जी के चरणों में मन नही उसका सब कुछ किया कराया व्यर्थ है ।

११७—को ' निरदह्यो = ऐसा कौन है जो क्रोध से न जला हो । काम '' कीन्हो = काम ने किसको वशीभूत नही किया । को न '' दीन्हों = लोभ ने किसको कठिन फदों में फाँस कर डराया नही । नारि नयन सर = स्त्री के नेत्र रूपी वाण । श्री = लक्ष्मी, धन । लोचन '' नर = ऐसा कोई भी प्राणी नही जो धन पाकर आँखें रहते हुए भी अभिमान से अंधा नही हुआ । सुर को = स्वर्ग, पाताल, पृथ्वी पर कौन है । जु जय न = जिसको मोह ने नही जीता हो । जो ऊबरै = वही आदमी ऊपर की बातों से बच सकता है । जेहि नयन = जिनकी कमल-लोचन-राम ने रक्षा की हो ।

११८—सँधान = वाण चलाना । सुठान = अच्छे प्रकार से भौंह ''' बाँचे = जो पुरुष स्त्रियों के कमान रूपी भौंहों द्वारा भली भाँति चलाये हुए वाण रूपी कटाक्ष (दृष्टि) से बच गये । कोप-कृसानु = क्रोध रूपी अग्नि से । अवाँ = जिसमें कुम्हार वर्त्तन पकाता है । गुमान-अवाँ = अभिमान रूपी अवे में । घट आँचे = घडे के समान जिनके मन नही तपे । लोभ नाँचे = लौकिक बातों के लिये लोभ करना ही एक मदारी है उसने किसके मन रूप बन्दर को नहीं नचाया अर्थात् लोभ में फँस कर कौन अनुचित काम नही करता । नीके साँचे = तुलसीदास जी कहते हैं कि वैसे तो सभी साधु अच्छे ही हैं परन्तु वे ही लोग रामचन्द्र जी के सच्चे सेवक है जो ऊपर कहे हुए काम, क्रोध, लोभादि से बचे हैं ।

११९—भेप सु बनाइ = सुन्दर साधु वेप बना कर । चुवाइ = मीठी बातें बना बना कर करते है कि बडी पवित्र और रसीली जान पड़ती हैं । जरनि = तृष्णा, लालच । लालि पालियत = लालन पालन करके । गति = शरण । प्रगटै उपासना = भक्ति पूजा आदि जो करते है उसे प्रकट

कर देते है । दुरावे दुरवासना = दुर्व्यसनों को छिपाते हैं । मानस = मन । राग = दुनियाँ से प्रेम । तुलसी · · राम की = तुलसीदास जी कहते कि ऐसे भक्त राम की भक्ति चाहते हैं, जो उनको नहीं मिल सकती है ।

१२०—कालिह ही तरुन तन = कल ही मैं पुष्ट शरीर वाला युवा हो जाऊँगा । कालिह धरनि धन = मैं कल ही भूमि, धन पैदा कर लूँगा । कुचालि = खोटे लोग । साधौंगो = सिद्ध कर लूँगा, काम पूरा कर लूँगा । कालिह = आने वाली कल । कालिह ही राजा समाज = कल ही राजाओं जैसे ठाट बना लूँगा । मसक ह्वै · हालि है = मच्छर के समान छोटा है । यदि मच्छर कहे कि मेरे बोझ से पर्वत हिल जायगा तो हिल नहीं सकता ऐसे ही मनुष्य के किये कुछ नहीं हो सकता । कुभाँति = दुर्बुद्धि । घालि आई = नष्ट कर आई है । देखत· · ·कालिह है = देखते सुनते समझते हुए भी यह बात किसी को नहीं सूझती कि कभी कल (कल कभी नहीं आता) का भी अन्त होगा अर्थात् नहीं ।

१२१—तिकाल = (त्रिकाल) भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीनों कालों में । तिहूँलोक = स्वर्ग, मृत्यु पाताल तीनों लोकों में । मद = पतित, बुरा । निदै = निन्दा करते हैं । न सकोचु है = मैं लज्जित नहीं होता । जानत न जोग = रामचन्द्र जी मुझे योग्य नहीं समझते । हिय हानि मानौ जानकीस = सीता जी के स्वामी रामचन्द्र जी (मुझे अपनाने से) हानि समझते हैं । परेखो = पछिताना, दुखी होना । पातकी पोचुहौं = क्यों कि पापी, छली, नीच हूँ । महाराजहू विमोचुहौं = रामचन्द्र जी ने भी कहा है कि मैं शरणागत का दुःख दूर करने वाला हूँ । निज अघ जाल = अपने पापों का समूह । कलिकाल की करालता = कलियुग की भयंकर कठोरता । विलोकि = देखकर ।

१२२—सेतु = हद, मर्यादा । श्रीरामचन्द्र जी मर्यादा पुरुषोत्तम हैं । जग मंगल के हेतु = संसार की भलाई के लिये । भूमि भार हरिबे को = पृथ्वी का बोझ दूर करने को, संसार का उद्धार करने को । नीति = न्याय नीति· · · मान = न्याय की रक्षा करना और विश्वास व प्रेम करने

वालों का मान करना यह भगवान का नियम है । पन = प्रण, प्रतिज्ञा । बानर = यहाँ हनुमान जी और सुग्रीव की ओर लक्ष्य है । कनावडे = ऐहसानमन्द । प्रसंग = हाल । अनुचर = सेवक । रीति = प्रण । घर जायउँ = घर में पैदा होने वाला आदमी ।

१२३—निवाह = निर्वाह, गुजर । नाम कीजै = हे राम आपके नाम के प्रताप से मेरी गुजर तो अच्छी हो जाती है । उर सोहात = हृदय में सब सासारिक बातें अच्छी लगती है । मैं न लोगनि सुहात हौं = इस कारण मैं लोगों को अच्छा नही लगता हूँ । चखकोर = आँखों का किनारा अर्थात् मेरी ओर थोडी कृपा दृष्टि से देखो । ताहि लगि = उसके लिये । रक = दरिद्री । सनेह = चिकनाई अर्थात् घी, प्रेम, (इस शब्द में श्लेष है अर्थात् जैसे रक घी को ललचाता है वैसे ही मै आपके स्नेह को ।) ललात हौं = ललचाता हूँ । सकुचात हौं = लज्जित होता हूँ । लोक एक भाँति को = आजकल ससार का ढंग विचित्र है अर्थात् सब के स्वभाव और आचरण उलटे है । तिलोकनाथ लोक बस = तीनों लोकों के स्वामी रामचन्द्र जी भक्तों के वस में हैं अर्थात् भक्तों की इच्छानुसार काम करते हैं । सोच = चिन्ता । स्वामी सोच ही सुखात हौं = रामचन्द्र जी के सोच में ही सूखता हूँ । यदि राम तुलसीदास का उद्धार न कर सके तो उन्हें बुराई होगी यही चिन्ता है ।

१२४—तौलौं = तब तक । लोलुप = लालची । ललात = ललचाता है । लबार = बकवादी । तबलौं वियोग रोग सोग = आदमी तभी तक वियोग (जुदाई) और रोग का शोक करता है । भोग जातना को = तभी तक ससार के कष्ट भोगने पडते हैं । जुग = युग । जाम = (याम) । प्रहर । जुग जाम को = थोड़ा सा जीवन भारी हो जाता है । दहत अति नित तनु = नित्य प्रति शरीर जलता रहता है । तुलसी काम को = तुलसीदास जी कहते है कि जब तक मोह क्रोध और काम का दास है अर्थात् इनको नही छोडेगा । निरापने = अपने नहीं, अपने से अलग ।

जौलौ · · रामको = जब तक कि वह गाजे बाजे के साथ राजा श्रीराम-चन्द्र जी का दास नहीं हो जाता है।

१२५—हीन = पतित, नीच। जहाँ··· कलेस को = मनुष्य जहाँ कही भी हो वहाँ दु ख ही उठाता है अर्थात् दुख पाता है। उबैने पायँ = नंगे पैरो। खलाय = खाली करके। बाँये मुँह = मुँह फाडे हुए, दीनता दिखा कर। पराभौ = तिरस्कार, अनादर। दयावनो = दयालु, दया उप-जाने वाला। दुसह = जो कठिनता से सहा जाय। साथरी = पत्तों व तिनकों का बिछौना। झूने = झिरझिरे। खेस = मोटा वस्त्र। जीह = जिह्वा। राजन के राजा महेश को = जो राजाओं के राजा और शिव जी के भी स्वामी है।

१२६—ईसन के ईस = स्वामियों के भी स्वामी। देव ! हे नाथ। प्रान हू के प्रान हौ = प्राणों से अधिक प्यारे हो। काल हू के काल = काल को भी आप नष्ट करने वाले हैं। (प्रलय होने पर काल भी नष्ट हो जाता है) महाभूतन के महाभूत = पंच महाभूतों के भी कारण स्वरूप (पंच महा-भूत-पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश)। कर्म हू के कर्म = माया के भी माया, प्रकृति के भी आश्रय। निदान हू के निदान हो = आप सृष्टि होने के जो कारण हैं उनके भी कारण हैं अर्थात् सब के मूल हैं। निगम = वेद। अगम = जहाँ तक पहुँच न हो सके। सुगम ·· करुना निधान हो = परन्तु आप इतने अधिक दयालु हैं कि आप तुलसीदास जैसे व्यक्तियों को भी आसानी से मिल जाते हो। बोल = वचन, कथन। वारापार = शक्ति, थाह। बोल वारापार = आपके वचनो का भेद नही पा सकता। सावधान = चतुर। साहिबी = प्रभुत्व।

१२७—आरतपाल = दीनों की रक्षा करने वाले। जेही = जिसने भी। तहँ ठाडे = वहाँ उपस्थित हुए। अकरे = महँगे। खोटे = खराब भी। डाढे = जले। तिहुँताप = तीनों ताप दैहिक, दैविक, भौतिक। बदौं = कहता हूँ, वर्णन करता हूँ। पाहन = पत्थर। काढे = निकाले।

१२८—कृपान = तलवार। कृपा न कर्हू = अत्यन्त निर्दई। काढि भागे = कठिन काल के समान तलवार खींचे हुए अपने निपट निर्दई पिता हिरण्यकश्यप को देख कर प्रहलाद जी डर कर भागे नहीं। ठाउँ = स्थान। राम • • जागे = हिरण्यकश्यपु ने तलवार दिखाकर पूछा कि बता अब तेरा रक्षक राम कहाँ है ? प्रहलाद ने उत्तर दिया कि वह सब जगह है तब पिता ने पूछा कि वह इस खंभे मे भी है? प्रहलाद जी ने उत्तर दिया कि हाँ, इतना सुनकर नृसिंह जी प्रकट हुए। बैरी बिदारि = शत्रु हिरण्यकश्यपु को फाड कर। अनुरागे = प्रसन्न हुए। पाहन पूजन लागे = पत्थर की सब लोग पूजा करने लगे।

१२९—अन्तर्जामिहु = हृदय की बात जानने वाले। बाहरजामी = बाहर जगत की बात जानने वाले। पन्हाइ = पसुराकर, थनों में दूध उतार कर। लवाइ = हाल की ब्याई हुई। बोलनि = आवाज। कान किये तें = सुनकर। बूझि = समझ कर। बियेतें = दूसरे से। कहिबे बियेतें = यह पागलों की सी बात दूसरे से कहने योग्य नहीं है क्योंकि इसपर लोग अचानक विश्वास नहीं करेंगे। पैज • हियेतें = प्रहलाद जी से जिद पडने पर उनकी सहायता को भगवान् पत्थर से प्रकट हुए, हृदय से नहीं।

१३०—बालक = प्रहलादजी। कायर • चलाई = कायर हिरण्यकश्यपु ने उनके मारने के लिये करोडों कुचालें चली। परिताप = दुःख। खोरि = कमी, कसर। भूरि = बहुत। बिषमूरि = बिषैली जडी। सुधाई = सीधे पन से। सुधा की मलाई = अमृत से भी अधिक अमृत की मलाई के समान लाभकारी हुई।

१३१ – करतूत कुभाँति = अयोग्य काम, बुरा व्यवहार। चली न चलाई = कुछ फल नहीं हुआ। सुजोधन = दुर्योधन। कलि छोटो छलाई = छल छिद्र में कलियुग का छोटा भाई हुआ। छलाई = छलिया। भो = हुआ। नतपालु = प्रणतपाल, शरणागत के रक्षक। खेचर = राक्षस। खीस = नाश होगये। खलाई = दुष्ट होने से (खीस-खलाई का अर्थ पाप नष्ट करके

भी हो सकता है।) राम के हाथ से दुष्टों के मारे जाने से पाप कम होगये और स्वर्ग मिला। ठीक प्रतीत = पक्के विश्वास की बात कहते हैं।

१३२—अवनीस = पृथ्वी पति, राजा। अवनी = पृथ्वी पर। सुर = देवता। मानव = मनुष्य। दानव = दनु की संतान राक्षस। घाटि = बुरे कर्म। धरि = पकड कर। तेमिलये धरि धूरि = वे नष्ट कर दिये। बहु छत्रकी छाहीं = जो बहुत छत्रो की छाया में चलते थे। गुमान = घमंड। गोविंद = भगवान। भावत नाहीं = अच्छा नही लगता है।

१३३—एक सखी अपनी सखी से कहती है। ठई = ठानी। स्यानी = चतुर। बरजी = निवारण किया। झुकी = आगे आकर प्रेम करने से रोका या नाराज हुई। तरजी = फटकारा। पट = वस्त्र के समान पतली, विवश। अबदेह दरजी = प्रेम के कारण यह शरीर कपडे के समान पतला हो गया है जैसे दरजी कपडे को जहा से चाहे वहाँ से काटता है और जहॉ चाहे जोड देता है ऐसे ही शरीर विरह के वश में कही से पतला (जैसे बॉह) अथवा कही से मोटा (जैसे रोने से नेत्र) होगया है। ब्रजकुमार = श्री कृष्ण। भृंग = हे भौरे, उद्धव। अनंग = कामदेव, यहाँ उद्धव जी जो गोपियों को उपदेश करने आये थे उनको भौरा कहा है। ब्रज कुमार ˙˙ गरजी = हे भौरे बिना भगवान कृष्ण के कामदेव हमको मारे डालता है अर्थात् बिना प्रीतम के विरह से व्याकुल है।

१३४—पठई = भेजी। चेरी = दासी, कुबजा नाम की एक दासी थी जिस पर श्री कृष्ण जी प्रेम करते थे। सठ = मूर्खा, धूर्ता। बरी = विवाह कर लिया। नटनागर = भगवान श्रीकृष्ण। हेरि = देखकर। हलाको = घातक। जोगकथा˙˙˙˙˙ चलाकी = भगवानने बृजवासियों के लिये जो योग का संदेश भेजा है वह धूर्ता कुब्जा की चालबाजी है। हे ऊधौजी वह चालाक कुबरी ऐसा क्यों न कहेगी जिससे देख-भाल कर श्री कृष्णजी ने व्याह किया। जाहि लगै = जिसके ऊपर बीतती है। पर = दूसरे का दु ख। सुहागिन = सौभाग्यवती स्त्री। नंदलला की = श्रीकृष्णजी की। जानपनी जानकारी। मोटि = गठरी। जानी कला की = हमने भगवान की बात

समझती है कि वह कुबडियों से प्रेम करते है। इस लिये हमभी किसी चतुराई से पीठ पर गठरी बाँध कर कुबडी होकर भगवान को प्रसन्न करेंगी।

१३५—पठयो = भेजा है। छपद = (छै पैरों का) भौंरा उद्धव। छबीले = सुन्दर। कैहूँ = किसी तरह। खोजिकै = तलाश करके। खवास खासो = चतुर नाई। कूबरी सी बाल को = कुबडी जैसी स्त्री का। गढ़ैया = बनाने वाला। बिनु पढ़ैया = वाणी के बिना पढने वाला। बार = बाल। बार खाल को कढ़ैया = बाल की खाल निकालने वाला अर्थात् सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें कहने वाला (यहाँ उद्धव जी ने योग की शिक्षा दी थी) उरसाल = हृदय का दुख। बधिक = वध करने वाला, नाश करने वाला। रसरीति = प्रेम की रीति। निपुन = चतुर। निदेस = निर्देश, आज्ञा या उपदेश। देस काल = देश और काल के अनुकूल। जोग = अवसर सयोग। जोग नदलाल को = श्रीकृष्ण जी का वियोग ही इस योग के आने का कारण हुआ अर्थात् श्रीकृष्ण जी का वियोग न होता तो यह योग का सदेश नही सुनना पडता।

१३६—लाडिले = प्यारे। भावते = मन को भाने वाले, प्यारे। हनुमान सहाय जू = हे हनूमान जी आप कृपा करके मेरी सहायता कीजिये, हे रामजी के प्यारे लक्ष्मण जी और हे रामचन्द्र जी के प्यारे भरत जी मेरी सहायता कीजिये। दीन = गरीब। दूबरी = दुर्बल, कमजोर। दयावनो = दया का पात्र, दया करने योग्य। भायजू = भाईजी। साहिबिनि = स्वामिनी (सीताजी)। बिलमति = दया करती हैं। देवि पाँय जू = (हे देवी) मुझ दास को दर्शन क्यों नही देती हो। खीजहु में = क्रोध में भी। रीझिबे की = प्रसन्न होने की। बानि = आदत। राम रीझत हैं = प्रसन्न होते है। राम की दुहाई = रामचन्द्र जी की शपथ है। रघुरायजू = रामचन्द्र जी मुझ से प्रसन्न होवेंगे।

१३७—बेप बिराग • तो सों = हे माता सीताजी मैं आप से सच्चे स्वभाव से कहता हूँ कि मेरा वेप तो वैरागियों का सा है किन्तु मेरे मन मे राग भरा हुआ है। पामर = नीच। पातकी = पापी। पोसों =

पालता हूँ । अघी = पापी । अम्ब = माता । तैं कहु = यह कह दो । मेरो तु = तू मेरा है । घाटि न होसों = घट कर नही होऊँगा, कम न रहूँगा । स्वारथ • हो सों = हे माता तेरे अपनाने पर मेरे लोक परलोक सुधर जायँगे फिर किसी की कमी नही रहेगी ।

१३८—व्याध = बहेलिया । मुनीन्द्र = श्रेष्ठ मुनि । जहाँ •सात की = जहाँ पर सप्त ऋषियों की शिक्षा से वाल्मीकि जी 'मरा, मरा' कह कर उच्चकोटि के मुनि हो गये । जनम-थल = जन्मभूमि । ताप = दुख, क्लेश । गात = शरीर । विटप महीप = वृक्षों का राजा, बडे बडे वृक्ष । सुरसरित = गंगाजी, सीता जी । पेखत = देखने से । पातकी = पापी । वारिपुर, दिगपुर = स्थानों के नाम है । बिलसित = शोभा देती है । जल जात = कमल । चरन जलजात की = कमल रूपी चरण ।

१३९—मरकत = नीले रंग की मणि । बरन = रग । परन = पत्ते । मानिक = एक कीमती पत्थर होता है । जटाजूट = जटाओं का समूह । रूखवेष = पेड के वेष में । हरु = महादेव जी । लसै = शोभा देता है । सुखमा को ढेरु = शोभा का समूह । कैधौं = अथवा । सुकृत सुमेरु = शुभ कर्मों का पहाड । मुद मंगल = आनन्द । अभिमत = इच्छित फल । सेइए = सेवा से । काको = किसका । थरु = थल, स्थान । प्रतीति = विश्वास । अवनि = पृथ्वी । रामरमनी को बट = सीताजी का वट (बरगद का पेड) । कामतरु = कल्पवृक्ष ।

१४०—देवधुनी = गगाजी । श्रीनिवास = सीताजी का निवासस्थान है । प्राकृत पुरारि हैं = जहाँ पर बहुत से साधारण वृक्ष हैं जिन पर महादेव जी निवास करते है । जाग— यज्ञ । पुनीत पीठ = पवित्र स्थान । पै = परन्तु । रागिन = रागी, विषयी । मीठि = फीका । डीठि बाहरी निहारि है = बाहरी दृष्टि से देखते है । आयसु = आज्ञा, आदेश । भावसिद्धि = इच्छा करते ही जिनकी बात सिद्ध हो जाती है । आयसु•• पुकारि है = तुलसीदास जी कहते हैं कि वहाँ भावसिद्धि योगी लोग विचार कर आज्ञा कीजिये 'बाबा' 'भला भला' आदि शब्दों को विचार कर

पुकार कर कहते हैं। सियवट = सीताजी का वट (बरगद का पेड)। सेए = सेवा करने पर। करतल फल चारि हैं = चारों फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) हाथ में है।

१४१—(तुलसीदास जी चित्रकूट महात्म्य लिखते हैं) पावनो = पवित्र। सुहावने = सुन्दर। बिहँग = पक्षी। मृग = जगल में चलने फिरने वाले जीव, पशु, हिरण। देखि मो = देखने से अत्यन्त ही आनन्द प्राप्त होता है। बिबेक = ज्ञान। बूट = ज्ञान का वृक्ष। साधक = योग की साधना करने वाले। झारि = बहुत, समूह। झरना ' बारि = बहुत से झरना झरते है और उनका पानी बहुत ही पवित्र और ठण्डा है। मन्दाकिनी = गङ्गा जी। मजुल = सुन्दर, श्रेष्ठ। महेस जटा जूट से = महादेव जी की सुन्दर जटा के समूह से। सेइए = सेवा कीजिये। सनेह = प्रेम। विचित्र = अनोखा।

१४२—मोह बन = अज्ञान रूपी वन। कलिमल = कलियुग के पाप। पीन = मोटे। जानि जिय = हृदय में समझ कर। नेवारि है = दूर करेगा। रजाइ = आज्ञा। दीन्ही ··· राम = राम ने आज्ञा दी है। पाइ लाल = सहायता करने वाले बच्चे को पाकर। हेरि हेरि = देख देख कर। मदाकिन ··कमान = श्रेष्ठ गङ्गा जी कमान के समान हैं। असि = तलवार। असि· बारिधारि = जहाँ पर गङ्गा जी के पानी की धारा तलवार और बाण के समान है। सुकर = सु दर हाथों से। अहेरि = शिकारी। अचल = जो हिल डुल न सके, स्थिर। घात = दाव, चोट। पातक = पाप। ब्रात = समूह। सावज = वन के पशु।

१४३—दवारि = वन की अग्नि दावानल। पहाड ठई = पहाड पर छागई। कपि = हनूमान जी से अभिप्राय है। खर-खौकी = नष्ट भ्रष्ट कर दिया, तिनका खाने वाली अग्नि। चुवा = चौपाये। तमीचर = तम + चर = अंधेरे मे चरने वाले अर्थात् राक्षस। तौकी = गर्मी से तप्त होकर। सुखमा = शोभा। उपमा कौकी = कवि किसकी उपमा दे (बडी देर से) तलाश कर रहा है। लसी = दिखाई देती थी। जगजीति = ससार को

जीत कर । जराय की चौकी = रत्न जडा हुआ चौकोर गहना जो छाती पर लटकता है । मानो · · ·चौकी = मानो हनूमान जी की छाती पर ससार के जीत की जडाऊ चौकी शोभा देती है ।

१४४—तीर्थ राज = प्रयाग राज । अगाध = बडे बडे । देखि · · · अगाध = प्रयाग को देखने से बडे बडे पाप नष्ट हो जाते हैं । निमज्जत = स्नान करने से । सितासित = सित = सफेद, + असित = काला यहाँ पर गङ्गा यमुना से अभिप्राय है । सोहे मिलिबो = गङ्गा जी और यमुना जी का मिलना बहुत ही शोभा देता है । हुलसै = प्रसन्न होता है । हिय = हृदय । हेरि = देख कर । हरे तृन = हरे तिनका, घास । चारु = सु दर । बगरे = फैलती फिरती हैं । सुरधेनु के = कामधेनु गाय के । धौल कलोरे = सफेद बछडा ।

१४५—(गगा महात्म्य) देवनदी = गङ्गा जी । जान किये मनसा = जाने की इच्छा भी की । कुल · · · उधारे = करोणों कुटम्ब के मनुष्यो का उद्धार कर दिया । झगरै सुरनारि = देवताओ की स्त्रियाँ झगडा करती है । सुरेश = इन्द्र । सुरेश सँवारे = इन्द्र ने अपने विमान सजा लिये । बिरचि = ब्रह्मा । पूजा रचे = पूजा का सामान ब्रह्मा ने तैयार कर लिया । महातम = फल, उत्तम फल । ओक = रहने की जगह, निवास स्थान । नीव = जड, कारण । नीव · · ·हरिलोक = वैकुण्ठ मे रहने की कारण होगई । बिलोकत तिहारे = गङ्गा जी की लहरें देखने से ही ।

१४६—ब्रह्म कहै = जिस ब्रह्म अर्थात् परमात्मा को वेद सर्व व्यापी बतलाते हैं । गम = पहुँच । गिरा = वाणी, सरस्वती । गम गुनी को = जिस जगह पर सरस्वती, गुणवान, ज्ञानी और विद्वान् की पहुँच भी नहीं हो सकती । जो दुनी को = जो ससार का पैदा करने वाला, पालने वाला, मारने वाला और देवताओ का स्वामी है । दीन = दीनदार, ईश्वर भक्त । दुनी = दुनियादार ससार मे लिप्त रहने वाले जीव । साहिब दुनी कौ = जो सब ससार का अर्थात् गरीब और

दुखी सब का स्वामी है। द्रव रूप = पानी के रूप में। जु ˙सुनीको = ब्रह्मा, महादेव और मुनीश्वरों का स्वामी है। महेस = महादेव जी। बिरंचि = ब्रह्मा। प्रतीति = विश्वास। मानि सदा तुलसी = तुलसीदास जी कहते हैं कि सदा विश्वास समझो। जल देवधुनी का = गङ्गा जी का पानी क्यों नहीं सेवन करता (अत्यतातिशयोक्ति)।

१४७—गगा जल का कवि ने विष्णु के चरणों का द्रवरूप माना है क्यों कि इनका जन्म स्थान विष्णु के चरण हैं। बारि भये = हे गगा जी आप के जल के दर्शन कर भगवान भी पानी के समान होगये अर्थात् आप विष्णु रूप हो। परसे = स्पर्श, छूने से। परसे लहौंगो = पैर छुवाने से पाप लगेगा। ईस = महादेव जी। ईस ह्वै सीस धरा = महादेव जी ने शीश पर धारण किया है। डरौं = शीश पर धारण करने से डरता हूँ। प्रभु दहौंगो = क्यों कि महादेव जी की वराबरी करने से बडे दोप मे जल जाऊँगा अर्थात् वडा पाप लगेगा। बरु = चाहे। बारहि ˙˙ ˙ धरौं = (गगा मे स्नान न करने से) चाहे अनेकों बार जन्म लेना पडे। तीर = किनारे पर। रघुवीर ˙ रहौंगो = रामचद्र जी का हो करके ही किनारे से पार हो जाऊँगा। भागीरथी = गङ्गा जी। बिनवौं कर जोरि = हाथ जोड कर विनय करता हूँ। बहोरि = फिर। खोरि = दोष। बहोरि कहौंगो = मैं ऐसी ही बात कहूँगा जिससे मुझको फिर दोष न लगे। तुलसीदास जी ने राम भक्त में पुष्टता दिखाई है। गंगा जी का अनादर नहीं किया है।

१४८—(अन्नपूर्णा का महात्म्य) बिललात द्वारद्वार = घर घर भटकता फिरता है। दीन बदन मलीन = दीन होकर, दुखी मनसे। बिसूरना = चिंता। सराध = श्राद्ध। उछाह = प्रसन्नता, उत्सव। ताकत˙ कछू = भोजन के लिये खोजता फिरता है कि कहीं श्राद्ध या विवाह या अन्य कोई उत्सव नहीं है। लोल = चचल। डोलै˙˙˙˙ तूरना = तूण आदि बाजो का शब्द सुनकर पूछता है कि कोई उत्सव तो नहीं है। चचल सा डोलता है। प्यासे ˙ चारि = प्यासे होने पर पानी नहीं

मिलता और भूखे होने पर थोडे से चना भी नहीं मिलते। चाहत'' ''' करना = और भोजन को अन्न आदि वस्तुओं के पहाड के पहाड खाना चाहता है परन्तु भुसी भी नहीं मिल सकती। सोक को अगार = शोक का घर। दु ख''''' भरो = दुख का बोझ सहो। तौलों = तब तक। देवी अन्नपूरना = देवी अन्नपूरना न पिघलैगी अर्थात् प्रसन्न न होंगी।

१४६—(शिव जी की प्रशंसा) भस्म अंग = अ ग में भभूत लगी हुई है। मर्दन अनंग = कामदेव के नाश करने वाले। सतत असंग = हमेशा संग से दूर अर्थात् अकेले रहने वाले। सीस भुजग = सिर पर गङ्गाजी, जिनकी अर्द्धाङ्गिनी पार्वती और शेषनाग ही जिनका भूषण है। मुण्डमाल = गले में मनुष्यों के सिरों की माला पडी है। विधु '' भाल = माथे में दूज का चन्द्रमा है। डमरू ''कर = हाथ में डमरू और खोपडी है। विबुध ' चन्द = देवता रूप कुमुदों के समूह को चन्द्रमा के समान प्रसन्न करने वाले। सुखकन्द = सुख देने वाले। सूलधर = त्रिशूल-धारी शिव। त्रिपुरारि = त्रिपुर नामक राक्षस के वैरी। त्रिलोचन = तीन नेत्र वाले। दिग्वसन = दिशा ही जिनके वस्त्र हैं अर्थात् नंगे। विष हरन = विष पीने वाले, ससार के डरों को दूर करने वाले। सेवत सुलभ = सिव सरन जो सेवा करते ही तुरंत वश में हो जाते है। सिव = कल्याण करने वाले महादेव की शरण का स्थान है।

१५०—गरल असन = विष पीने वाले। व्यसन-भजन = सांसारिक बातों को छुडाने वाले। जन रंजन = सेवक को प्रसन्न करने वाले। कुन्द = एक श्वेत फूल होता है। कुन्द ''' गौर = कुन्द, चन्द्रमा तथा कपूर के समान गोरे रंग वाले। सच्चिदानन्द घन = सत् चित् और आनन्द के समूह। बिकट-बेष = जिसके भेष को देखकर हर कोई डर जावे। उर शेष = हृदय पर शेष जी। सुरसरित = गंगाजी। सहज सुचि = स्वभाव से पवित्र। अकाम = इच्छा रहित। अभिराम धाम = सुन्दरता के घर। नित रुचि = नित्य प्रति राम नाम

जिनको रुचता है। कदर्प दवन = कामदेव के अटूट घमड को नाश करने वाले। त्रिगुन-पर = जो सत्, रज, तम् तीनों गुणो से अलग। मथन = मारने वाले। त्रिदसवर = देवताओं में श्रेष्ठ।

१५१—अंगना = स्त्री। अर्ध ···अ गना = आधे अ ग में पार्वती विराजती हैं। जोगीस = योगियो मे श्रेष्ठ। जोगपति = योग के स्वामी, योग बनाने वाले। (स्त्री रहते हुए जोगी नही हो सकते किन्तु महादेव जी स्त्री के होते हुए भी योगीश है।) विपमअसन = विप जैसी अखाद्य वस्तु के खाने वाले। बिस्वेस = विश्व के स्वामी। बिस्व गति = संसार भर में आने जाने वाल। या ससार को शरण देने वाले। सिर ब्याल = सिर पर साँपो की माला पहिने हुए है। बिप विभूपन = विप और भस्म ही जिनके आभूपण है। (समुद्र मथते मथते जो विप निकला था। उससे तीनो लोक संतप्त होने लगे। महादेवजी ने उसे पीकर सबका कष्ट छुडाया। वह विप अब तक उनके गले मे रखा है। जिससे कण्ठ नीला हो गया है। जो राम की कृपा से उनका आभूपण रूप हो गया है।) अविरुद्ध = जिनको कोई रोकने वाला नही है। अनवद्य = निन्दा रहित। अदूपण = दोप रहित। बिकराल = भयकर। भीमनाम = जिनका नाम (दुष्टों को) भय पैदा करने वाला है। अकथ = जो कही न जावे। ससय समन = भ्रम का नाश करने वाले।

१५२—भूतनाथ = भूतों के स्वामी। भय भवन = डर के घर, रुद्ररूप। भूमिधर = पृथ्वी के धारण करने वाले। भानुमत = सूर्य के समान तेजस्वी। भगवन्त = ऐश्वर्य युक्त। भव्य = सुन्दर। भाव-वल्लभ = भावना से प्रेम करने वाले। भवेस = संसार के स्वामी। भव··· विभंजन = ससार के भार को उतारने वाले। भूरिभोग = बहुत से भोग भोगने वाले। भैरव = भयकर शब्द करने वाले। कुजोग गजन = कुजोगो का नाश करने वाले। भारती बदन = सरस्वती जिनके मुख मे विराजमान हैं। अर्थात् सब विद्याओ के प्रवर्त्तक। ससि पतग पावक नयन = चंद्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र है। किन भजसि = क्यों नही भजन

करता । भद्रसदन = कल्याण के घर । मर्दनमयन = कामदेव के नाश करने वाले ।

१५३—(ब्रह्मा कहते हैं कि हे पार्वती तुम्हारा स्वामी) नाँगो फिरै = नगा फिरता है । कहै माँगतो देखि = ससार को माँगता हुआ देख कर कहता है । न खाँगो कछू = मैं कुछ नही खाऊँगा, मुझे किसी भेंट पूजा की आवश्यकता नही । दूसरा अर्थ मेरे पास किसी वस्तु की कमी नहीं । जनि = मति । जनि थोरो = चाहो जितना माँगो । राँकनि = दरिद्री, गरीव । नाकप = नाक = स्वर्ग + प = स्वामी = स्वर्ग का स्वामी इन्द्र । रीझ = प्रसन्न होकर । जग · जोरो = ससार में जितने भी भिखारी जोडे जुड सकते हैं वह जोडता है । आयौ हौं नाकहि = में स्वर्ग लोक को सँभालते हुए, परेशान होगया । पिनाकहि = महादेवजी । नाहि · निहारो = परन्तु महादेवजी ने थोडी सी भी मेरी कृतज्ञता नही प्रगट की । ब्रह्म कहै = ब्रह्मा जी कहते है । गिरिजा = हे पार्वती । सिखवो = शिक्षा मानो । पति रावरो = आपका स्वामी । बावरो भोरो = वावला और सीधा है ।

१५४—बिष-पावक = विप को खाने वाला । व्याल = सर्प । कराल = भयंकर । गरे = गले मे । सरनागत डाढे = शरण में आये हुए को किसी भी प्रकार का दुख नहीं सताता । भूत सखा = भूत प्रेत वैतालादि महादेव जी के मित्र हैं । भव = शिवजी, ससार । दले··· · गाढे = आपका शिव नाम ससार के कठिन दु:खों को नष्ट करने वाला है । तुलसीस = तुलसीदासजी का स्वामी । दरिद्र सिरोमनि = महादेवजी स्वयं तो कंगालों में शिरोमणि हैं । सो ·· ठाढे = परन्तु उनका स्मरण करने से दुःख कभी भी नहीं सता सकते । भौन में भाँग = घरमें तो सिर्फ भंग ही है । धतूरोई आँगन = आँगन मे धतूरा है । नाँगे· · ·बाढे = लेकिन तिस पर भी नगे से लोग माँगने के लिये जाते हैं ।

१५५—बरदा = (१) वर देने वाली अर्थात् गङ्गाजी । (२) वैल सीस बरदा = शीश पर गङ्गाजी हैं । वरदानि = वर देने वाले हैं ।

चढ्यो बरदा = बैल पर चढने वाले है। घरन्यो ...है = जिनकी स्त्री भी वरदान देने वाली हैं। धाम धतूरो = धतूरा जिनके घर में है। विभूति को कूरौ = राख का कूंडा भरा हुआ है। निवास ...ठाहै = जिस जगह पर लाशें जलाई जाती हैं (स्मशान) उस जगह इनका निवास स्थान है। व्याली = सर्प धारण करने वाले है। कपाली = कपाल (खोपडी) धारण करने वाले हैं। ख्याली = मौजी है, कौतुकी हैं। चहूँ ...परदा है = चारों तरफ भाँग के परदा लगे हुए हैं। राँक शिरोमनि = गरीबों में शिरोमणि है। काकिन = कौडी। भाग = भाग्य। काकिन भाग = महा कँगाल। बिलोकति... करदा है = देखने मे लोकपाल रोते हैं अर्थात् लोकपाल भी बराबरी नही कर सकते।

१५६—दानी पदारथ = चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के देने वाले हैं। त्रिपुरारी = त्रिपुरासुर राक्षस के वैरी, महादेवजी। सिर-टीको = शिरोमणि। भोरो भूखौ = जो सीधा है और सीधे तथा सच्चे स्वभाव वालो का भला चाहने वाला है। भलोई ...तुलसी को = तुलसीदास जी कहते है कि उसके स्मरण करने पर भला ही हुआ। ताबिनु = उसके बिना। आसको भयो = आशा का मनुष्य दास बन गया। कबहूँ जीको = उस मनुष्य का थोडा सा लालच कभी न मिटा। साधो साधन तें = उसने साधन करने से क्या लाभ उठा लिया? अर्थात् कुछ लाभ नहीं उठाया। जौ... पारवती को = जिस ने महादेव जी की आराधना नहीं की।

१५७—जात ...लोक = सम्पूर्ण लोक जले जाते थे। बिलोकि = देखकर। त्रिलोचन = महादेवजी। बिष लियो है = संसार से जहर को लेकर पी लिया। पान कियो = पी लिया। बिष भो = विष गले का हार बन गया। करुना = दया। बरुनालय = समुद्र। करुना ...है = हे स्वामी आपका हृदय तो दया का समुद्र है। मेरोई... कपार = या तो मेरा भाग्य ही खराब है। किधौं = अथवा। काहू .... दियो है = किसी ने मेरा बुरा बतलाया है। काहे ...करौ = हे महादेव जी आप

क्यों नहीं मेरी ओर ध्यान करते ? तुलसी ·· कियो है = तुलसीदास जी कहते हैं मुझको कराल कलियुग ने बेहाल अर्थात् अचेत कर दिया है।

१५८—अजर = जो बुड्ढा न होवे। खायौ काल कूट·· तनु = काल कूट (विष) खाने से महादेव जी का शरीर अजर और अमर होगया। मसान = स्मशान, मरघट। भवन = घर। गथ = पूँजी। गाँठरी = गाँठ, गठरी। भवन ···गरद की = जिनका घर स्मशान और पूँजी अर्थात् सम्पत्ति राख का ढेर है। कपाल = खोपडी। कर = हाथ। कराल = भयकर। ब्याल = सर्प। डमरू···ब्याल = जिन के हाथ मे डमरू और मनुष्य की खोपडी है और जिनका गहना बडे भयकर सर्प है। रीझ = प्रसन्नता। बाहन = सवारी। बरद = बैल। बावरे बरद की = वह बडे बावले महादेव जी बैल की सवारी करने मे ही प्रसन्न रहते हैं। बिसाल = बडा, लम्बा चौडा। भूति = भभूति, राख। चारु = सुन्दर। तुलसी भूति = तुलसीदास जी कहते हैं कि उनके बहुत गोरे शरीर पर राख इस प्रकार शोभा देती है। मानो ····सरद की = मानो हिमालय पर्वत पर शरद ऋतु की सुन्दर चाँदनी खिल रही है। बिलोकनि में = देखने में। करामाति = चमत्कार। अर्थ · बिनोकनि मे = अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष उन के देखते ही से प्राप्त होते है। कासी मरद की = इस मर्द योगी की अर्थात् महादेव जी की करामाति काशी में प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

१५९—पिंगल = खाकी, भूरा रग, या सुनहरी रग। कलाप = समूह। पुनीत = पवित्र। आप = जल, पानी। पिगल आप = जिनके माथे पर सुन्दर सुनहरी रग की जटाओ का समूह है और पवित्र गगा जल है। पावक = अग्नि। नयना = नेत्र, आँख। भ्रू = भौंह। पावक प्रताप = अग्नि के समान आँख का प्रताप। भ्रू· बरत है = भौहो पर जलता है। लोचन = नेत्र। भाल = माथा। बालचन्द्र = द्वितीया का चद्रमा। लोचन भाल = बडे विशाल नेत्र है और माथे

पर चन्द्रमा शोभा देता है । कंठ काल कूट = गले में कालकूट नामक विष है । व्याल ••• धरत हैं = सर्पों के गहने धारण किये हुए है। दिगम्बर = (दिक् = दिशा + अम्बर = वस्त्र) दिशा ही जिन के वस्त्र हैं अर्थात् नंगा । सुन्दर • गात = सुन्दर नंगे शरीर पर भभूत शोभा देती है । रूरे = सुन्दर, रूपवान। सृंगी = एक प्रकार का बाजा । पूरे = बजाना । काल-कंटक = काल का दुःख । रूरे • हरत हैं = सुन्दर सृंगी बाजा बजा कर काल का दुःख नष्ट करते है । अघात = संतुष्ट होना । पात आक ही के = आक के पत्ता से ही । औढर = वेढव । ढरत है = प्रसन्न होते हैं। देत न अघात = देने पर भी संतुष्ट नहीं होते । रीझ • आक ही के = आक के पत्ते खाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं । औढर ढरत हैं = जब वेढव प्रसन्न होते हैं ।

१६०—श्री = लक्ष्मी । निकेत = निवास । जाचकनि = माँगने वाले, अर्थी । देत • •••जाचकनि = माँगने वालों को सम्पत्ति से भरा लक्ष्मी का घर दे देते हैं । वृषभ = वैल । भवन बहनु हैं = घर मे केवल वैल और भाँग ही है । वाम देव = (वाम = उलटे + देव = देवता) । उलटे देवता अर्थात महादेव । दाहिनो = अनुकूल । दाहिनो सदा = हमेशा अनुकूल रहने वाले । असग = साथ न रहने वाले अर्थात् एकान्त वासी । अङ्गना = स्त्री । अनङ्ग = (अन = नहीं + अङ्ग = शरीर) शरीर रहित अर्थात् कामदेव । महनु = मारने वाले । अर्द्ध अङ्गना = आधा शरीर स्त्री का है । महेस = महादेव । सुगम = सरल । निगम = वेद की एक शाखा, शास्त्र । अगम = वेद । गहनु = कठिन । तुलसी सुगम = तुलसीदास जी कहते हैं कि महादेव जी का प्रभाव जानना केवल भक्ति भाव से ही सरल हो सक्ता है । निगम गहनु है = वेद शास्त्र के लिये भी जानना कठिन है । भयक = भयकर, डरावना । वेप भिखारि = भिखारी के समान वेप है । भयक सकर = महादेव का रूप भयकर है । दारिद-दहनु = दरिद्रता को नष्ट करने वाले । दयालु दहनु

है = दया करने वाला है गरीबो का भाई है दानी है और गरीबी को दूर भगाने वाला है ।

१६१—अनङ्ग-अरि (अनंग = कामदेव + अरि = वैरी) कामदेव का वैरी अर्थात महादेव जी । देबोई पै = देने पर । चाहै मंगन को = महादेव जी किसी भी मांगने वाले से कुछ सेवा नहीं चाहते । देबोई बानि = देने पर ही स्वाभाविक सिद्धि की हुई आदत समझनी चाहिये । बारिबुन्द = पानी की बूँद । त्रिपुरारि = महादेव । बारि बुन्द तौ = महादेव जी पर चारि बूँद पानी डालने से ही । देत फल = चारों फल (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) दे डालते है । लेत मानिसो = उसी को सच्ची सेवा मान लेते है । भवेश = (भव = ससार + ईश = स्वामी) ससार के स्वामी । कोटिक = करोडो । छार छान सो = राख छानते हुए । तुलसी छानि सो = तुलसीदास जी कहते है कि जिनको महादेव का भरोसा नहीं वे करोडो क्लेशों मे फँस कर राख छानते फिरते हैं । दारिद दमन = दरिद्रता को नष्ट करने वाले । दुःख-दोष दावानल = दुःख और दोषो को नाश करनेके लिये दावानल के समान है । सूलपानि = (सूल = त्रिशूल, पानि = हाथ) हाथ मे त्रिशूल है जिनके अर्थात् महादेव जी । दुनी दानि = संसार मे कोई दूसरा दानी महादेव के समान नहीं है ।

१६२—सेवत-जागै-मसान = रात भर जाग कर स्मशान मे बैठ कर मन्त्र जपना मसान जगाना कहलाता है । खोवत अपान = अपनपा (प्रतिष्ठा) खोते है । सठ = मूर्ख । धाय = दौड कर । प्रतीति = विश्वास । तुलसी तनु = तुलसीदास जी वर्णन करते है कि बिना विश्वास के प्रयाग मे शरीर त्यागना व्यर्थ है । कुरुखेत = कुरुक्षेत्र, जहाँ कौरव पाण्डवो में लडाई हुई थी । पात भवेस सो = भोरे महादेव जी को दो धतूरे के पत्ते देने से ही । सुरेस लेत रे = इन्द्रादि की सम्पत्ति अर्थात सम्पूर्ण ससार की सम्पत्ति आराम से क्यो नहीं ले लेता ।

१६३—स्यन्दन = रथ । गयन्द = हाथी । बाजिराज = घोडा । भले भले भट = बडे बडे वीर योधा । निकर = समूह । करनि हू न पूजै क = कर्त्तव्य भी कोई उनके से नहीं कर सकता । बनिता = स्त्री । बिनीति = नम्र । पूत = पुत्र । पावन = पवित्र । सोहावन = सुन्दर । बिबेक = ज्ञान । सुभग सरीर ज्वै = जिसका सुन्दर शरीर है । बनिता ज्वै = जिसके नम्र स्त्री पवित्र पुत्र सुन्दर और श्रेष्ट शरीर है और विद्यावान और ज्ञानी है । इहाँ ह्वै = इस लोक मे और परलोक मे और शिवलोक मे सुखी है यह उसका फल जिसका कि मै वर्णन करता हूँ सावधान होकर सुनो । केलि = खेलना । पतौवा = पत्ते ।

१६४—रति सी रवनि = कामदेव की स्त्री के समान स्त्री । सिंधु = समुद्र । मेखला = करधुनी (कोधनी) । अवनिपति = पृथ्वी का स्वामी । सिंधु पति = समुद्र की करधुनी पहने हुए (अर्थात् घेरे हुए) पृथ्वी का स्वामी । औनप = राजा । सम्पदा समाज देखि = समाज की सम्पत्ति को देख कर । सुरराज = इन्द्र । सबबिधि = सब प्रकार । बिधि = ब्रह्मा । सुरलोक = इन्द्र लोक । सुर नाथ पद = इन्द्र का पद । दीन्हे हैं = दिये है । बारक = एक बार मे । पुरारि = महादेव जी । बारक ढारि कै = महादेव जी पर एक बार भी जल चढाने पर ।

१६५—देवसरि = गंगा जी । सेवौं = सेवन करता हूँ । देवसरि रावरे ही = हे महादेव जी मैं आपके ही ग्राम (काशीपुरी) मे रहकर गंगा जी का जल सेवन करता हूँ । उदर = पेट । ऐते पर्हू = इतने पर भी । रावरौ = आपका । दीबे जोग = देने के योग्य । भाल = माथा । पोच = बुरा । गुदरत हौं = निवेदन करता हूँ, कहता हूँ । काल-कला (मुहाविरा है) किसी समय समय के चक्र से । निबरत हौं = अलग होता हूँ, निबटता हूँ । कासीनाथ = हे महादेव । कहे निबरत हौं = यह कह कर अलग हुआ जाता हूँ ।

१६६—चेरो को = राम का सेवक । सुजस हर = हे महादेव तेरी बडाई सुनकर । पाँइ तर आइ = पैरों में आकर । रह्यौ सुर-

सरि तीर हौं = गंगा जी के किनारे आकर रहा हूँ । राम ˙जिय = रामचन्द्र जी का अपने हृदय मे शील समझ कर। नेह = प्रेम । नातौ = रिश्ता । रघुबीर भीर हौं = राम जी से ही डरता हूँ । अधिभूत = शारीरिक पीडा, आधिभौतिक । बेदन = वेदना, पीडा, कष्ट । विषम = कठिन, असाध्य । भूतनाथ = महादेव जी । बिकल = बेचैन । पाहि = रक्षा करो । कुपीर = बुरी पीडा । पचत कुपीर हौं = बडा भारी दुःख पा रहा हूँ । अनायास = सहज ही में । कासीवास = काशी जी में रहने का । निरुज = (नि = बिना + रुज = बीमारी) बिना बीमारी अर्थात् नीरोग निरुज सरीर = स्वस्थ शरीर ।

१६७—लालसा = इच्छा । मरिबेई को रहतु हौं = मरने के लिये ही तैयार हूँ । कामरिपु = कामदेव का वैरी, महादेव । काम तरु = कल्प वृक्ष । अवलम्ब = सहारा । जगदम्ब = (जगत् = संसार + अम्ब = माता । संसार की माता, पार्वती । अवलम्ब चहतु हौं = मैं पार्वती आपका सहारा चाहता हूँ । रोग ˙˙भूत सो = भूत के समान यह रोग मुझे दुःख देता है । कुसूत भयो = उलझन में पड गया हूँ । पाहि = रक्षा करो । भूतनाथ˙˙˙गहतु हौं = हे महादेव जी मै आपके चरणों को पकड़ता हूँ मेरी रक्षा करो । ज्याइये ˙˙˙जिय = हे जानकी के स्वामी अपने हृदय मे अपना भक्त समझ कर मेरा उद्धार करो । मीचु = मृत्यु । माँगी मीचु = माँगी हुई मृत्यु । मारिये ˙ सूधिये = अगर मारना चाहो तो सूधे ही मुँह माँगी मौत देकर मार डालो ।

१६८—भूतभव = सब जीवों के जन्म के कारण महादेव । भवत = (भवत) आपको । पिशाच प्रिय = भूत प्रेत आदि जिनको प्यारे हैं, महादेव । नीके = अच्छा । नाना वेष = अनेक प्रकार के वेष । बाहन = सवारी । बसन = वस्त्र । सनमानिये = समझिये । तुलसी की सुधरै = तुलसीदास जी का जब ही भला होगा । सुधारै भूतनाथ के = महादेव जी के सुधारने पर । मेरे ˙ ˙˙भवानिये = मेरे माता पिता महादेव जी और पार्वती जी ही हैं ।

१६९—गौरीनाथ = (गौरी = पार्वती, + नाथ = स्वामी) महादेव जी। भवानीनाथ = महादेव जी। बिस्वनाथ = महादेव जी। विश्वनाथ-पुर = काशी। आन = दुहाई। फिरी आन कलिकाल की = कलियुग की दुहाई फिरने लगी अर्थात् घोर कलियुग वर्त्त रहा है। गिरजा = पार्वती। ससिसेखर = (शशि = चन्द्रमा, शेखर = माथा) चन्द्रमा है जिनके माथे पर अर्थात् महादेव जी। छमुख = छै मुख हैं जिसके अर्थात् महादेव जी का पुत्र स्वामिकार्तिक। बिकल बिलोकियत = यदि दुखी दीख पडे तो। पुरी-सुरबेलि = काशी पुरी रूपी कल्प वेलि को। केलि काटत = खेल मे ही काटता है अर्थात् नष्ट करता है। किरात कलि = कलियुग रूपी भील। निठुर = निर्दयी उघारि डीठि भाल की = माथे की दृष्टि अर्थात् गहरी निगाह से या माथे की तीसरी आँख मे देखिये कि उसका नाश हो जावे।

१७०—ठाकुर · जहाँ = महादेव जी से स्वामी और पार्वती जी सी जहाँ पर स्वामिन हैं। बिदित = जाहिर। महिमा = बडाई। ठहर = जगह, स्थान। भट = योधा। रुद्रगन = (रुद्र = महादेव + गन = अनुचर) महादेव जी के गण। कलि हरकी = कलियुग की कुटिलता को किसी ने भी न रोका। बीसी = बीस वर्ष का समूह। बिस्वनाथ = महादेव जी। बिषाद = दु ख, सक्ट। बारानसी = बनारस। गति = दशा, हालत। सकर सहर = काशी। बृपासुर = भस्मासुर, एक राक्षस था, जिसको शिव जी ने प्रसन्न होकर यह वरदान दिया था कि जिस के शिर पर हाथ रख देगा वह भस्म हो जायगा। बानि जानि = आदत समझ कर। सुधा = अमृत। तजि = छोड कर।

१७१—ईस = स्वामी। अम्बिका = पार्वती। कालनाथ कोतवाल = काल भैरव आपका कोतवाल है। दडकार = सजा देने वाले। दड = सोटा, डडा। पानि = हाथ। दडकार दडपानि = हाथ मे सोटा रखने वाले महादेव जी के सजा देने वाले सेवक हैं। सभासद अनूप है = गणेशजी से अत्यन्त अनोखे सभासद हैं। अमित = अत्यन्त। अनूप =

अनोखा। कुचालि = बुरी चाल वाला, दुष्ट। कैधों = अथवा। खल = दुष्ट। सीट = दुःख, सकट। फलै पल = कलियुग मे दुष्ट लोग फूलते फलते है अर्थात आनन्द मे रहते हैं और सज्जन पुरुष कष्ट पाते हैं।

१७२—पुन्य कोस = पुण्य का खजाना। पंच कोस पुन्य कोस = पाँच कोश की परिक्रमा के भीतर, पुण्य कोष अर्थात् काशी (असी से वरुणा नदी तक ५ कोश हैं)। स्वारथ = अपना मतलब। परारथ = परोपकार अर्थात् भलाई। सुपास = समीप। कादर = नीच कायर। फल = नतीजा। बारी = जलाई। चक्रपानि = श्री कृष्ण भगवान। मानि हितहानि = प्रेम और भलाई में बाधा समझ कर। आसुतोष = शीघ्र प्रसन्न होने वाले। बिकल · · पियो है = ससार को बेचैन देख कर महादेव जी ने कालकूट (विष) पी लिया था।

१७३—बिरंचि = ब्रह्मा, रचत बिरंच = ब्रह्मा पैदा करता है। हरि पालत = विष्णु भगवान पालन करते हैं। हरत हर = महादेव जी नष्ट करते हैं। प्रसाद = कृपा। अग जग पालिके = जड चेतन चराचर का पालन करने वाली। तोंहि में बिकास बिस्व = तुझ मे ही ससार का प्रकाश मौजूद है। तोंहि·· सब = तुझ में ही ससार के विषय भोग मौजूद हैं। भूम धर = पहाड। भूमि धर बालि के = हे पहाड की पुत्री, भवानी, देवी। दीजै·· ··अवलम्ब = सहायता दो। कीजै बिलम्ब = देर मत कीजिये। करुना = दया। तरंगिनी = नदी। कृपा-तरंग-मालिके = कृपा की लहरों की माला। महामारी = विशाल रोग। परितोष = शान्ति करो। मुनि-मानस-मराल के = मान सरोवर रूपी संसार के हंस रूपी मनुष्य।

१७४—निपट · नर = महापापी और घने औगुणों से भरे हुए स्त्री पुरुष। अनेरे = अन्यायी। घनेरे = बहुत से। दारिदी = गरीब, कंगाल। भूसुर = ब्राह्मण। भीरु = डरपोक। कलि मल घेरे हैं = क्रोधादि तथा कलियुग के पापों ने घेर लिया है। लोक रीति राखी =

संसार की मर्य्यादा को बचाया । साखी बामदेव = महादेव जी गवाही है । जन॰ मानि = भक्त बिनती स्वीकार कर । महामायी = हे बडी माता । महेशानि = महादेव जी की स्त्री । मोद राशि = आनन्द और कल्याण की राशि ।

१७५—कैधौं सिद्धि-सुर-साप = अथवा देवता और सिद्ध पुरुषों के श्राप से । तिहूँ ताप = तीनों ताप से (आध्यात्मिक, आधि भौतिक आधि दैविक)। तई है = तपी है । धनिक रंक = धनवान और कंगाल । हठनि बजाय = खुल्लम खुल्ला हठ करके । डीठि = देख कर । पीठि दई है = विमुख हो गये है । देवता॰ जोरे = महामारी दूर करने को देवताओं से हाथ जोड कर निवेदन किया माहमारी से भी विनती की । भोरानाथ भोरे = महादेव को भोला समझ कर । अपनी ठई है = अपनी सी ठान ली है । करुनानिधान = दया के समुद्र । जसरासि = यश के ढेर ।

१७६—सकर-सहर सर = काशी रूपी तालाव में । बारि चर = पानी के जीव । माँजा = वर्षा ऋतु का पहिला जल जिससे मछलियाँ मर जाती हैं । महामारी माँजा = महामारी मांजा रूप है । उछरत॰ मरि जात = उछल कर बहते हुए और कॉपते हुए मर जाती हैं । मभरि भगात = इधर उधर गिरती हुई भागती हैं । मीचु मई = मृत्यु हो रही है । पाहि रघुराज = हे रामचन्द्र रक्षा करो । अनीति = अन्याय । पाहि = रक्षा करो । कपिराज रामदूत = हनूमान जी । पाहि राम-दूत = हे हनूमान जी रक्षा करो ।

१७७—कराल = भयकर । सूल मूल = तिस में क्लेश की जड हैं । तामे = तिस पर । कोढ खाजु सी = कोढ में खाज के समान अर्थात् दुःख में दुःख होना । सनीचरी मीन की = मीन राशि मे शनिश्चर का होना (मीन राशि में शनिश्चर होने से बडा अशुभ फल होता है) बेद गये = वेद का पढ़ना और पढाना और धर्म दूरि भाग गया । भूमि॰ ॰ भये = राजा लोग उलटे चोर बन गये । सीधमान = दुखी ।

साधु''''''सीद्यमान=सज्जन पुरुष दुःख पा रहे हैं । जानि ''
पीन की=पापों में पुष्ट कलियुग की रीति समझो अर्थात् बहुत प्रकार के पापो को जान कर । दूबरे=कमजोर गरीब । दूबरे द्वार=कमजोर गरीबों का सिवा आप के और कोई द्वार यानी शरणस्थान नही है । दया धाम=दया के घर । रावरी=आपकी । बिभव=यश । बल-बिभव-बिहीन=बल और यश से खाली होकर । बिराजमान=शोभायमान, स्थिर । लाज '''बिरुदहि=यश को लज्जा लगेगी । दादि=फरियाद ।

१७८—स्वामि समरथ हितु=राम नाम ही भलाई करने वाला सामर्थ्यवान तथा स्वामी है । मरम=भेद, रहस्य । बाम=उलटा, बायाँ । स्वारथ सकल=सम्पूर्ण ससार मतलबी है । परमार्थ को राम नाम=मोक्ष देने के लिये तो राम नाम ही है । राम हीन=बिना राम नाम । सरवस=सब कुछ । छीन छाम=बहुत क्षीण । कामधेनु छाम को=मुझसे अति क्षीण मनुष्य का राम नाम ही कामधेनु और कल्प वृक्ष के समान है ।

१७९—मारग मारि=रास्तागीरो को मार कर । महीसुर=ब्राह्मणो को । कुमारग=बुरे उपायो से । कोटिक लियो=करोडों का धन जमा कर लिया है । परीच्छित=परीक्षा की हुई, निश्चय की हुई बात । जाहिगो '''हीयो=हृदय को जला कर, दुख दे कर जायगा । गे=गये । काशी ' गे=काशी मे जितने दुष्ट पैदा हुए सब चले गये । पाइ कीयो=अपने किये का फल पा कर । आजु कि काल्हि=आज नही तो कल । नरौं=परसो से आगे का अर्थात् तीसरा दिन । जड=मूर्ख, दुष्ट । जड '' ''दीयो='दिवाली का चाटना' एक महावरा है । कीट पतगादि दिवाली पीछे मर जाते हैं । इसी प्रकार समय पा कर ये लोग भी नाश हो जायँगे ।

१८०—यात्रा करते समय तुलसीदास जी ने क्षेमकरी चिडिया देख कर उसके गुण वर्णन किये है । कुकम' '''जितो=रंग ने केसर

के रंग को भी जीत लिया है। मुखचन्द्र = चन्द्रमा के समान मुख की। होड परी है = बाजी बद गई है। समृद्धि = सम्पदा। चुवै = टपकती है। बोलत बोल = शब्द बोलने से। अवलोकन = देखने से। सोच बिषाद ॰ हरी है = बडा भारी सोच और दुख दूर हो जाता है। विहंगिनि = पक्षी। गौरी वेष = पार्वती जी या गगा जी पक्षी के वेष मे हैं। मजुल = सुन्दर, श्रेष्ठ। मोद भरी है = आनन्द से भरी हुई है। पेखि = देख कर। पयान समै = कूच करते समय, चलते समय। सोच बिमोचन = शोक को दूर करने वाली। छेमकरी है = एक चिटिया का नाम है जिसके दर्शन से कार्य सफल हो जाते है।

१८१—राशि = ढेर। परमारथ = मोक्ष। बिरचि बनाई = भली भाँति बना कर। बिधि = ब्रह्मा ने। केशव = श्रीकृष्ण भगवान। प्रलय पर = प्रलय के समय पर भी त्रिशूल पर रख रक्षा करते है। यह कथा है कि काशी को विष्णु भगवान ने ससार से अलग महादेव के त्रिशूल पर बसाया है। मीचुबस = मृत्यु के वस। खसाई है = नष्ट करना चाहता है। छितिपाल = राजा। भलौ कियो = अच्छा किया। निकाई = नेकी। नसाई = नष्ट की। पाहि = रक्षा करो। पाहि हनुमान = हे हनुमान जी रक्षा करो। कुहत = काटना। कासी कसाई है = कामधेनु गाय रूपी काशी को कसाई रूपी कलियुग काटता है।

१८२—बिरची बिरच = ब्रह्मा की बनाई हुई। बसति विस्वनाथ = महादेव जी की पुरी। ज्योति रूप लिग मई = ज्योति स्वरूप शिवजी के लिग सहित। अगनित लिग मई = बहुत से शिव लिंग सहित (बहुत से शिव मदिरों का भाव है)। मोक्ष वितरनि = मोक्ष बाँटने वाली। बिदरनि जगजालन = संसार के झूठे बधनों को तोडने वाली। देवसरि = गङ्गा जी। लोपति = लोप कर देती है, मिटा देती है। अबिलोकत = देखने से। कुलिपि = बुरे अक्षर, दुर्भाग्य। भोंडे = बुरे। भाल = मस्तिष्क, भाग्य। हाहा ‥ तुलसी = तुलसीदास जी हाहाकार

करुणानिधि=दया के समुद्र। काशी की कदर्थना=काशी की दुर्दशा। कराल कलिकाल की=भयंकर कलियुग की।

१८३—आस्रम=शास्त्रो मे आयु चार अवस्थाओं मे बटी है, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। बरन=(वर्ण) जाति, चार वर्ण होते हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र। कलि·· भय=आश्रम और वर्ण कलियुग के कारण घबडा गये। मर्जाद=मर्याद। मोटरी सी=गठरी की भाँति। (मर्यादा छोड दी)। बिकल भय=भय से बेचैन। सरोष=क्रोध सहित, नाखुश, अप्रसन्न। महामारि··· जानियत=महामारी से जाना जाता है। दुनी=ससार, दुनिया। दारिदी=कगाल, गरीब। आरत=दुखी। साहिब ··दारिदी=महादेव के अप्रसन्न होने से ससार दरिद्री और दुखी होता जाता है। मोटी मूठि मार दी=कठिन जादू कर दिया है। सभीत पाल=भय से डरे हुए की रक्षा करने वाले। सुमिरे कृपालु राम=दयालु राम को याद करने से। सकरुन=दयालु। सराहि=बडाई की। सनकार दी=इशारा कर दिया जिससे महामारी चली गई।

हनूमान बाहुक

इस पद्य मे तुलसीदास जी ने हनूमान और बाहु का वर्णन किया है। बुढापे मे इनको बाहु पीडा ने सताया था, उसी समय इसकी रचना की थी। सिन्धु-तरन=समुद्र पार करने वाले, हनूमान जी। सिय सोच-हरन=सीता जी का शोक दूर करने वाले। रवि=सूर्य। रवि-बाल बरन तनु=प्रात:काल के निकलने वाले रक्त सूर्य के समान शरीर वाले हैं। भुज-बिशाल=लम्बी चौडी भुजा वाले हैं। मूरत कराल=विचित्र शरीर वाले है। कालहु· जनु=काल के भी मानो काल हैं। गहन=गम्भीर, घना। दहन=दाँत। निरदहन लंक=लका को जलाने वाले। निःशक=निडर। बंक भुव=टेढी भौंह वाले हैं, सरोष।

जातुधान = राक्षस। मान = प्रतिष्ठा। मद = घमंड। दवन = नष्ट करने वाले। पवनसुत = हवा के पुत्र। सेवत = सेवा करत हैं। सुलभ = सरलता के साथ। सेवन सुलभ = सरलता से ही थोडी सी सेवा में प्रसन्न होने वाले हैं। सेवक हित = भक्त की भलाई के लिये। सतत = सदा। निकट = पास। गुनगनत = गुण वर्णन करने पर। नमत = नमस्कार करने पर। सुमिरत = स्मरण करने पर याद करने पर। जपत समन सकल-संकट विकट = बडे भयंकर दुःखों को जप करने से नष्ट करने वाले हैं।

२—स्वर्न सैल संकास = सोने के पर्वत के समान रंग और शरीर वाले। कोटि ' तेज घन = करोडों सूर्यों के समान तीक्ष्ण और घने तेज वाले। उर विसाल = लम्बे चौडे हृदय वाले। वज्रतन = वज्र के समान कठोर शरीर वाले। पिंग = भूरे या पीले नेत्र वाले। भृकुटी कराल = टेढी भौओं वाले।

३—पंचमुख = महादेव। छ मुख = महादेव के पुत्र स्वामिकार्तिक जो देवताओं के सेनापति हैं। भृगुमुख्य = परशुराम। असुर-सुर-सर्वसारी = सब देवता और राक्षस आदि रूपी नदी रूप लडाई में। समस्थ पूरो = पार होने के लिये अर्थात् सब से लडने के लिये पूरी सामर्थ्य वाला है। विरुदैत = बानेवंद, पैज का धनी। विरुदावली = कीर्तिगान। वेद ' वदत = वेद रूप भाट वर्णन करते हैं। पैज पूरो = जिद्दी। गुन गाथ = गुण की कथा। रघुनाथ कह = राम ने स्वयं वर्णन की है। विपुल जलधि = अथाह जल से भरा हुआ समुद्र भी। झुरो = सूख जाता है। (यहाँ भाव संसार सागर से है) मनुष्य भव सागर से बडी आसानी से पार हो जाता है। दीन दुख दमन = दीनों के दुख दूर करने के लिये। रजपूत रूरो = महाबली हनूमान।

४—एक बार हनुमान जी सूर्य देवता से विद्या पढने गये। सूर्य ने लडका समझ—कि यह क्या विद्या पढेगा। इन से कहा हमारा रथ हमेशा चलता रहता है तुम इसके साथ मेरी ओर मुँह करके आगे आगे

[illegible] हालत में मै तुम्हें पढा सकता हूँ । हनूमान ने ऐसा ही किया । मन सो = सूर्य ने वालक समझ लडकों का जैसा खेल समझ टालमटूल की । पाछिले ''मन = हनूमान पढने में मगन होकर आकाश में पीठ की ओर चलते थे । क्रम ' भ्रम = पैर पडने के क्रम का कोई ध्यान न था । कपि बालक सो = यह काम वन्दर के वच्चे हनूमान के लिये खेल सा होगया । कौतुक = तमाशा । कौतुक सो = इन्द्र आदि देवताओं के हनूमान को ऐसा करते देख चका चौंधी छा गई और चित्त मे व्याकुलता छा गई । वल कैधों वीर रस = वल है या वीर रस शरीर धरे हुए है । सवनि को सार सो = वल वीर रस आदि का सार रूप है ।

५—भारत = महा भारत में । पारथ = अर्जुन । रथकेतु = अर्जुन के रथ की ध्वजा पर हनूमान विराजते थे । गाज्यौ = गर्जना । हल वल भो = घवडा गया । वीर ''भो = वीर रस रूपी समुद्र मे हनूमान जी का वल पानी रूप है अर्थात हनूमान जी वानर स्वभाव का वल ही मुख्य है । वन्दरों की चंचलता प्रसिद्ध है । वाल केलि = लडकपन के खेलों मे । भानुलगि = सूर्यतक । फलंग = उछले । फलाग भो = आकाश एक फलाग से भी छोटा पडा । जो हैं = देखते हैं ।

६—गोपद' करि = समुद्र को गोपद के समान सरलता से लाँघ कर । पर भो = दूसरे की नगरी अर्थात् लंका मे खल वली मचगई । कदुक = गेंद । कपि खेल वेल = वन्दर के खेलने । का वेल का फल । भाव यह है कि द्रोणाचल का बोझ हनुमान जी को कुछ भी नहीं मालूम हुआ । या कपि खेल वेल = फल कपिकछु कौंच की फली । संकट समाज = आपति काल में । असमंजस = दुविधा, शंसय मे । रामराज काज जुग = दो युग मे भी जो राम का काम होने वाला नही । भो = तत्काल ही पूरा होगया । साहसी समत्थ = ताकत वर । पूगिनि को करतल न पल भो = काम कर ने मे देर नही लगती । तुलसी को नाह = राम सा स्वामी । लोक ''''थल भो = लोकपालों की

७—कमठ = कछुआ जाके गाडैं = मानो जिसके पैर रखने का स्थान हुआ। अर्थात् हनूमान जी का शरीर इतना बडा है कि पैर समुद्र में धरती के धारण करने वाले कछुआ की पीठ तक पहुँच गये। नाप = मिट्टी का एक बडा सा वर्त्तन या दूध आदि नापने का वर्त्तन। नाप भो = समुद्र का जल एक नाप भर बैठा। जातुधान दावन = राक्षस के दावने वाला या मारने वाला। परावन ··भयो = लङ्कागढ छिन्न भिन्न होगया जहाँ बैरी आ जा सके। महामीन बास = समुद्र जिस में अगनित मछली रहती हैं। तिमि भो = अन्धकार की राशि होगया। पयोदनाद = मेघनाद रूप ईधन (जलाने की लकडी) के लिये। जाको = हनूमान का। अनल भो = अग्नि हुआ। अनुमान = अन्दाज में। न महाबल भो = तीनों लोक में ऐसा बलवान नही हुआ।

८—अंजनी को नन्दन = अंजनी का पुत्र, हनूमानजी। प्रताप ·· सों = सूर्य के समान प्रतापी। सरन अवन = शरणागत पाल। प्रान सो = प्राणों के समान। दसमुख · दरिद्र = रावण रूप दरिद्र को। दरिबे को = नाश करने को। प्रगट = पैदा हुआ। त्रिलोक ओक = तीनों लोक रूप घर में। निधान सो = खजाना रूप। सेवा सावधान = सेवा में चतुर। उर आनु = ध्यान करो।

९—दवन दल = वैरियों के बल का नाश करने वाला। विबुध · को = देवताओं की कैद छुडाने वाला। विघटनु-पटु = नाश करने में चतुर। सेवक भोर को = प्रात काल के सूर्य के समान सेवक रूप कमलों को सुख देने वाला। लोक बिसोक = ससार व स्वर्ग की चिन्ता से रहित। एक ओर को = तुलसी को एक ही का भरोसा है। जगह जगह नही भटकता। वामदेव को निवास = महादेव की रहने की जगह काशी या कैलाश पर्वत। कलि काम तरु = कलियुग में कल्प वृक्ष के समान नाम है।

१०—बानइत = यशस्वी, नामी। बरायो = चुना हुआ, या बढाया हुआ। जोर रन = जिस के बल से लडाई मे हई मच जाती है।

हनुमान ... और को = मनका दयालु, धर्मात्मा और धीर है। समीर को = पवन का पुत्र हनूमान।

११—मीच = मौत। ज्याइवै = जिन्दा करने को सुधापान = अमृत पीना। धरिबे = धारण करने को। तरनि = सूरज। पोषिवे = पालने को। हिम भानु = सूर्य चन्द्रमा। दोषिवे = उखाडने के लिये। जब कोई भला काम करता है तो दुष्ट लोग जला करते हैं। परितोषिवे को सज्जनों को प्रसन्न करने को। मॉगिवो भी हनूमान मॉगने वाले की मलीनता (दुःख) दूर करके दान देकर प्रसन्न कर देते है या मोदक (लड्डू) दान देकर मॉगने वाले की मलीनता दूर कर देते है। हठीलो = प्रतिज्ञा से न टलने वाला। आरत = दुखी। आरति = दुःख।

१२—मानै कानि = कनावडे होते है, जिस की बात मानते है। सानुकूल = कृपालु। नवै नाक को = स्वर्ग का स्वामी, इन्द्र प्रतिष्ठा करता है। दयावने = बेचारे, दया के पात्र। वापुरे बराक = दीन, गरीब, बिचारे। रॉक को = गरीब को क्या वस्तु है अर्थात् कुछ नही। वागत चलते फिरते। तकि को = ऐसा कौन बलवान है जो बुराई करना विचार भी सके। आक = है, 'आह' का आक ऊपर का यमक मिलाने को लिखा है।

१३—सानुग = (अनुगामी) गणों सहित। सगौरि = पार्वती सहित। तमाहि = (तम + अ) तमन्ना, इच्छा। काहु की? = हनूमान को छोडकर क्या किसी दूसरे वीर की इच्छा है अर्थात् नही। वन्दी छोर को = बन्द छुडाने वाला। निवाजे = बचाये हुए। हुलसति = प्रसन्न करती है।

१४—निधान = कोष, घर। निरवान = मोक्ष। तुलसी तिहारो = तुलसी दास आप का है।

१५—रनरौर = लडाई मे धाक जमाने वाले। जुग जुग = हमेशा। बिरद...हैं = सदा तुम्हारे, गुन गाये जाते है। घटि सुनि = तुलसी पर कम कृपा करते हो यह सुनकर। गाजे है = प्रसन्न हुए हैं।

१६ - ढाँरो = लुढकाया। काको कहा = किसी का क्या? अर्थात् कुछ नही विगाडा। खीझत = अप्रसन्न होते हो। हौं तो तिहारो = मैं तो आप का ही हूँ। साहिब हारो = स्वामी और सेवक के रिश्ते मे अलग कर दिया है। न चारो = कोई वस नही। दोष हारो। मैं अपने दोषों को भविष्य में सुनाने से होशियार होगया अर्थात् न सुनाऊँगा क्योंकि आप मुझ से घृणा करने लगते हो। पर अब तो मैं हिम्मत हार गया।

१७—तेरे थपे = हे हनूमान तुम्हारे स्थापित किये हुए। उथपै = उजाडे। घर घालै = नाश कर दिये। विराजत साले = वैरियो के हृदय जलते हैं। फटैं = फट जाते है, नाश हो जाते हैं। बृढ भये = क्या वृढे हो गये। कि हारि परे = (बहुत नीचो का उद्धार करने मे) क्या थक गये।

१८—मवासे = बडे बडे भवन, गढ। तै रन केहरि = हे रण केसरी तैने। छैल छ्वासै = बडे बडे बाँके वीर। केहरि कुञ्जर = सिंह जिस प्रकार हाथी को मारता है वैसे ही। सेइ = सेवा करने पर भी। दवा से = दावानल जिस प्रकार दुख देती है। खेचर = पक्षी। लवा = एक चिडिया होती है। वानर वाज = हे वाज हनूमान। बढे खेचर = दुष्टरूप पक्षी बढ गये है। लीजत = पकड क्यो नही लेता।

१९—अच्छ-विमर्दन = रावण के पुत्र अक्षय कुमार के मारने वाले। कानन-भान = अशोक वाटिका उजाडने वाले। भान निहारौ = शर्म या प्रताप के कारण देख न सका। वारिद-नाद मेघनाद। केहरि-वारौ = सिंह का बचा। हुतासन = होम की अग्नि। कच्छ विपच्छ = वैरी लोग जलने वाली वस्तु है। समीर = अग्नि को वढाने वाली हवा। ताप तिहूँ = तीनो तापों से।

२०—जानत जहान = ससार जानता है। बोल न विसारिये = मुझे जो वचन दिये थे उन्हे न भूलिये। कवहुँ ? = कभी नही था। कहाँ चूक परी = कहाँ पर भूल होगई। साहेब सुभाव = स्वामी का स्वभाव सेवक पर

कृपी अग्नि का होता है उसी स्वभाव से। कपि = हे हनूमान। साँसति = दण्ड। मोदक मरै जो = जो लड्डू से मर जावे। बाँह पीर = बाँह के कष्ट को।

२१—वारे ते = लडकपन से। निरुपाधि = कष्ट रहित। न्यारिये = एक अनोखे ढंग से। माथे ' को = माथे पर बलवान कलियुग का पैर है, मुझे दवा रखा है। राहु मातु = राहु की माता, राक्षसी।

२२—उपथे-थपन = उजडों को बसाने वाला। गुलामनि को = भक्तों को। कामतरु = कल्पवृक्ष। तकिया = सहारा, आश्रम। तिहारीए = आपही हो। तुलसी पर = तुलसीदास का रक्षक होने पर भी कलयुग का माथे पर पैर है। सोऊ = सो भी। वीर ! = हे वीर हनूमान। (उसको) बाँधि = कलयुग को बाँध कर। पोखरी बाहु = बडा तालाव बाँह है। बारिचरि पीर = उसकी पीडा उस तालाव के जल जीव हैं। मगरी ज्यों = मगरनी की भाँति।

लक्ष्मण के शक्ति लगने पर हनूमानजी सञ्जीवनी बूटी लेने गये थे। रावण के आदेशानुसार कालनेमि, मुनि भेष धर एक तालाव पर हनूमान को रोकने के लिये बैठ गया। जब हनुमान उसके पास होकर निकले तो उसने बुलाकर गुरुमंत्र देने को राजी किया। मत्र लेने से पूर्व हनुमान स्नान करने को तालाव पर गये। वहाँ मगरी ने पैर पकड लिया। उन्होंने उसे मार डाला। मरते समय मगरी अप्सरा रूप होगई और कालनेमि का पूरा भेद खोल दिया। यह मगरी पहिले अप्सरा थी। मुनि शाप से मगरी होगई थी। और हनुमानजी द्वारा उसका उद्धार हुआ था।

२३—राम को सनेह = राम का स्नेही। राम साहस = राम ही मेरा साहस है। सोच = ऊपर की सब बातों पर विचार कर (तुलसीदास का) मुद्-मरकट = प्रसन्नता रूप बन्दर (लंका में सीता की खोज करने को जाते समय समुद्र के तीर पर) रोग-बारिनिधि = रोग रूपी समुद्र। हेरि हारे = देखकर व्याकुल होगये। जीव जामवंत = मेरे जीवरूप जामवंत को (अर्थात् पीडा से वहुत व्याकुल हूँ आप रक्षा करो) सीता की खोज में समुद्र

लाँघने की किसी की हिम्मत नही थी उस समय जामवत के कहने से हनुमान कूद गये थे। सुप्रेम पव्वईतें = अच्छे प्रेम रूप पर्व्वत से कूद कर। सुथल वैठि = माथे रूप सुन्दर सुवेल पर्वत पर बैठ कर विचार करो। वराकी = तुच्छ।

२४—चष चारिहूँ = चारों आँखों से दो प्रत्यक्ष आँखे और दो ज्ञान चक्षु। अग जग = जड चेतन। नाथ हाथ सव निज = हे नाथ सव आपके हाथ में है। वात तरु मूल = वात रूपी वृक्ष की जड में। शरीर मे वात, पित्त कफ तीन दोष है। जिनमें दर्द कारक वात होती है। वाहुसूल वेलि = वाहुशूल रूपी कोंच की वेल। सकेलि = खेल ही में

२५—कंस की भेजी हुई पूतना राक्षसी सुन्दर भेष घर कर श्री कृष्ण को मारने नन्द के घर गई थी। वहाँ से उनको लेकर चलदी। पीछे श्री कृष्ण ने उसे मार दिया। करम·· भूमिपाल = कठोर भाग्य रूप कंस राजा। वकी वक भगिनी = वकासुर की वहिन पूतना। (रूप वाहु पीडा) वाल घातिन = वच्चों को मारने वाली। वाहुवल वालक = वाँह के वल रूप वालक को। छरेगी = छल लेगी। कपि कान्ह = श्री कृष्ण रूप के हनूमान।

२६—भाल की = भाग्य गति के कारण। (या त्रिदोष = वात, पित्त, कफ। वेदन विषम = कठिन पीडा। पाप ताप = पाप पीडा। (या) छल छाँह = किसी ने घात (टोना जादू) मार दी है। करमन कूट की = कठिन कर्मों की। वूट की = जडी वूटी की। पराहि जाहि = दूर हो जावे। मलीन मन माँह की = मन की मैली। वानि = आदत। कपिनाह = हनूमान।

२७—सिंहिका = एक राक्षसी थी। सुरसा छल = सर्पो की मा सुरसा को छल से जीत कर। परजारि = जला कर। धारि = सेना। भूरि है = नष्ट भ्रष्ट कर दिया। जमकातरि = यमराज का डर। कढ़ोरि आनी = खचेर डाली।

२८—वाल केलि = लडकपन के खेल। सुनि सहमत धीर = धीर लोग सुन चकित होते है। सक्र = इन्द्र। तेरी वाँह = तेरी ही रक्षा में।

काहु को = किसी दु ख का भी डर नही है। साम ' 'विधि = शत्रु लोगों को तीन प्रकार से बस में करते हैं–सन्धि करके, धन दे कर और शत्रुओं में परस्पर फूट डाल कर । वेदह्न ' सिद्धि = तुम को सब सिद्ध हैं। परिहास ' है = या हँसी करने का दण्ड है ।

२९—बोलि = (कंगाल को) बुला कर। बाल ज्यौं = बालक की भाँति । नतपाल = शरण देने वाले हनूमान जी । पालि पोसो है = पाला है । सँभार सार = देख रेख । परेखो = पछितावा । पोषि = देख कर । कीजै = करते हो । चीरी = चीटी । चीरी सोहै = जब बच्चे चीटी से खेलते हैं तो चीटी बिचारी की जान जाती है और बच्चो का खेल ही है। यहाँ तुलसीदास जी चीटी रूप हैं ।

३०—कही ' है = न कही जाती है और न सह ही सकता हूँ। बादि भये = झूठे पड गये, व्यर्थ हो गये । मनाए अधिकाति = बहुत पूजादि की । इताति = इता + अति = तावेदारी, दबाव । कह्यौ रामदूत = हे रामदूत, हनूमान कहो क्या बात है ? ढील = देरी करना या आनाकानी करना ।

३१—पूत बाय को = समीर पुत्र, हनूमान । समत्थ को = हाथ पैर सा काहिल नही । असहाय = दीन । मूठिका को = मुट्ठी के प्रहार को भी न सह सका । निवाजो = रक्षित । सीदत = दुख पाता है। बडी गलानि = बहुत दु ख है । कौन ' ' कोप = किस पाप का फल है। लोप '''को = जिससे आपका प्रबल प्रताप भी लुप्त हो गया है ।

३२—चेतन अचेत हैं = जड, चेतन आदि । पूतना पिसाची = भूत योनि विशेष । बाम = उलटे, दुखदाई । माथे हैं = (उपरोक्त) सब आज्ञा आदर से मानते हैं । हनुमान आन सुनि = हनूमान की सौगंध देने पर इसलिये हे हनूमान आप । क्रोध ' को = मेरे दुष्कर्म पर क्रोध करो जिससे अनिष्ट न कर पावे । सोध कीजै = तलाश करो और दण्ड दो ।

३३—भए ' घर के = तितर बितर हो गये । रामराज = राजा राम ने । गीरवान = गीर्वाण, देवता । सजल = प्रेम से भर जाते हैं। निगर = प्रतिज्ञा पूरी करने वाले, मर्यादा रखने वाले ।